

KĀVYĀDARŚA

EDITED BY
ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A.



UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939

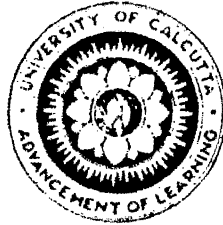
KĀVYĀDARŚĀ

SANSKRIT AND TIBETAN TEXT

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A

CALCUTTA UNIVERSITY



PUBLISHED BY THE
UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

CONTENTS

Preface xi

CHAPTER I

Ślo

मङ्गलाचरण (मङ्गल'श'स'वर्णन'स) ...

वाक्प्रशंसा (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

काव्यप्रशंसा (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

दुष्टकाव्यनिन्दा (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

काव्यलक्षण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

काव्यभेद (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

महाकाव्यलक्षण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

गद्यकाव्यभेद (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

मिश्रकाव्यभेद (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

श्लेषगुण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

श्लेषगुणलक्षण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

प्रसादगुणलक्षण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

समतागुणलक्षण (श्लोक'प्रशंसा'स) ...

| | Sloka |
|--|-------|
| चटूपमा (षट्स'सि' ढस) | 35 |
| तत्त्वाख्यानोपमा (ढे'डै'स'डै'स'डै' ढस) | 36 |
| असाधारणोपमा (षड'सै'स'डै'स'डै' ढस) | 37 |
| अभूतोपमा (सु'स'डै' ढस) | 58 |
| असम्भावितोपमा (सु'स'डै'स'डै' ढस) | 39 |
| बहूपमा (षड'स'डै' ढस) | 40 |
| विक्रियोपमा (षड'स'डै' ढस) | 41 |
| मालोपमा (सु'स'डै' ढस) | 42 |
| वाक्यार्थोपमा (ढस'डै' ढस) | 43 |
| प्रतिवस्तूपमा (सु'स'डै'स'डै' ढस) | 46 |
| तुल्ययोगोपमा (षड'स'डै'स'डै' ढस) | 48 |
| हेतूपमा (सु' ढस) | 50 |
| उपमादोषविचार (ढस'स'डै'स'डै' ढस) | 51 |
| उपमाबोधकशब्द (ढस'स'डै'स'डै' ढस) | 57 |
| रूपकलक्षण (षड'स'डै'स'डै' ढस) | 65 |
| समस्तरूपक (षड'स'डै'स'डै' ढस) | 65 |
| व्यस्तरूपक (षड'स'डै'स'डै' ढस) | 66 |

CONTENTS

ix

xi

| | Sloka | šloka |
|--|-------|-------|
| समस्तव्यस्यरूपक (मातृमास'उक्'वसुमा'दन्'स'वसुमा'व) ... | 67 | 146 |
| सकलरूपक (सप्त'दन्'मातृमास'उक्) ... | 69 | 148 |
| अवयवरूपक (ऋ'मास'मातृमास'उक्) ... | 71 | 150 |
| अवयविरूपक (ऋ'मास'उक्'श्री' मातृमास'उक्) ... | 72 | 152 |
| पञ्जररूपक (पञ्'पञ्'मातृमास'मातृमास'उक्) ... | 74 | 154 |
| युक्तरूपक (र्मातृमास'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 76 | 156 |
| अयुक्तरूपक (र्मातृमास'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 77 | 158 |
| विषमरूपक (श्री'सप्त'मा'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 78 | 160 |
| सविशेषणरूपक (सप्त'दन्'दन्' वसुमा'मातृमास'उक्) ... | 80 | 162 |
| विरुद्धरूपक (र्मातृमास'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 82 | 164 |
| हेतुरूपक (श्री'मातृमास'उक्) ... | 84 | 166 |
| स्मिष्टरूपक (सप्त'वसुमा'मातृमास'उक्) ... | 86 | 167 |
| उपमाव्यतिरेकरूपक (दन्'दन्'वसुमा'व'उक्'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 87 | 178 |
| आक्षेपरूपक (सप्त'वसुमा'मातृमास'उक्) ... | 90 | 180 |
| समाधानरूपक (सप्त'वसुमा'मातृमास'उक्) ... | 91 | 182 |
| रूपकरूपक (मातृमास'उक्'श्री' मातृमास'उक्) ... | 92 | |
| नव्यापहरूपक (र्मातृमास'वसुमा'दन्'मातृमास'उक्) ... | 93 | 83 |

| | Sloka |
|--|-------|
| दीपक (गणना'सुद) | 96 |
| मालादीपक (सुद'सुद' गणना'सुद) | 106 |
| विरुद्धार्थदीपक (गणना'सुद' द'ग'सु' गणना'सुद) | 108 |
| एकार्थदीपक (द'ग'सु'गणना'सुद) | 110 |
| सिद्धार्थदीपक (सुद'सुद' द'ग'सु' गणना'सुद) | 112 |
| आवृत्तिभेद (स'सु'सुद' सु'सु'सु) | 115 |
| आक्षेपभेद (सु'सु'सुद' सु'सु'सु) | 119 |
| धर्माक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु) | 127 |
| धर्म्याक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 128 |
| कारणाक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु) | 130 |
| कार्याक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 133 |
| अनुज्ञाक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 134 |
| प्रभुत्वाक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 136 |
| अनादराक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 138 |
| आशीर्वाचनाक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 140 |
| परुषाक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 142 |
| साचिख्याक्षेप (सु'सु'सु'सु'सु'सु) | 144 |

CONTENTS

xi

| | Sloka |
|---|---------|
| यत्नाक्षेप (२२८'२२९' २३०'२३१') | ... 146 |
| परवशाक्षेप (२३२'२३३' २३४'२३५') | ... 148 |
| उपायाक्षेप (२३६'२३७' २३८'२३९') | ... 150 |
| रोपाक्षेप (२४०'२४१' २४२'२४३') | ... 152 |
| अनुक्रोशाक्षेप (२४४'२४५' २४६'२४७') | ... 154 |
| अनुशयाक्षेप (२४८'२४९' २५०'२५१') | ... 156 |
| संशयाक्षेप (२५२'२५३' २५४'२५५') | ... 158 |
| श्लिष्टाक्षेप (२५६'२५७' २५८'२५९') | ... 160 |
| अर्थान्तराक्षेप (२६०'२६१' २६२'२६३') | ... 162 |
| हेत्वाक्षेप (२६४'२६५' २६६'२६७') | ... 164 |
| अर्थान्तरन्यास (२६८'२६९' २७०'२७१') | ... 166 |
| अर्थान्तरन्यासभेद (२७२'२७३' २७४'२७५' २७६'२७७') | ... 167 |
| व्यतिरेक (२७८'२७९' २८०'२८१') | ... 177 |
| एकव्यतिरेक (२८२'२८३' २८४'२८५') | ... 178 |
| उभयव्यतिरेक (२८६'२८७' २८८'२८९') | ... 180 |
| सश्लेषव्यतिरेक (२९०'२९१' २९२'२९३') | ... 182 |
| साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (२९४'२९५' २९६'२९७' २९८'२९९') | ... 183 |
| गुणं २९९'३००') | |

| | | |
|--|-----|-----|
| प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (ह्येवमस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 186 |
| सादृश्यव्यतिरेकभेद (सत्त्वस्य च रीतिः सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 189 |
| विभावना (श्रुतिः च त्रुत्तमस्य च) | ... | 196 |
| समासोक्ति (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 202 |
| समासोक्तिभेद (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च रीतिः त्रुत्तमस्य च) | ... | 205 |
| अपूर्वसमासोक्ति (श्रुतिः च त्रुत्तमस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 210 |
| अतिशयोक्ति (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 211 |
| अतिशयोक्तिप्रशंसा (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च त्रुत्तमस्य च रीतिः सत्त्वस्य च) | ... | 217 |
| उत्प्रेक्षा (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 218 |
| उत्प्रेक्ष्याव्यञ्जकशब्द (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च त्रुत्तमस्य च रीतिः सत्त्वस्य च) | ... | 231 |
| हेतुभेद (श्रुतिः त्रुत्तमस्य च) | ... | 232 |
| सूक्ष्म (सत्त्वस्य च) | ... | 257 |
| लेश (क) | ... | 262 |
| क्रम (रीतिः च) | ... | 270 |
| प्रेयरसवदूर्जखिलक्षण (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च त्रुत्तमस्य च रीतिः सत्त्वस्य च) | ... | 272 |
| पर्यायोक्त (सत्त्वस्य च त्रुत्तमस्य च) | ... | 292 |

CONTENTS

xiii

| | Sloka |
|---|-------|
| समाहित (गुरुः सुखः) | 295 |
| उदात्त (शुःके) | 297 |
| अपह्नुति (मञ्जुःकेः) | 301 |
| श्लेष (सुःमः) | 306 |
| श्लेषभेद (सुःमः मः सुःमः) | 311 |
| विशेषोक्ति (सुःमः मः सुःमः) | 320 |
| तुल्ययोगिता (सुःमः मः सुःमः) | 327 |
| विरोध (मःमः) | 330 |
| अप्रस्तुतप्रशंसा (सुःमः सुःमः मः सुःमः) | 337 |
| व्याजस्तुति (सुःमः सुःमः) | 340 |
| निदर्शन (सुःमः मः सुःमः) | 345 |
| सहोक्ति (सुःमः सुःमः) | 348 |
| परिवृत्ति (सुःमः सुःमः) | 348 |
| आशिसु (सुःमः सुःमः) | 354 |
| संस्पृष्टि (सुःमः) | 356 |
| संस्पृष्टिभेद (सुःमः मः सुःमः) | 357 |

| | Sloka |
|-------------------------------------|---------|
| भाविक (दशोदस'प'उव) | ... 360 |
| भाविकभेद (दशोदस'प'उव'श्री' दसु'व) | ... 361 |

CHAPTER III

| | |
|---|---------|
| यमक (ङु'ङ्ग) | ... 1 |
| गोमुत्रिका (व'ल'ग'उ'उ') | ... 78 |
| अर्द्धभ्रम (सु'द'ल'सि'व) | ... 80 |
| सर्वतोभद्र (गु'ङ्ग'दु'व'उ'द'सि') | ... 80 |
| स्वरस्थानवर्णनियम (दसु'द'स'प'उ'उ'द'स'द'स' यी'गो'ङ्ग'स'स' श्री' द'स'प) | 83 |
| प्रहेलिका (ग'व'उ'स'ग) | ... 96 |
| प्रहेलिकास्थान (ग'व'उ'स'ग'सि' ग'उ'स'प) | ... 97 |
| समागता प्रहेलिका (गु'ङ्ग'दु'उ'स'ग'सि' ग'व'उ'स'ग) | ... 91 |
| वञ्चिता प्रहेलिका (व'सु'व'सि' ग'व'उ'स'ग) | ... 91 |
| व्युत्क्रान्ता, (सि'स'प' सु'ल'व) | ... 99 |
| प्रमुषिता (स'व'उ'स'ग) | ... 99 |
| समानरूपा (ल'सु'उ'व'सि'ग'उ'स'ग) | ... 100 |
| परुषा (सु'व'सि') | ... 100 |
| संख्याता (सु'द'स'उ'स'ग) | ... 101 |

CONTENTS

xv

| | Sloka |
|--|-------|
| •प्रकल्पिता (रघु'वन्दयस'श्रुत) | 101 |
| नामान्तरिता (श्री'रघु'वन्दयस'श्रुत) | 102 |
| निवृता (वृत्त'वस'य) | 102 |
| समानशब्द (वसुध'व'सु) | 103 |
| संमूह (श्री'रस'य) | 103 |
| परिहारिका (अरि'रस'शु'रस'य) | 104 |
| एकच्छन्ना (वरुण'व'सु'वस'य) | 104 |
| उभयच्छन्ना (वरुण'व'सु'वस'य) | 105 |
| संकीर्णा (अरि'रस'शु'रस'य) | 105 |
| दोषविभाग (श्री'र'शु' अरि'रस'शु'रस'य) | 125 |
| अपार्थ (र'र'शु'स) | 128 |
| व्यर्थ (र'र'र'य) | 131 |
| एकार्थ (र'र'वरुण'य) | 135 |
| ससंशय (श्री'र'र'र) | 139 |
| अपक्रम (श्री'य'र'स'य) | 144 |
| शब्दहीन (श्री'र'स'य) | 148 |
| यतिभ्रष्ट (वरुण'र'र'र'र'र'य) | 152 |

| | Sloka |
|---|-------------|
| वृत्तभङ्ग (श्लेष-श्लोके-श्रवण-स्य) | ... 156 |
| विसन्धि (सङ्घस्य-श्लोके-प्रत्यय-स्य) | ... 159 |
| देशकालकलालोकन्यायागमविरोध (प्रुल-दन्-दुस-दन्-श्लु-कुल-दन्-अङ्गिण- द्वेक-दन्-द्विण-दन्-स्रु-दन्-अण-स्य) | ... 162 |
| देशविरोधोदाहरण (प्रुल-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 165,166 |
| कालविरोधोदाहरण (दुस-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 167,168 |
| कलविरोधोदाहरण (श्लु-कुल-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 170 |
| लोकविरोधोदाहरण (अङ्गिण-द्वेक-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 172 |
| न्यायविरोधोदाहरण (द्विण-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 174,175 |
| आगमविरोधोदाहरण (स्रु-दन्-अण-स्य-सि-द्वि) | ... 177,178 |
| देशविरोधगुण (प्रुल-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 180 |
| कालविरोधगुण (दुस-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 181 |
| कलविरोधगुण (श्लु-कुल-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 182 |
| लोकविरोधगुण (अङ्गिण-द्वेक-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 183 |
| न्यायविरोधगुण (द्विण-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 184 |
| आगमविरोधगुण (स्रु-दन्-अण-स्य-सि-द्वि-द्वि-द्वि) | ... 185 |

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyaḍarśa* of D a ṇ ḍ i n . It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai S a r a t C h a n d r a D a s Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize D a s ' s manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyaḍarśa* was translated into Tibetan by Ś r ī l a k ṣ m i k a r a and Ś o ṅ . s t o n . L o . t s ā . b a and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition; C o r d i e r , III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by M i . p h a m . d g e . l e g s . r n a m . r g y a l . As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyaḍarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand; so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled; e.g., I. 95 उद्गीर्णः ; 103 मार्गः, II. 9 वरुणः, 10 घूर्णितेक्षणः ; etc. Though such 'doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me; e.g.

Chap. I. 30^a श्रुि for श्रुिः ; 42^o एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^b बध्नन्त्योजखिनीगिरः ; for बध्नन्त्योजखिनीगिरः 90^o ^a ०पातधौत for ०पातःधौत.

Chap. II. 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो ; 6^a व्याज for व्यज ; 11^a बध्नन्नङ्गेषु for बध्नन्नङ्गेषु ; 14^a प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं ; 20^a पद्मन्तावत् for षड्मन्तावत् ; 24^{a-b} पद्मं सुभ्रु for पद्मसुभ्रु ; 27^a निर्णयोपमा for निर्ल्लयोपमा ; 28^b सञ्ज for सञ्जः ; 38^a प्रभासारः for प्रभासारं ; 47^a पारिजातस्य for परिजातः ; 49^a रक्षायै for राक्षायै ; 49^a सावलेपा for सावलेया ; 54^a सौभाग्यं for सौभग्यं ; 58^a संवादि for सम्बादि ; 81^a सुदं स for सुदं स ; 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं ; 100^a दैवतर्धयः for देवतर्धयः ; 120^a पुष्पैः for पौष्पैः ; 152^o अयतापि for अयातापि ; 156^a सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^b किंवा for किम्बा ; 159^o ०संवादि for ०सम्बादि ; 165^o दिशान्येपि for दिशान्येपि ; 188^o रैः दृग्गण for रैः दृग्गण ; 234^o उद्विष्टं for हृष्टं ; 274^b वृत्तिः for वृत्तिः ; 281^a स'य for स'यः ; 302^a मृगाण for मृगाण ; 329^a मृगाक्षीणां for मृगाक्षीनान्.

Chap. III. 8^a किन्निवदं for कीन्निदं ; 23^a दशां for देशां ; 118^a कलभाषिणि for कलभाषिणी ; 134^a श्रुि for श्रुिः ; 174^{a-b} संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षिताहिवै ; 176^{a-b} गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमल्ययं—which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text. 176°-¹ अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः—which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दीर्घं for नित्यं ; 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य ; 10^b अलंकारः for अलंकाराः ; 12° विविक्तूणां for तित्तीर्षूणां ; 13° अंश for अंग ; 15° आयत्तं for उपेतं ; 19^a सर्गान्तैः for वृत्तान्तैः ; 19^b रञ्जनं for रञ्जकं ; 20^b वर्ज्यते for दुष्यति ; 22^d कथनं for वर्णनं ; 25^d कारणां for लक्षणां ; 26^b साश्वासत्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27¹ आश्वासः for उच्छ्वासः ; 29¹ न ते for नैते ; 32¹ आप्ताः for आर्याः ; 36^b स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आसारादीनि ; 38^a कथादि for कथाहि ; 38^b पठ्यते for वध्यते ; 38° त्वाहुः for प्राहुः ; 39^a शाम्भ्यादि for शल्यादि ; 42¹ लक्ष्यते for दृश्यते ; 49¹ आननं for मुखं ; 50° ववृते for ववृधे ; 51^b स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि ; 53° तदा for ततः ; 54¹ ईप्सितं for इष्यते ; 57^d कर्तुं for हन्तुं ; 63¹ वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते ; 67^a परं for खरं ; 69° हि for तु ; 71^d मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः 78° अन्यच्च for अन्यत् ; 85^d विद्यते for दृश्यते ; 89^d यथा for जनाः ; 97^d मतो for स्मृतो ; 99° इह for इमे ; 99¹ अन्यत् for अप्यत्.

Chap. II. 2° प्रतिसंस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम् ; 3^d अद्य for अन्यत् ; 6^a श्लिष्ट for श्लेष ; 7^b संसृष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिक्षिप्य for परिभ्रम्य ; 14^d प्रदर्शयते

for निदर्शयते ; 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् ; 17^a त्वद् for तव ; 28^d मता for स्मृता ; 30¹ मता for स्मृता ; 31^d इष्यते for उच्यते ; 33^d उदिता for मता ; 40^d प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42^d एव सा for मता ; 48^a समाहृत्य for समीकृत्य ; 50^d स्मृता for मता ; 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादीं ; 54^c च for एव ; 56^b त्वत् for तत् ; 60^b अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः ; 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते ; 64^d सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः, 65^b इष्यते for उच्यते ; 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः, 74^c मुग्धे for मुग्धः ; 75^b च for अपि ; 82^d पश्यति for कल्पते ; 97^c नवाय च नताङ्गीनां for स एवावनताङ्गीनां ; 100^d देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105^a वर्यात्पलं for नीलोत्पलं ; 113^b अपि for तथा ; 114^c अनुगति for अवगति ; 115^b इत्यपि for एव च ; 116^b कुटजोद्गमाः for कुटजद्रुमाः ; 117^b वर्ग for वृन्दं ; 117^c अद्य for एष ; 118^a अद्य for अत्र ; 128^d तत्र नाश्रयः for न तदाश्रयः ; 129^c अत्र for एव and तद् for यद् ; 132¹ न्वहं for न्वदं ; 137^a प्रत्याचक्ष्णाया for इत्याचक्ष्णाया ; 137^b विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137^d ईदृशः for उच्यते ; 144^d प्रतिबन्धिनः for परिपन्धिनः ; 145^d एकान्तररूपा for एवानुररूपा ; 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149^d उपसूचनात् for उपदर्शनात् ; 153^d निवार्यते for निषिध्यते ; 154^d जीर्णं for नीलं ; 161^c दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162^b तृप्यति for शाम्यति ; 163^b अयं निवर्त्यते for यन्निवार्त्यते ; 172^a आह्लादयति for आनन्दयति ; 180^d च्छविः for द्युतिः ; 182^c इयता for अयन्तु ; 182^d जलात्मा for जडात्मा ; 186^d सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते ; 190^d लोलदृष्टि for लोलनेलं ; 192^b वियदम्भसोः for चन्द्रहंसयोः ; 192^d चन्द्रहंसयोः for वियदम्भसोः ; 195^d अदर्शयत् for अदर्शयत् ; 197^c सूक्ष्म for शुद्ध ; 199^b हेतुकं for हेतुजं ; 207^c सच्छायः for सुच्छायः,

215^a अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते ; 215^a स्थितेः for स्थितिः ; 219^a उत्सुकः for उद्यतः ; 222^a चैवन्तु for चेत्येवं ; 222^a कथ्यते for वर्यते ; 224^b जन्यते for जायते ; 226^a अनुन्मत्तो for उन्मत्तो ; 230^a उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां ; 236^a मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे ; 240^b कृतां for स्थितां ; 243^a व्याक्रियन्ते for व्याहियन्ते ; 245^a आश्रये for आश्रमे ; 260^a त्वदर्पित for मदर्पित ; 266^a एव for एष ; 276^a अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277^a सैवावन्ती for सैषा तन्वी ; 283^a देवी for तन्वी ; 291^a इति मुक्तः for एवमुक्त्वा ; 295^b दैवबलात् for दैववशात् ; 296^a तस्याः for अस्याः ; 296^b नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300^a अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302^a शीता किल for मयि शीता ; 304^b नाम नो for नामतो ; 311^a वा for च ; 323^a कुलं for बलं ; 325^a जगन्नयं for नभस्तलं ; 326^a कल्प्यते for कल्पने ; 327^a स्मृता for मता ; 329^b अपि for च ; 335^a लोचनम् for लोचने ; 337^a अप्रकान्तेप्सिता for अप्रकान्तेषु या ; 344^a प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346^a एव for एष ; 348^a सह-भावस्य for सहभावेन ; 348^a यथा for स्मृता ; 349^a पारङ्गराः for पारङ्गराः ; 350^a अश्रुभिः for असुभिः ; 352^a निरूपणं for निदर्शनं ; 353^a पारङ्गरं for पारङ्गरं ; 355^a कीर्तितं for दर्शितं ; 356^a संसृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते ; 360^a यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6^b साम्प्रतं for सत्पतिं ; 8^a किन्निवदं for किलु ते ; 21^a वा for च ; 38^b ईप्सिताः for ईहिताः ; 41^a आमोद for आनन्द ; 41^a न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55^a तापनेन for तायनेन ; 63^a पिष्टपस्य for विष्टपस्य ; 80^a आहुः for प्राहुः ; 111^a तायवो for वायवो ; 117^a जनं for नरं ; 119^b रषा for क्रुधा ; 127^b च for वा ; 129^{a-b} सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि ; 129^a ऐरावतः for ऐरावणः ; 132^a कुलं for बलं ; 132^a न च ते कोपि for तव नैकोऽपि ; 137^a

अलङ्कृतिः for अलङ्किया ; 145^b अजाः for अमी ; 146^d न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषणं ; 153^d एष for एवं ; 156^c यत्र for तत्र ; 158^a वियुक्ता for विमुक्ता ; 158^c मदनबाणा for स्मरस्य बाणा ; 158^d मृगेक्षणा for वामेक्षणा ; 160^d अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्गुण्यपि ; 161^d न्यङ्गं for न्यस्तं ; 165^a अस्पर्शा for अमर्श ; 174^{a-b} सुगतैः संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176^d प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते ; 184^b सकलः for सफलः and निष्कलः for निष्फलः ; 185^b कन्यका for पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of Dr. F. W. Thomas (JRAS., 1903, pp. 349-354) are noted below for comparison:—

Chap. I. 12^o विविच्छूणां for तित्तीर्षूणां ; 13^o अंश for अंग ; 20^o उपात्तेषु सम्पत्तिः for उपात्तार्थसम्पत्तिः ; 60^b नियच्छति for निगच्छति ; 62^o एनं for एतं ; 80^b एतद् for तद्.

Chap. II. 2^o प्रतिसंस्कृत् for परिसंस्कृत् ; 10^o परिक्षिप्य for परिवृत्त्य ; 62^a संरुन्धे for सन्धते ; 64^d सूचिनः for सूचकः ; 82^d पश्यति for यस्यति ; 134^c यातव्यं for याहि त्वं ; 142^a रन्ध्रावेक्षणा for रन्ध्रान्वेषणा ; 148^c त्वं for ते ; 149^d अस्यार्थस्य for तस्यार्थस्यैव ; 155^b सानुकोशमिवोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182^c इयता for अयं तु ; 197^o सूक्ष्माम्बु for शुद्धाम्बु ; 255^a रागबालातपः for रविबालातपः ; 300^o अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता ; 350^d अश्रुभिः for असुभिः ; 364^a एष for एव.

Chap. III. 38^d वार्यन्ते for वक्ष्यन्ते ; 41^o आमोद for आनन्द ; 70^o तस्यापि for तत्रापि ; 158^c मदनबाणा for स्मरस्य बाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones; as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोत्तमाः for कुटजद्रुम. It seems that *uṅgama* in *Kuṭajōṅgama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *pūṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaśāstra* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script; it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939.

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚĀ

ॐ । । स्तुतं दत्तं ननु यथा च उक्तं श्रीसुतं
स्तुतं दत्तं ननु यथा च उक्तं श्रीसुतं
स्तुतं दत्तं ननु यथा च उक्तं श्रीसुतं
स्तुतं दत्तं ननु यथा च उक्तं श्रीसुतं
स्तुतं दत्तं ननु यथा च उक्तं श्रीसुतं

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

ॐ ह्यं नृसं वल्लिं न दयं नृसं वै ।
 ह्यं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ॥ ३

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।
 वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ॥ ३

इदमन्यन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।
 यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ।
 नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं नृसं ॥ ४

आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥५॥

श्लोकं श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ॥ ५

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुधप्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

सप्तमः श्लोकः अत्र दत्तः सप्तमः श्लोकः ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ।
तदा श्रुत्वा चोत्तरं श्रुत्वा चोत्तरं ॥ ७

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगं ॥७॥

देःश्रुतः श्रुतः दमाः दमाः श्रुतः ।

श्रुतः दमाः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ ७ ॥

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः ।

किमन्धस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ ८ ॥

अतः प्रजानां व्युत्पत्तिमभिसन्धाय सूरयः ।

वाचां विचित्रमार्गाणां निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

ལྷ་བྱ་ལམ་ལྷན་ ཚོག་ལྷས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚོག་ ངས་པར་སྤྱད །། ༡

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལྷས་དང་ ལྷན་ ཡང་ དབུ་བལྟན །

ལྷས་ རི་ དེ་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་ལྷས་བཅད་ ཚོག་གི་ སྤང་ །། ༡

पद्यं गद्यञ्च मिश्रञ्च तन्निश्चैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚོགས་བཅད་ ལྷག་པ་ དང་ །

སྤྲེལ་མ་ ལྷས་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

ལྷན་ ལྷན་ ཞེས་ ལྷས་གཉིས །། ༡

छन्दोविचित्र्यां स[2b]कलस्तद्व्यपञ्चो निदर्शितः ।
सा विद्या नौर्विविक्षूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

देऽपि श्लेषः सः सप्तदशमः ।

श्लेषः सः सप्तदशमः सप्तदशमः ।

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ।

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ॥ १३ ॥

मुक्तकं कुलकङ्कषः संघात इति तादृशः ।

सर्गबन्धांशरूपत्वादनुक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ।

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ।

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ।

सप्तदशमः सप्तदशमः सप्तदशमः ॥ १३ ॥

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।

आशीर्नमङ्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སཀྱས་ བཅིངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ །

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཟོད་པར་བྱ །

ཤིས་ བཟོད་ ལྷག་བྱ་ དངོས་པོ་ ནི །

ངེས་པར་ བསྟན་པའང་ དེ་ཡི་ ལྷོ ། ༡༥

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं ।

चतुर्वर्गफलप्राप्तं चतुरोदात्तनायकं ॥१५॥

སྟོན་བྱང་གདམ་ ལས་ ལྷུང་པའམ །

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བརྟེན་པ །

སྟེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་ལྷུང་ དང་ །

མཁས་ཤིང་ ལྷ་ཆེའི་ འདྲིན་པ་ཅན ། ༡༥

नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྲིའི་ ལྷ་མཚོ་ རི་དང་ ཏུས །

ཉི་ལྷ་འཆར་བའི་ བསྟགས་པ་ དང་ །

སྐྱོད་ཚལ་ཚུ་ཡི་ རོལ་ཅེད་ དང་ ।

ཚང་འཕྲང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་མ་ དང་ ।

གཞིན་ཉ་སྐྱི་ དང་ འཕེལ་བ་ དང་ ।

གྲོས་ དང་ མོ་ཉ་ བགྲོད་པ་དང་ ।

གཡུལ་དང་ འདྲིན་བ་ དང་བས་ ཀྱང་ । १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་བར་གྱུར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ ।

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གཏམ་ ॥ २०

སཀ་ཤིན་ཏུ་ བྱ་ཆེ་ མིན་ ।

མཉམ་འོས་ གྲིད་ ལེགས་མཚམས་སྐྱར་ ॥ २१

सर्वत्र भित्तसर्गान्तै[3a]रूपेतं लोकःरञ्जनं ।

काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१६॥

गुण'दु' सक्'दमा'गी' सप्र' ।

प्र'दद'स्र'व'स' र'द्वि'द्वे' स'द्वे' ।

स्र'दमा' द'स'प'द्वि'स्र'द्वे' ।

स'द्वि'प'द्वि' व'द'दु' म'द'स'प'द'द्वि'द्वे' ॥ १८

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगैः काव्यं नः वज्यंते ।

यद्युपात्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

मा'द्वि'मा' य'द'दमा' र'द'स' द'स'क' य'द' ।

मा'द'द्वि' स्र'द'क'स'स' स्र'द'द्वि'मा'स'गु' ।

द'द्वि'मा' स'द'द'द'द'द'द' ।

द'द्वि'द'द्वि' स्र'द'दमा'स्र'द' स'य'द' ॥ २०

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषां ।

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

घोषाः सः रद्वेकः सः यिन् दकः श्रुत्वा ।

उः सः वगैरेकसः रेः यिन् कि ।

दशाः सः वगैरेकः सः उः सः यिन् ।

सः सः रद्वेकः सः यिन् ॥ ४१

वंशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयान्नायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

द्विषाः सः वगैरेकसः सः सः सः श्रुत्वा ।

दशाः सः सः वगैरेकसः सः सः ।

रेः सः सः सः रद्वेकः सः कि ।

सुदः सः सः सः सः सः सः सः ॥ ४२

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रभेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

सः सः सः सः सः सः सः ।

सुदः सः सः सः सः सः सः ।

ཞེས་པ་ དེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས།

དེ་ལ་འདྲིན་པ་ ཉིད་ཀྱིས་ བློ། ॥ ३३

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरैण वा ।

स्वगुणाविक्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བརྗོད་པར་བྱ་བ་ བརྗོད་པ་ལོ།

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་འཇམ་ གཞན་ ཀྱིས་ ཀྱང་།

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱབས་ ལྷོན་ འདྲིར།

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱབས་ ལྷིར་ ཡོད་མིན་ ॥ ३४

अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति क्रीद्वत्वा भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང་ ཇིས་པ་ མ་མཐོང་སྟེ།

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བརྗོད་པའི་ལྷིར།

གཞན་གྱིས་བརྗོད་ དེ་ རང་གིས་ ཞེས།

དབྱེ་བའི་ལྷོ་ བློ་ ཅི་འདྲ་ཞིག ॥ ३५

वक्रञ्चापरवक्रञ्च साश्वासत्वञ्च भेदकं ।
चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

मा०१०० १०० १०० १०० १०० ।
द्वयमासं सत्समासं सत्समासं सत्समासं ।
सत्समासं सत्समासं सत्समासं सत्समासं ।
१०० १०० १०० १०० १०० ॥ २७

आर्यादिवत्प्रवेशः किं न वक्रापरवक्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भादिराश्वासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

द्वयमासं सत्समासं सत्समासं सत्समासं ।
मा०१०० १०० १०० १०० १०० ।
द्वयमासं सत्समासं सत्समासं सत्समासं ।
द्वयमासं सत्समासं सत्समासं सत्समासं ॥ २८

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाद्धिता ।
तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གཏམ་ དང་ བཟོད་པ་ ཞེས།
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན།
 ལྷག་ས་ བཟོད་པའི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ བང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༢༤

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।

सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ བློ།
 བསྐྱུ་བ་ དང་བ་ ལ་སོགས་པ།
 སྐྱེས་བཅེངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ ལྷན་ཕྱིད་ ཡོན་ཏན་ མིན། ॥ ༢༥

कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।

मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁམ་གྱི་ བསམ་བྱས་ ཏྲགས།
 གཞན་དུ་ དང་ བློ་ ལྷན་མི་ འགྱུར།

འདོད་དོན་ ལུ་བ་ལ་ ལྷོ་ཅུ་ བློ་ །

མཁས་པ་ རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྱུར་ ། ༣༠

मिश्राणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।

गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྐྱེལ་མ་ ལྷོས་གར་ལ་སོགས་ཏེ་ །

དེ་དག་ རྣམས་ནི་ བཞུགས་ ལྷོས་ །

རྒྱལ་པ་ ཚོགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་ །

ཙམ་ ཞེས་པར་ མངོན་པར་ བརྗོད་ ། ༣༢

तदेतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्प्राकृतन्तथा ।

[4a]अपभ्रंशश्च मिश्रञ्चत्याहुरासाश्चतुर्विधं ॥३२॥

རལ་གྱི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ གྲང་ །

ལོགས་རྒྱུར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ དང་ །

རྒྱར་ཆག་ འདྲིས་མ་ ཞེས་བྱ་བ་ །

རྣམ་པ་བཞི་ཅུ་ མཁས་པས་ བསྐྱུངས་ ། ༣༣

संस्कृतं नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

येषां श्रुत्वा वेदांस्तु ह्यपि वै ।
ज्ञानं तु नृणां ह्येवमेव वास्तुतः ।
देवैस्तु देवैर्भक्तैस्तु पुत्रैश्च वेदा ।
तुभ्यं नृणां वदन्ति नृणां वै ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृतम्प्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

पुत्रैश्च वेदांस्तु ह्यपि वै ।
येषां श्रुत्वा वेदांस्तु ह्यपि वै ।
देवैस्तु देवैर्भक्तैस्तु पुत्रैश्च वेदा ।
तुभ्यं नृणां वदन्ति नृणां वै ॥ ३४

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।
याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्नधि ॥ ३५॥

स र स क् शो र द र ।
 ल र म ल क य द र र य ।
 स र क र म ल क क र उ स स र ।
 स स र क स स ल क र म र स र ॥ ३५

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।
 शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

व ल र क ल स र म स र क र ।
 स र म ल क र क र उ स स र ।
 व स र म ल क र क स स ल स र स र ।
 म ल क र क र क र क र क र ॥ ३७

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादिः *यत् ।
 ओसरादोन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ल स र स र स र क र म ल स र ।
 र म ल क र स र क र स र क र ।
 ५

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ॥ ३७

कथादि सर्वभाषामिः संस्कृतेन च ष्यते ।

भूतभाषामयीं त्वाहुरद्भुतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

मातृषः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

मातृषः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

मातृषः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

मातृषः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ॥ ३७

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्ष्यार्थमितरत्पुनः ।

अन्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ।

ह्रस्वः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ऋणः ॥ ३८

अस्त्यनेको गिरां मार्गाः सूक्ष्मभेदः परस्परं ।
तत्र वैदर्भगौडीयौ वण्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

सकंठकं द्रुमं च ध्रुवोत्तकं ।

कौम्यं चोत्तमं किं द्रुमं ध्रुवम् ।

दोषं चोत्तमं द्रुमं द्रुवम् ।

चोत्तमं द्रुमं द्रुवम् चोत्तमम् ॥ ८०

श्लेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।

अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

सुन्दरं च सवन्दनं सञ्जयं श्रुत्वा ।

सुन्दरं चोत्तमं चोत्तमं चोत्तमम् ।

दोषं चोत्तमं द्रुमं द्रुवम् श्रुत्वा ।

चोत्तमं द्रुमं चोत्तमं द्रुवम् चोत्तमम् ॥ ८१

इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्मृताः ।

एषां विपर्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཟུ་ བེ་ དལྟའི་ །
 ལས་གྱི་ རྫོག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན་ །
 འདི་དག་ སལ་ཚེར་ བརྗོག་པས་ ཉི་ །
 ལོ་ཏེ་ལས་ དག་ མཚོན་པ་ ཡིན་ ॥ ༧༢

श्लिष्टमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरं ।

शिशिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

ལྷུང་པ་ ལྷོད་པས་ མ་ རེག་པའོ་ །
 རྫོག་ཚུང་ ཡི་གི་ མང་པ་ ཉི་ །
 ལྷོད་པ་ ལྷུ་ལ་ཏུ་ ལྷུ་ལ་ །
 ལོ་ལ་ལི་ག་ལི་ལྷུ་ འདོད་ ॥ ༧༣

अनुप्रासघिया गौडैस्तदिष्टं बन्धगोरवात् ।

वंदमैर्मालतीदाम लंघितं भ्रमरैरिति ॥४४॥

ལོ་ཏེ་པ་ ཡིས་ རྗེས་ཁྲིད་རྗོས་ །
 དེ་ འདོད་ ལྷུ་ལ་ཏུ་ ལྷུ་ལ་ །

ཡི་གླིང་ལྷ་མ་རེེ་ཞེས།

ཤེ་དུ་ཡིས་སྤོར་ལྷེ་བྱེད། ॥ ८८

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྷན་པ་ བྲགས་དོན་ཅན།

ལྷ་པའི་མཚན་མ་ ལྷ་ལྷལ་ ལྷ།

འོད་ཀྱིས་ མཛོས་པ་ ལྷས་ ཅེས་པ།

དྲིགས་པའི་ ལྷལ་བཟང་ལྷན་པའི་ ཚོག་ ॥ ८९

व्युत्पन्नमिति गौडीयैर्नातिरूढमपीष्यते ।

यथानत्यर्जुनाब्जन्मस[5a]दृक्षाङ्को बलशुगुः ॥४६॥

ངེས་ཚོག་ འོད་ ལྷིར་ ལོ་རྩ་བ།

ལྷན་དུ་ བྲགས་པ་ མེན་ ལང་ འདོད་ །

ལྷན་དུ་ དཀར་ མེན་ ལྷལས་སྤྱེས།

དེ་འདྲས་ མཚན་པ་ འོད་དཀར་ཅན། ॥ ९०

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिश्रवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

मृदुम'व' श्लु'र'व' शी'मृदुम' ३५ ।

दे'श्री' मृदुम' कु'प' व'म'म' श्ले ।

श्लु'र'व' मृदुम' कु'प' व'म'म' यी ।

यी'मो'व'गो'र'व'दी'श्लु'म'क'स'उ'क ॥ ८७

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्भरंभःकणोक्षितः ॥४८॥

मृ'पु'म' उ'उ'र'श्लु'म'पु'र' उ'र' ।

म'प'प'श्लु'र' व'द'म'प' र'र' ।

श्लु'र'म' र'व'म'श्लु'र' र'र'श्लु'र'र' ।

श्लु'श्लु'र'श्लु'श्लु'म'श्लु'र' श्लु'र' ॥ ८८

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।

स्पर्द्धते रुद्धमद्धैर्यो वररामाननानिलैः ॥४९॥

ཅན་གྱིས་བསྐྱོས་ཀྱི་ལྷོ་ལོང་།
 འཇམ་པ་མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱུང་།
 བདག་གི་བརྟན་འགོག་དགའ་མ་ནི།
 མཚོག་གི་ཁ་ཡི་རྒྱུང་དང་འགྲན། ༥༦

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।
 अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་པ་མི་མཉམ་མ་བརྟགས་པར།
 རོན་གྱི་གྲོན་དང་ཚོགས་དག་ལ།
 རྗེས་ནས་ཤར་སྤོགས་པ་དག་ལ།
 ལྷན་ངག་ལམ་ནི་སྤྱང་བར་སྤྱང་། ༥༠

मधुरं रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।
 येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रताः ॥५१॥

ལྷན་པ་ཉམས་ལྷན་ཚོག་དང་ནི།
 དངོས་པོ་ལ་ཡང་ཉམས་གནས་པ།

श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ॥ ५२

यथा कथापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
 *तद्रूपादिपदासक्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ॥ ५३

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
 तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ।
 श्रुत्वाऽऽत्तुः सः श्रुत्वाऽऽत्तुः सः ॥ ५३

इतीदं *नाहतं गौडैरनुप्रासस्तु तद्विप्रयः ।

अनुप्रासादपि प्रायो वेदभैरिदमीप्सितं ॥५४॥

उेसः २३० वी० ७० वः ३० २३० ।

२० २०० ३३० ३३० ३३० ३३० ।

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ।

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ॥ ५७

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।

पूर्व्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यद्वृत्ता ॥५५॥

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ।

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ।

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ।

३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ३३० ॥ ५४

चन्द्रे शरन्निशोत्तंसे कुन्दस्तवकविभ्रमे ।

इन्द्रनोलनिभं लक्ष्म सन्ध्यात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

ལྷོན་མཚན་ དབྱ་གྲན་ ལྷོ་བ་ ཉི །
 ཀྱུ་ལི་ རོན་པོར་ འབྲུལ་པ་ ལ །
 མཚན་མ ཡིན་ཉི་ལ་ མཚུངས། །
 བྱང་བའི་ དཔལ་ ཉི ཡང་དག་ འཛིན། ॥ ༡༩

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
 मन्मनो मन्मथाक्रान्तं निर्दयं *कतुमुद्यतं ॥५७॥

མཛོས་མ་ མཁའ་ལ་ ལྷོ་བ་ཡི །
 དཀྱིལ་འཁོར་ མཛོས་པས་ བདག་གི་ཡིད། །
 ཡིད་སྐྱབ་ ཀྱིས་ མཚན་ བཙེ་མེད་དུ། །
 འཛོམས་པར་ བཙོན་པ་ འདི་ ལ་ ལྷོས། ॥ ༡༧

इत्यनुप्रासमिच्छन्ति नातिदूरान्तरश्रुतिम् ।
 न तु रामामुखाम्भोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་པ་ ཡིན་དུ་ མི་རིང་བར། །
 མོས་པ་ དག་ ཉི་ རིས་ཁྲིད་ འདོད། །

दग्धः सः सत्त्वः प्रीतिः सुखः ५८ ।
 सत्त्वः सः सत्त्वः उतः सः सः ॥ ५९ ॥

स्मरः खरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।
 च्युतो मानोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥५६॥

सद्गमः श्रीः सुखः ५८ ।
 सत्त्वः सः सुखः उतः सत्त्वः सः ॥
 सत्त्वः सः सुखः सः सुखः सः सुखः ।
 सत्त्वः सः सुखः सः सुखः सः ॥ ५९ ॥

इत्यादि बन्धपारुष्यं शैथिल्यञ्च नित्यच्छति ।
 अतो नैव[6a]मनुप्रासं दाक्षिणात्याः प्रयुञ्जते ॥६०॥

उतः सत्त्वः सुखः सः सुखः सः ॥
 सुखः सः सुखः सुखः सुखः सुखः ।
 सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः ।
 सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः सुखः ॥ ६० ॥

आवृत्तिमेव संघातगोचरं यमकम्बिदुः ।

तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कौमल्यं चरिं श्लोचं प्रुलं वल्लोचं वंशं ।

सिंखं च्छन्दं च्छन्दं श्लोकं च्छन्दं च्छन्दं ।

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ।

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ॥ ७०

कामं सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।

तथाप्यग्राभ्यतेवैनम्भारम्बहति भूयसा ॥६२॥

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ।

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ।

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ।

देव्यं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं च्छन्दं ॥ ७३

कन्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।

इति ग्राम्योयमर्थात्मा वेरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞིན་ལུ་མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ བྱོང་བའི་དོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བུལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད། ॥ ༤༢

कामं कन्दर्पचण्डालो मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो दिष्ट्येत्यप्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་བ་ གཏུམ་པོ་ནི།
 དེས་བར་ བདག་ལ་ བརྗེ་བ་མེད།
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་བ།
 བྱོང་བའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ༤༣

शब्देपि ग्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

ལྷ་ལའང་ བྱོང་བ་ཉིད་ ཡོད་དེ།
 དེ་ནི་ ལེགས་པའི་ ཅིག་ཡོས་ བྲགས།

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བརྗོད་པ་ལ།
 ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སོགས་བཞིན། ॥ 57

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।
 दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཚོག་གི་མཚམས་སྟོར་གྱིས་ ལྷགས་ དང་།
 སྐར་ཡང་ ངག་དོན་དག་གིས་ ཀྱང་།
 ཉེས་པར་དོགས་བྱེད་ སྟོང་བ་སྟེ།
 ཡ་ ལྟ་བ་དེ་ སྟོང་ བཞིན། ॥ 58

परं प्रहृत्य विश्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।
 एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྐྱེས་མུ་ བྱི།
 སྟོང་ལྟ་བུ་ལ་ སྟོང་ལྟ་བུ་།
 དེ་ལྟ་མུ་ སོགས་ ལས་དག་ བྱི།
 གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་མ་ཡིན། ॥ 59

भगिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।

विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

सुभावाङ्गी सुगीर्वा ।

लेखास्त्रिणां गुणदुःखसाधकैः ।

देवदत्तं कृष्णं कृष्णं च ।

शैवदुःखलेखं च चन्द्रं च ॥ ६८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।

बन्धशैथिल्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

सुवर्णं यो यो यो च ।

शैवदुःखलेखं च चन्द्रं च ।

माचं चन्द्रं प्रकाशं च चन्द्रं च ।

शैवं च चन्द्रं च चन्द्रं च ॥ ६९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगोतिभिः ।

कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

ལྷིན་གྱི་སྤོང་བ་ལྷན་ ཏུས་སུ །
 ལྷན་པར་སྒྲོགས་པའི་མཁྲིན་ལྷན་པ །
 མ་བྱ་ཡི་ ཉི་ མཐུག་མ་དག །
 ལྷམ་པོར་བྱས་ནས་ བར་བྱེད་དོ །། ༧༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་རྒྱས་ཉིད་མ་ཡིན །
 ལྷན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མེད་ཏེ །
 ཤིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་ །ཁ་ བ་ བཞས་ །། ༧༡

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

བསལ་ ལྷིན་ བཞན་དག་ སལ་ཆེར་ ཉི །
 བཟོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ ལྷིན་ །

क्रुप'दीमा'कृमा'ग्री' सुमा'मम'द'मा ।
 क्रु'दीमा'गी' की' कृमा'द'मा ॥ ७३

अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः खुरध्रुणनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

र्क'मा'द'मा' र्क'द'मा'दी'द'मा'की' ।
 र्क'मा'द'मा' र्क' की' मा'दी'द'मा ।
 दी'मा'द'मा' द'मा'द'मा'दी'द'मा'गी' ।
 द'मा'द'मा' कृ'दी'द'मा' दी'द'मा' ॥ ७३

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।

इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

द'मा'द'मा'दी'द'मा'गी' दी' ।

कृ'दी'द'मा'द'मा'दी'द'मा'दी'द'मा' ।

दी'मा'द'मा' दी'दी'द'मा' दी'दी' ।

दी'दी'दी'दी'दी' दी' दी'दी'दी'दी'दी' ॥ ७४

नेहशम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལས་ ཉི་ བཞིས་ཀ་ དག་ལ་ ཡང་ །
 ཉིགས་བའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྷན་ ཞིང་ །
 ལྷ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གྲུང་བ །
 འདི་འདྲ་ གལ་ཆེར་ བཞེད་མ་ཡིན །། ༥༧

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्ते यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदारग्राह्यं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

བང་དུ་ འགའ་ཞིག་ བཛོད་བལ་ །
 རྒྱད་འཕགས་ལྷན་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིགས་ །
 དེ་ཉི་ ལྷ་ཆེར་བཛོད་དེ་ དེས་ །
 ལྷན་ངག་ལས་ཀྱན་ མགོན་དང་བཅས་ །། ༥༨

अर्थिनां कृपणा दृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

ལྷོང་བ་རྣམས་ ཀྱི་ བཀྱིན་བའི་མིག་ །
 ལན་ཅིག་ བྱིད་ བཞེད་ལ་ ལྷུང་བ །

छ'उेमा' ग'न'स'स'स' र'ये'स' स'र ।
 ग'न'स'स' ग'र'द'ल' छ'स'ये'न ॥ ७७

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
 अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

उ'स'स' छ'द'गु' क'मा' र'द'ल ।
 ग'र'द'स' स'र'द'स'स' ल'मा'स'स' स'क'न ।
 ल'स'र'द'छ'द'गु'स' ग'न'स'स' ग'र' ।
 र'मा'स'स' स'र'द'स'स' र'स'स'स'स' ॥ ७८

श्लाघ्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कश्चिदिध्यते ।
 यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

स'स'स'स'स'स'र'द'स'स' स'र'द'स'स' ।
 स'स'स'स' स'र'द'स'स' र'स'स'स' ।
 र'स'स'स'स'स'स' स'र'द'स'स' ।
 ग'स'स'स'स'स'स' ल'स'स'स'स'स' ॥ ७९

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।

पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकप्ररायणम् ॥८०॥

བཟློན་པ་ ཚོག་ ལྷུང་ མང་པོ་ ཉིད་ །

འདི་ནི་ ལྷུག་པ་ དག་གི་ གསོམ་ །

ཚོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ལྷོ་སྲོགས་པ་ །

མིན་པ་ འདི་ཉིད་ གཅིག་ཏུ་ བཞེད་ ॥ ༨༠

तद्गुरुणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।

उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ་ ལྷི་ དང་ ཡང་པ་ ལྷམས་ །

མང་ དང་ ལྷུང་པ་ཉིད་ ལྷེལ་པ་ །

མཐོ་དམན་གྱི་ ནི་ ལྷམ་པ་ དེ་ །

བཟློན་པ་ལ་སོགས་ལྷམས་ལ་མཐོང་ ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।

पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

ལྷ་བ་ཀྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་སྟན་ཅན།
 མཁྲིགས་བའི་ལྷ་ས་ ལ་ གནས་བའི།
 ལོས་ དམར་ མཛེས་ བཞིན་ རྩ་ལྷན་མ། ॥ ༥༩

इति पद्येपि पौरस्त्या बभ्रन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥
 ཅེས་པ་ བཟླིབ་དང་ལྷན་བའི་ཚོགས།
 ཚོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ ལྷོར།
 གཞན་དག་ འཁྲུགས་མིན་ མཛེས་བ་ཡི།
 ཚོགས་རྣམས་ བཟླིབ་པར་ འདོད་དེ་ དཔེར། ॥ ༥༩

पयोधरतटोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ॥८४॥
 རྩ་འཛིན་ངོས་ཀྱི་ སང་ ལྷ་ གནས།
 མཚན་མས་ཀྱི་ཉི་འོད་ ལོས་དང་ལྷན།

ཅུ་ལྷན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཟེང་བར་བྱེད་མི་འགྱུར། ॥ ༤༦

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཛེས་པ་ འཛིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཛེས་པའོ།

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བརྗོད་ དང་།

བསྐྲུབས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལའང་ *སྦྱར། ॥ ༤༧

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवाद्भूशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དགའ་ཕྱབ་པར་བོ་ བྱིད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྒྱལ་ མི་ གཙང་མ་ དག།

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁོ་ན་ དེས་བར་ བྱིས། ॥ ༤༨

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोर्जृम्भमाणयोः ।

अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

स्त्रिंशद्विंशत्युत्तरं त्रिंशत् ॥ ८७ ॥

अथ चत्वारिंशत् त्रिंशत् ॥ ८८ ॥

चत्वारिंशत् त्रिंशत् ॥ ८९ ॥

चत्वारिंशत् त्रिंशत् ॥ ९० ॥

इति [8a]संभाव्यमेवैतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।

कान्तं भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

त्रिंशत् त्रिंशत् त्रिंशत् ॥ ९१ ॥

चत्वारिंशत् त्रिंशत् त्रिंशत् ॥ ९२ ॥

चत्वारिंशत् त्रिंशत् त्रिंशत् ॥ ९३ ॥

चत्वारिंशत् त्रिंशत् त्रिंशत् ॥ ९४ ॥

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।

योर्यस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालितं ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

अदिं किं नृःठं वहेदं वः अदिं ।

मो तं वः वः महेसं वः वहेदं ।

अहुमां वः नृःमः मल्लं म्रिं किं ।

वः वः नृःमः नृःमः नृःमः ॥ ७३

अन्यधर्मस्ततो न्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

मल्लं म्रिं क्लेशं नृं मल्लं नृमां वः ।

अदिं नृं नृं नृमां म्रिं नृमां नृमां नृमां ।

नृमां नृमां नृमां नृमां नृमां ।

नृमां नृमां नृमां नृमां नृमां ॥ ७३

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासालुब्धा [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

गुःसुःनं किं शिवाःअह्मः किं ।

यद्गुःनमाः गुःनः शिवाःअह्मः उत ।

शिवाःशिःसुःनः यद्गुःनः यः ।

देःशिः यद्गुःनः अह्मः यः ॥ ७७ ॥

निष्कृतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयं ।

अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

शिःसुःनं यः यद्गुःनः ।

सुःनमाः शिःसुःनः यद्गुःनः यः अह्मः यद्गुःनः ।

शिःसुःनं यद्गुःनः यः अह्मः यद्गुःनः ।

शिःसुःनं यद्गुःनः यः अह्मः यद्गुःनः ॥ ७८ ॥

पद्मान्यर्काशुनिष्कृताः पीत्वा पावकविपुषः ।

भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

यद्गुःनः शिःसुःनः सुःनमाः यः अह्मः ।

अह्मः यद्गुःनः यः अह्मः सुःनमाः यः ॥

ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ ཟེར་མ་ དག །
 ་ལོན་ཏུ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ། ༡༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठीवति बधूरिति ।
 युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛོས་ཏེ་ མི་མཛོས་པ །
 རྒྱང་མ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ །
 ཅིག་ཅར་ ཉིད་ཏུ་ མོས་ ཏུ་མ །
 བཞོན་པ་ དག་ གྲང་ འདོད་དེ་ དཔེར ། ༢༠

गुरुगर्मभराक्लान्ताः स्तन्र्त्योमेधपङ्क्तयः ।
 अत्रलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिरोरते ॥६८॥

སྐྱི་བའི་མང་ལ་ ཁར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །
 འཁུན་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྤྱེང་ །
 འདི་དག་ གཡོ་མེད་སྤྱིང་གི་ ནི །
 མང་བ་དག་ཏུ་ ཡང་དག་ཉལ ། ༢༡

उत्संगशयनं सख्याः स्तननं गौरवक्लमः ।

इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दर्शिताः ॥६६॥

श्रीमत्संख्येः सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

तदेतत्काव्यसर्वस्वं समाधिर्नाम यो गुणः ।

कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

इति मार्गद्वयं भिन्नं तद्वद्व्यतिरेकणात् ।

तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्रुम्प[9a]तिकवि स्थिताः ॥१०१॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

सन्ध्याः ३५५ ॥ ६६ ॥

དེ་དག་ དབྱི་བ་ ལྷན་ངག་མཁལ།

སོ་སོ་ལ་ གནས་ བརྗོད་ མི་ནས། ॥ १०१

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।

तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བྱར་ཤིང་འོ་མ་ བྱར་སོགས་ ཀྱི།

མངར་བ་ཉིད་ བྱི་ བྱར་བར་ཆེ།

དེ་ལྷ་མོད་ ཀྱི་ དེ་བརྗོད་བར།

དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ ལྷས་མཁལ། ॥ १०२

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।

अमन्दश्चाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ གྱིས་གྲུབ་ སློབས་བ་ དང་།

མང་དུ་ཐོས་བ་ ཅི་མེད་ དང་།

མངོན་བར་ སློབ་བ་མི་དམན་བ།

ལྷན་ངག་ ཕན་སྤུས་ཚོགས་པའི་ལྷ། ॥ १०३

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतं ।
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

वा०१०५ श्लोकः ॥ १०५ ॥
श्लोकः ॥ १०६ ॥
श्लोकः ॥ १०७ ॥
श्लोकः ॥ १०८ ॥

तदस्ततन्द्रैरनिशं सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।
कुरी कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

श्लोकः ॥ १०६ ॥
श्लोकः ॥ १०७ ॥
श्लोकः ॥ १०८ ॥

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

श्लोकः ॥ १०९ ॥
श्लोकः ॥ ११० ॥

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कालसन्धेन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

झङ्गन्वा सङ्घेस'स'सु'स'स'थी ।

केस' कस'स' सु'स' लेस' स'स'स' सङ्घे' ।

दे'के' स'स'स' कस'स'स' स' ।

दे'स'स' स'स'स' सु'स' स'स'स' स'स' ॥ १

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

दे'के'स'स' कस'स'स' स'स'स' के' ।

सु'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।

दे'के'स' स'स'स'स'स'स'स'स' ।

स'स'स'स'स'स'स' स'स' स'स'स'स'स' ॥ ३

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।

साधारणमलंकारजातमद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

लसं किं कस्यस्य दसुं देकेतु ।
 सुतं नमनं जैसां किं सुतं यतं सङ्गु ।
 सुतं खेदं दसुं सुतं सुतं किं ।
 क्वेसां नदिं ससुं सङ्गुस्यसु ॥ ३

स्वभावाख्यानमुपमा रूपकं दीपकावृती ।
 आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

सतं सजैकं सखेदं सतं ससुं सतं किं ।
 सङ्गुसां उतं ससुं सङ्गुस्यसु सतं ।
 नमनं सतं देकेतुं सङ्गुस्यसु सतं ।
 सुतं ससुं सतं सुतं सङ्गु ॥ ८

समासातिशयोक्त्येक्षा हेतुः सूक्ष्मो लघुः क्रमः ।
 प्रेयो रसवद्भूजंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

सङ्गुसां सतं ससुं सङ्गुस्यसु सतं ।
 सुतं सतं सुतं सतं सतं ।

द्वाभ्यां द्वाभ्यां द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ॥ ५ ॥

उदात्तापह्नु तिष्ठिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ॥ ८ ॥

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संसृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ।
 द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं द्वयं ॥ १० ॥

नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विचृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

ददोस'सो'कसस'गु' रद'वलेक' दद' ।

गदस'सुवस' सु'के'गस' ददोस'गसस'सुद' ।

दे' के' रद'वलेक'वडे'द'व' दद' ।

सै'गस' लेस' दद'सो'दे'कु'क' यी'क' ददोस ॥ ८

तुण्डैराताप्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिमिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

सकु' वै' दस'द' ले'द' सु'ग'व' दद' ।

ग'सो'ग'व' सु'द' ले'द' स'के'क'व' दद' ।

स'सु'क'व' स'दो'ग' ग'सु'स'द'सु'द'उ'क' ।

के'के' द'दो'द'ग' के'स'द'स'स'स' ॥ ९

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

सचीव-सदी-वद-वस- श्रुत-श्लेष-स- दी- ।
 शी-व- वी- गु-व-तु- र-श्रु-व-स- यी- ।
 स-व-स-के- छे-र-दे-न- द-व-र-स-स- ।
 यो-र-स-सु-व-श्लेष-व-स- स-तु-द-व-सु-र- ॥ १०

वघ्नन्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।
 नेत्रे चामीलयन्नेष प्रियास्पर्शः प्रवतन्ते ॥११॥

द-व-र-स-स-य- वी- स-व-स- र-दी- ।
 लु-स-व- सु-यो-र- श्रु-स-व-द- ।
 यी-द- वी- स-दे-व-स-सु-दे-व- द- ।
 शी-व-द-व- सु-स-व-स-सु-र- उ-र- र-श्रु-व- ॥ ११

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।
 जटाभिः स्निग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

सचीव-श्लेष- ल-व-व-श्लेष-व-वी- ।
 व-स-व-स-सु-व-दी- उ-र-व-व-द- ।

श्रुत्वा त्रिंशत् नवमं वरिं सदाप्युत्तमम् ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ॥ २३

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं कान्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

श्रुत्वा त्रिंशत् नवमं वरिं सदाप्युत्तमम् ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ॥ २३

यथा कथंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं प्रदर्श्यते ॥१४॥

श्रुत्वा त्रिंशत् नवमं वरिं सदाप्युत्तमम् ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ।
 सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा सुखैर्वा ॥ २४

अम्भोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।

इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

अदोसःसः सुदःगुः वगःससोः ३ ।

कुञ्जिसःवलेकःदुः उदःसदःदसः ।

उसःसः कसःदयोः ददोसःसुः ३ ।

सकुदसःसदिःकसःदगःसङ्कः सुदःदो ॥ १५

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव ।

इति प्रतीयमानेकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

सुदःगुःसदोः सङ्कः ३ः सलेकः ।

सोसःदगः सुदुःसुः सुदःसोः सलेकः ।

लेसःसः कसःसोदोः सुदोःसुदःसः ।

दोः ३ः ददोसःसोदोःदसोःदोः ३ ॥ १६

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्द्रमभूदिति ।

सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेव्यते ॥१७॥

བྱི་ཀྱི་གཞོན་གྱི་བཞུགས་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་ ॥ २०

तवाननमिवाम्मोजमम्मोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

བྱི་ཀྱི་གཞོན་གྱི་བཞུགས་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་ ॥ २ॠ

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

བྱི་ཀྱི་གཞོན་གྱི་བཞུགས་པ་
 བཞུགས་པ་ལྟེན་པ་ལྟེན་པ་

ଭେଷ'ସ' ଶକ୍ତେଷ'ସ' ମାତ୍ରନ୍ ସଂଶ୍ଳେଷା' ଧୈ ।
 ରଦି' ଶି' ଦେଷ'ସ'ଶ୍ଚିନ୍'ଶ୍ଚି'ଦସି ॥ ୧୦

ପଘ୍ନନ୍ତାବତ୍ତବାନ୍‌ବେତି ମୁଖମନ୍ୟସ୍ତା ତାଦୃଶା ।
 ଅସ୍ତି ଚେଦ୍‌ସ୍ତୁ ତତ୍କାରିତ୍ୟସାବନିୟମୌପମା ॥୧୦॥

ଦେ'ଭୈମା' ଗ୍ରନ୍' ମଦେ' ସଂଶ୍ଳେ'ଧୈ ।
 ଶ୍ଳେଷ'ରସ୍ତୌ' ମାତ୍ରନ୍'ଘଟ' ଦେ'ରହ'ସ ।
 ମାତ୍ର'ଦେ' ଧୈ'ନ୍'କ' ଦେ' ଗ୍ରନ୍'ରସ୍ତୁ' ।
 ଭେଷ'ସ' ରଦି'ଶି' ଦେଷ'ସେନ୍'ଦସି ॥ ୧୧

ସମୁଚ୍ଚଯୋପମାପ୍ୟସ୍ତି ନ କାନ୍ତ୍ୟେ'ସ୍ତ ମୁଖନ୍ତୟ ।
 ହାଦନାଘ୍ୟେନ ଚାନ୍‌ବେତି କର୍ମଣେନ୍‌କୃମିତୀଦୃଶୀ ॥୧୧॥

ଗ୍ରନ୍' ମଦେ' ଶକ୍ତେଷ'ସ' ଶି'ନ୍'ଧୈଷ ।
 ଶ୍ଳେ'ସ'ଧୈ' ଶ୍ଳେଷ'ସ୍ତୁ' ରସ୍ତୌ'ଶିନ୍' ଦେ ।
 ଦମା'ଶ୍ଚିନ୍' ରସ'ଶ୍ଚିନ୍' ଗ୍ରନ୍' ଭୈଷ'ସ ।
 ରଦି'ରହ' ସଂଶ୍ଳେଷ'ସ'ଧୈ' ଦସି' ଘଟ' ଧୈ'ନ୍ ॥ ୧୨

त्वय्येव त्वन्मुखं हृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।

इयत्येव भिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ॥ २३ ॥

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्दोर्विकथनैः ।

पद्मेपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ।

सुन्दरिणीं ललाटे क्विं सुन्दरिणीं ॥ २३ ॥

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुष्ठु विभ्रान्तलोचनं ।

तत्तु मुखश्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

गण'रिः वङ्ग' रण'र'विण' ल ।
 श्लोक'लोग' रण'र'रुण' श्लोक'र' ५ ।
 श्लोक'र' व'रि'र'र' रण'र' र'र' ५ ।
 र'र'र' र'र' र' र'र'र'र'र' ॥ ५०

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखन्त्वन्मुखाशया ।
 इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

लुण'र' श्लोक' र'र'र' र'र'र'र' ५ ।
 र'र' र'र'र' श्लोक' र'र'र' र'र'र'र' ५ ।
 र'र'र'र' र'र' र'र'र'र'र' ५ ।
 र'र' र'र' र'र'र'र'र'र'र' ५ ।

किम्पद्यन्तर्भ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुख ।
 मम दोलायते चित्तमितीर्थ संशयोपमा ॥२६॥

र'र'र' र'र'र' र'र'र'र' ५ ।
 श्लोक' र'र'र' र'र' र'र'र' ५ ।

वदममिं शेषसं किं क्वमवमं मयि ।

नेममं रदं किं प्रोक्तं मयि ॥ २७

न पद्मस्येन्दुनिग्राहस्येन्दुलजाकरी द्युतिः ।

अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ममं सुदमं सुदं ममं ममं रदं ।

ममं ममं ममं ममं ममं ममं ।

ममं ममं ममं ममं ममं ममं ।

नेममं रदं किं ममं ममं ममं ॥ २८

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।

अम्मोजमिथ ते धक्कमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

ममं ममं ममं ममं ममं ममं ।

ममं ममं ममं ममं ममं ममं ।

ममं ममं ममं ममं ममं ममं ।

नेममं रदं किं ममं ममं ममं ॥ २९

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

सकुन्दस्य वरिष्ठं यथा वरिष्ठं सुते सुते ।

सकृत्कृतं नयेत् कुं विद्वत् न ।

सुते कल्पे सुते नयेत् सुते नयेत् ।

वरिष्ठं सुते सुते नयेत् ॥ २८

पद्मं बहुजम्बुद्वयः क्षयी ताम्प्यान्तषाननम् ।

समानमपि सौत्सेकमिति निन्दोपमा मता ॥३०॥

सुते सुते सते सुते सुते ।

सुते सुते सते सुते सुते ।

सकुन्दस्य वरिष्ठं यथा वरिष्ठं सुते सुते ।

वरिष्ठं सुते सुते सुते सुते ॥ ३०

ब्रह्मणोऽप्युद्भवः पद्मम्बुद्वयः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमेप्यसौ ॥३१॥

སྒྲུ་ས་ མངས་པ་དག་ཀྱང་སྐྱེད།
 རྒྱ་བ་ བདེ་འགྲུང་གུའག་ན་ འཛིན།
 དེ་དག་ ཁྱོད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 དེ་ རྗེ་ བསྐྱབས་པའི་དཔེར་ བརྗོད་ དོ། ॥ ३१

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དཀ་ལྷན་ ཉམ་ སྐྱོན་ འགྲུར་ ཡང་།
 ཁྱོད་གདོང་ རྒྱ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 བརྗོད་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད།
 ཉམ་པ་ བརྗོད་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རྗེ་ག ॥ ३२

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བསྐྱ་པ་ དང་ སྐྱོན་རྒྱ་ དང་།
 ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ བསྐྱབས་པེ་ ཉི།

सकं कुतं कस्य चरं नमस्य तेषां च ।

ने किं नमस्य चरिं नयेत् सहेतुं नो ॥ २२

न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम् ।

कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैश्च सा ॥३५॥

द्विंशत्सु क्विंशत्सु च ।

त्रिंशत्सु चिंशत्सु च ।

चतुर्विंशत्सु च पञ्चविंशत्सु च ।

षड्विंशत्सु च सप्तविंशत्सु च ॥ २१

मृगोक्षणाङ्गुत्त्वद्वत्प्रमृगोपैवांकितः शशी ।

तथापि सम एवास्मै नोत्कर्षीति अद्वयमा ॥३५॥

त्रिंशत्सु चिंशत्सु च ।

चतुर्विंशत्सु च पञ्चविंशत्सु च ।

षड्विंशत्सु च सप्तविंशत्सु च ।

अष्टविंशत्सु च नवविंशत्सु च ॥ २२

न पद्मं मुक्कमेवेदं न भृङ्गौ चञ्चुपी[12a] इमे ।
इति यिस्यष्टसाहस्रयास्तत्वाख्यानोपमैव सा ॥३६॥

अरेरेः पदेनं छेदं यद्गुं छेदं ।
अरेरेणं यद्गुं यं यं छेदं छेदं ।
अरेरेः यं यं यं यं यं यं यं ।
अरेरेः यं यं यं यं यं यं यं ॥ ३६

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य सुखन्तव ।
आत्मनेशमयस्तुत्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

अरेरेः यं यं यं यं यं यं ।
अरेरेः यं यं यं यं यं यं ।
अरेरेः यं यं यं यं यं यं ।
अरेरेः यं यं यं यं यं यं ॥ ३७

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव कवित् ।
स्वदाननं विभातोति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

वसुं खड्गस्य वरिं श्विनस्ये गुरु ।
 नमाम् जैत्राय नमः तु वसुस्य वं वरिण ।
 त्रिंशुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः ।
 श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः ॥ ३८

इन्दुविम्बादिव विषं चन्द्रनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३९॥

श्विनस्ये वसुस्य वं वरिणं नमः ।
 वसुस्य वं वरिणं नमः ।
 वसुस्य वं वरिणं नमः ।
 वसुस्य वं वरिणं नमः ॥

चन्द्रनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशयः * प्रथयन्ती बहूपमा ॥४०॥

वसुस्य वं वरिणं नमः ।
 वसुस्य वं वरिणं नमः ।

རེག་པ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱུང་བར་ དག །
གསལ་བར་བྱེད་པ་ མང་བའི་དཔེ །། ༧༠

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལྷ་ས་མ་ བྱོད་ གདོང་ བཞིན་རས་ བློ་
རྒྱ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན་ །
བསྐྱེད་ ཉང་ནས་ སྐྱུང་བ་ བཞིན་ །
ཞེས་པ་ འདི་ བློ་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ །། ༧༡

पुष्पयातप इवाह्वीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यधाल्लक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་ཀྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་ས་ ཡིས་ །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན་ །
རྣམ་པར་གཞོན་པས་ བྱོད་ལ་ དབལ་ །
འཛོན་ ཞེས་ དེ་བུ་ སྐྱུང་བའི་དཔེ །། ༧༢

वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।
एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

वाचः५८ः एवादेवं छेदं गृह्यते किं ।
वाचः५९ः एवादेवं छेदं नृणां च ।
एवादेवं दमेः श्रेः वलेकं च किं ।
वाचिवाः ६०ः दूःखसः देः कसः मच्छेदः ॥ ८३

त्वदाननमधोराक्षमाविर्दानदीधिति ।
भ्रमद्भ्रमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

छेदं वादेवं शीवां किं शीवदं विदं ।
शोषो देवं चैवं एव वाचसाव ।
नृणां श्रेयसः सुदं च वाचो ह्येवं किं ।
वाचसः एवा वाचसः शक्यं वलेकं शक्यं ॥ ८४

नलिन्या इव तन्वद्भ्रथास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।
मया मधुव्रतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

བཟླ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་སྐྱ་མ །

བཟླ་ བཞིན་དུ་ དེ་ཡི་ བཞོང་ །

སྐྱང་ཚི་ སྐྱོད་པས་ བཞིན་དུ་ བློ །

བདག་གཤམ་ འཕྱངས་ཤིང་ འཕྱངས་ཤིང་ ཚེས ། ༧༥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।

साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངེས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉིང་བཞོད་ནས །

དེ་ཡི་ཚོས་ མཐུན་ རབ་བཞོད་པ །

མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་པ་ཅན །

ཟླ་པོ་ དངེས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར ། ༧༦

नैकोपि त्वाद्दृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।

ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

སྐྱལ་པོ་ནམས་ བློ་སྐྱུང་ ཀྱང་ །

ད་ལྟ་ རྩོད་ འདྲ་ བཞིག་ ཀྱང་ མེད །

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀྱང་འབྱུང་ནི།
གཉིས་པ་ རེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན། ॥ ༧༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यद्ब्रुवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི།
ཚོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱས་ནས།
གང་ ལྷས་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག།
སྤོར་བའི་དག་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར། ॥ ༧༨

दिवो जागर्ति रक्षायै पुलोमारिर्भुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

སུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མཐོ་རིས་ དང་།
བྱོད་ནི་ ས་སྤང་ མེལ་ཚོ་བྱེད།
དེ་ཡིས་ དེགས་ལྷན་ ལྷ་མིན་ དང་།
བྱོད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛོམས། ॥ ༧༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धाम्ना सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।
राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

शुभ्रं चो बहोसं वसं ह्वं च नृन् ।
मञ्जुं मुनिं मुनिं किं किं स नृन् ।
मन्त्रं वसं शुभ्रं चो ह्वं चो मुनिं ।
तेसं च नृन् किं शुभ्रं चो नृन् ॥ ५०

न लिङ्गवचने भिन्ने न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्देशो न धीमतां ॥५१॥

शुभ्रं चो बहोसं वसं ह्वं च नृन् ।
मञ्जुं मुनिं मुनिं किं किं स नृन् ।
मन्त्रं वसं शुभ्रं चो ह्वं चो मुनिं ।
तेसं च नृन् किं शुभ्रं चो नृन् ॥ ५१

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तव्येषा स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवाजिता ॥५२॥

མ་མིང་ འདི་འགྲོ་ ལུང་མེད་ བཞིན། །
 ལུང་མེད་ འདི་ ལྷ་ ལྷེས་པ་ བཞིན། །
 བདག་གི་ ལོགས་ འདི་ ལྷོག་རྣམས་ བཞིན། །
 རིག་པ་ རྣམས་ བསྐྱབས་ རོར་བཞིན་ཅོ། ། ༡༢

भवानिव महीपाल देवराजो विराजते ।
 अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྦྱང་བ་ ཁྱོད་ བཞིན་དུ། །
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ རྣམ་པར་མཛོེས། །
 ཚ་ཟེར་ཅན་གྱི་ རྣམ་པ་ལ། །
 མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་རྣམ། ། ༡༢

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च कच्चिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞེས་པ་ དེ་ལྷ་བྱ་ ལ་སོགས། །
 ལྷལ་བཟང་ རྣམ་ལང་ གཏོང་མིན་ཉིད། །

सुते वः रमा रः रमा रः रमा ।

सुते वः रमा रः रमा रः ॥ १२ ॥

हंसीव धवलश्चन्द्रः सरांसीवामलं नभः ।

भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५५॥

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ॥ १३ ॥

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारणं त्वत्र चिन्त्यताम् ।

इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ।

रः रः रः रः रः रः रः ॥ १७ ॥

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।
प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་པར་གསལ། །
རབ་གསལ་གཞུགས་ཀྱི་ལྷ་པོ་དང་། །
གཉེན་པོ་དང་ཉི་དག་ལྷ་དང་། །
སོ་སོར་རྟོག་དང་འགལ་དང་འདྲ། ॥ ५७

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।
प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བལྟ་བཅས་དང་ཉི་བསྐྱེད་བ་དང་། །
རིགས་མཐུན་རྗེས་སྤྲོ་སྤྲོ་བ་དང་། །
གཞུགས་བརྟན་དང་ཉི་སོ་སོར་སྐྱེཤ། །
གཞུགས་མཚུངས་མཉམ་དང་ཡང་དག་འདྲལ། ॥

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।
कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་སྤྱོད་སྤྱོད་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་ཉིད།
 དམན་དང་ཚུང་ཟེད་དམན་སྤྱོད་སྤྱོད་དང་།
 རབ་དུ་སྤྱོད་དང་སོ་སོར་བསྐྱོད། ॥ ༥༦

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥
 རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྤྱོད་དག་དང་།
 གང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་ཚོར།
 འདུ་མང་པོ་ཡི་ཚོར་སྤྱོད་དང་།
 རི་བོར་མཚན་མའི་གདོང་ཅན་སྤྱོད་སྤྱོད་ ॥ ༦༠

स्पर्धते जयति द्वेषि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འགྲན་དང་སྤྱོད་དང་སྤྱོད་དང་སྤྱོད་དང་།
 འཁྲོ་དང་མི་མཐུན་སྤྱོད་སྤྱོད་དང་།

अश्व'स' द' ३' अशु'स' द' ।

श्ल'अशेष'स'सु' द' श्ल'र'स' द' ॥ ७१

विडम्बयति संरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।

तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ठ'अरु'स' द' अशेष'स' द' ।

श्ल'र' द' श्ल'अशेष'स'सु' द' ।

र'अ' श्ल'अ'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ।

र'अ' श्ल'अ'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ॥ ७२

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]।4a]धिरोहति ।

तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

र'द' अशेष'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ।

र'द' अशेष'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ।

र'अ' श्ल'अ'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ।

र'अ' श्ल'अ'स'सु' द' अशेष'स'सु' द' ॥ ७३

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिनः ॥६४॥

रे'यी'ङ्गेष'अर्णो' ङ्गेष'स्य'अङ्गि' ।

रे'यी'ए'ङ्ग'रे'अर्णो'ए'ङ्ग' ।

रे'यी'ङ्गेष'स्य'गु' उ'ए' ।

ङ्ग' क'अ' अ'ङ्ग'ए'ङ्ग' ए'ङ्ग' ॥ ७८

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

ए'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' ए'ङ्ग' ।

ए'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' ।

ए'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' ।

ए'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' अ'ङ्ग' ॥ ७९

अंगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिषः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་པའི་འཁྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ ལྷན་སྐྱོན་ །
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་འོད་ཟེང་ ཉི་ །
 མེ་ཏོག་ཏུ་གྱུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དབལ་ །
 ཁྱོད་ཀི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱི་ ། ༤༦

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुखे-दोर्ज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥६५॥

ཞེས་པ་ འདི་ཀི་ མ་བསྐྱུགས་ཏེ་ །
 ལྷ་མ་ བསྐྱུས་པའི་གཟུགས་ཅན་ལོ་ །
 བཞིན་ ལྷ་ འཇུ་མ་པའི་ལྷ་འོད་ཅེས་ །
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱུས་ དང་ མ་བསྐྱུས་པའོ་ ། ༤༧

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 धियते मूर्ध्नि भूपालैर्भैवच्चरणपङ्कजं ॥६६॥

སོར་མོ་དམར་པའི་ འདབ་ཐེང་དང་ །
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན་ །

རྩོད་ཀྱི་ རབས་ཀྱི་ རྩེ་རྩེ་སྟེན་མི།
 ས་རྩོད་རྣམས་ཀྱི་ རྩེ་ལོར་ རེའོན། ॥ ༤༮

अंगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्मताम ।
 तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ རད་བ་ སོགས་ དང་།
 ཀང་བས་ བརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས།
 དེ་ལོས་ བཀས་སྲུ་ རྣམ་བཀོད་བ།
 རདྲི་མི་ མཐའ་དག་ བཟུགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༤༩

[14b] अकस्मादेव ते चण्डि स्फुरिताधरपल्लवम् ।
 मुखं मुक्ताहचो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरीः ॥७०॥

བཀྲུ་ས་མོ་ རྩོད་བྱུར་ ཉིད་དུ་མི།
 རྩོད་བཀོད་ མཚུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བཀོ།
 རུལ་གྱི་རྩེ་ཡི་ཐོག་བཀོ།
 དོག་བ་ རྩེ་མི་ རོད་ཅན་ རེའོན། ॥ ༧༠

मञ्जरीकृत्य घर्मांस्तु पल्लवीकृत्य चाधरं ।

नान्यथा कृतमत्रः पद्यतोऽप्यप्यरूपकं ॥७१॥

अदिसंकीं दुलं कुं देवां वरं सुख ।

सकुं यदं यदं अदिसंकीं सुखं गृ ।

वदिसंकीं सुखं वं वदिसंकीं सुखं ।

दे सुखं कं वदिसंकीं सुखं सुखं ॥ ७१ ॥

वलितम्बु गलद्धर्मजलमालोहितेक्षणम् ।

विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

वदिसंकीं अदिसंकीं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

दुलं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥ ७२ ॥

अविकृत्य मुखाङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।

आसीद्गमितमत्रेदमतोवयविरूपकम् ॥७३॥

འདིར་ནི་ བཞིང་བའི་ཆ་ཤས་དག།
 རྣམ་འགྲུར་ མ་བྱས་ བཞིང་བ་ཉིད།
 བརྒྱར་ བཞིང་བྱས་ དེས་ན་ འདི།
 ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ བཟུབས་ཅན་ལོ། ། ༧༢

मदपाटलगण्डेन रक्तनेत्रोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཚོས་མ་ མུས་བའི་ འཁྲར་ཚོས་དམར།
 མིག་གི་ ཞུངྱལ་ དམར་པོ་ཅན།
 བྱིད་ཀྱི་ བཞིང་གིས་ མྱ་བོ་ནི།
 འདི་ཡང་ དམར་བའི་ རང་བཞིན་ བྱས། ། ༧༣

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ मिदाकरो ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ བཞིང་སྟོབས་ཀྱི།
 ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ བསལ་བྱེད་བ།

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན།

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དད་བྱེད། ॥ 214

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभ्रुंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७३॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་པའི་ མེ་ཏོག་འབར།

གཡོ་པའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན།

ཞེས་བ་ མེ་ཏོག་ བྱང་བ་ དག།

འགྲོགས་པས་ལྷན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ 215

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं स्निग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तञ्चाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་ གཡེར་ རླེ་འོད་དང་།

སྐྱུ་པའི་ མིག་གི་ བྱུ་རྒྱལ་ཅན།

རླེ་འོད་ བྱུ་རྒྱལ་ མི་འོས་པས།

འོས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ 216

དོན

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।
रूपकं विषमं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

७८७
 यङ्'लम'उङ्'मङ्गुम' यङ्'लम' ङ्गुम ।
 मङ्गुम'गुम' मङ्गुम'सु'म'गुम'य ।
 मङ्गुम' ङ्गुम' ङ्गुम'य ।
 मङ्गुम'उङ्' मङ्गुम'य' यङ्'ङ्' दमे ॥ ७८

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।
नर्तिते भ्रूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

सु'म'य' म'म'ङ्गुम'य' दमे'ङ्गुम' ।
 मङ्गुम'य' मङ्गुम'य' म'गुम'य' ।
 मङ्गुम' मङ्गुम' मङ्गुम'य' मङ्गुम'य' ।
 मङ्गुम'ङ्गुम' मङ्गुम'य' मङ्गुम'य' ॥ ७९

हरिपादः शिरोलम्बनजहुकन्याजलांशुकः ।
जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥ •

རྩ་རྒྱུ་ལྷ་མེད་ཅུ་གོ་ས་ ཉི །
 འཕྲོག་བྱེད་ ཀླང་བའི་ཕྱིར་ལྷན་པ །
 ལྷ་མེད་ རོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི །
 དགའ་ལྷོན་རྒྱལ་མཚན་ རྒྱལ་གྱུར་ཅིག །། ༥༠

विशेषणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।
 पादै तदर्पणादेितत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥
 བའ་ཞིག་ རྒྱད་བར་ཚོགས་པ་ཡི །
 བཞུགས་ཀྱི་རྒྱལ་མཚན་ འདི་འདྲ་བ །
 དེ་ནི་ ཀླང་པ་ ལ་ བཀོད་ དེ །
 རྒྱད་བར་དང་བཅས་བཞུགས་ཅན་ནི །། ༥༡

न मील्यति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।
 त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यति ॥८२॥

བླ་ནམས་ནི་ མི་ལྷན་ ཞིང་ །
 ཉམ་མཁའ་ལ་ ཡང་ མི་འགོ་བ །

ལྷོད་གཏོང་ལྷ་བས་ བདག་གི་ནི །
 ལྷོག་ལྷས་ འཕྲོག་བ་ ཉིད་དུ་ བལྟ ॥ ༤༩

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धत्वात् रूपकं ॥८३॥

ལྷ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །
 བཞན་ ལྷི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིར་ །
 ཡང་དག་ བལྟན་ ཉི་ ཉི་ ཡི་ ལྷིར་ །
 འགལ་བ་ ཞེས་བུའི་ གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ༤༩

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पपादपः ॥८४॥

ལྷོད་ནི་ ཟབ་བས་ལྷ་མཚོ་དང་ །
 བལྲིང་བ་ ཉིད་ ལྷིས་ རི་བོ་ ཡིན་ །
 འདྲིག་ཉིན་ ལྷས་ལ་ འདྲོད་བ་ནི །
 ལྷིར་ ལྷིར་ དཔག་ བསམ་ཀང་འཕྲུང་ངོ་ ॥ ༤༠

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।
कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

२६६ ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
शुद्धिः ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥

राजहंसापभोगार्हं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।
सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति श्लिष्टरूपकं ॥८६॥

श्लिष्टः ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥
३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥ ३३० ॥

इष्टं साधर्म्यवैधर्म्यदर्शनाद्गौणमुख्ययोः ।
उपमाव्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་དང་ནི་སལ་བ་ལ།

ཚོས་སྐྱུན་ཚོས་མི་སྐྱུན་སྐྱོང་བས།

དཔེ་དང་ལྗོངས་བ་ཅན་ཞེས་པའི།

གཟུགས་ཅན་རྣམས་བ་གཉིས་འདོད་དཔེར། ॥ ८७

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमाः ।

सन्नद्धोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

ལྗོས་པས་ཀུན་ཏུ་དམར་བ་ཡིས།

བཀའ་བ་བཞིན་གྱི་རྒྱ་བ་འདི།

འཆར་ཀའི་དམར་བ་སུ་ཚོགས་པའི།

རྒྱ་བ་ལ་ནི་རབ་ཏུ་འབྱན། ॥ ८८

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।

असमग्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་རྒྱ་བ་འཕྱུངས།

བདག་གིས་ཁྱོད་གཤོང་རྒྱ་བ་འཕྱུངས།

འདི་མི་ བའ་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །
 འདི་མི་ ཏྲུ་ཏུ་ དཀྱིལ་འཁོར་ རྫོགས། ॥ ༧༧

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
 न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

བརྗེས་མ་ རྩོད་ བའོང་ རྫོགས་མི། །
 འདི་ལྟར་ བཞུན་ དག་ བའུང་ཕྱིད་པས། །
 རྫོགས་ཉིད་ཏུ་ བརྗེད་མིན་ ཞེས། །
 དེ་མི་ སྐད་པའི་ བརྗེས་མ་ཅན་ལོ། ॥ ༧༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।
 भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

བའུམ་མོ་ རྩོད་ བའོང་ རྫོགས་ ཀྱང་ །
 བརྗེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྲིག་པ། །
 བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ རྫོགས། །
 ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ བརྗེས་མ་ཅན་ལོ། ॥ ༧༡

मुखपङ्कजरङ्गेस्मिन् भ्रूलतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति स्म्यं रूपकरूपकं ॥६२॥

छिन्'गदे' अदम'क्षि' र'र' अदि' ।
क्षि'भ'स'र' अ'सि'य'द' ग'र'भा'म'क'म' ।
र'य'क्षि'ग' द'ग'द'स' ग'र'सु'द'र' ।
वे'स'स' ग'ह'ग'स'उ'द'गु'ग'ह'ग'स'उ'द ॥ ७३

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
पतानि केसराण्येव नैता दन्तार्चिषस्तव ॥६३॥

अदि'के' ग'दे'स'क' अदि' य'ह' ।
अदि'द'ग' क्षि'ग'क्षि' अदि' सु'द'स' ।
अदि' क'स'स' ग'स'र' छि'द' य'क' अदि' ।
छि'द'गु' स'य' अ'द'स'र' क्षि'क ॥ ७३

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भावितगुणोत्कर्षन्तत्त्वापह्वयरूपकं ॥६४॥

गदं लसोमसं वदं वल्लोमं ॥
 वदं लसोमसं गदुमसं वदं ॥
 यदं नदं वदं लसोमसं गदं वदं ॥
 वदं नदं वल्लोमं वदं गदं ॥ ९७

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शितं धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥६५॥
 गदुमसं वदं नदं यदं वदं नदं वदं ॥
 लसोमं यदं नदं यदं नदं वदं ॥
 वल्लोमं वदं वदं वदं वदं वदं ॥
 वदं वदं वदं वदं वदं वदं ॥ ९८

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना ।
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥६६॥

वदं वदं वदं वदं वदं ॥
 वदं वदं वदं वदं वदं ॥

गण्णं दण्णं गुण्णं सण्णं ।
 देवैर्गणस्य सुदुःखैर्दुःखैर् ॥ ७९

पवनो दक्षिणः पर्णं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
 नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

छिन्धि ह्यस्य शीतं शीतं शीतं शीतं ।
 अथवा शीतं शीतं शीतं शीतं ।
 सुदुःखैर्गणस्य सुदुःखैर्गणस्य ।
 शीतं शीतं शीतं शीतं ॥ ७७

चरन्ति चतुरम्भोधिवेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
 चक्रवालाद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

सुदुःखैर्गणस्य सुदुःखैर्गणस्य ।
 सुदुःखैर्गणस्य सुदुःखैर्गणस्य ।
 सुदुःखैर्गणस्य सुदुःखैर्गणस्य ।
 सुदुःखैर्गणस्य सुदुःखैर्गणस्य ॥ ७८

ཅན་ བྱལ་པ་ ལྷུང་པ་ ཡང་ །
 མཚོན་ལྷུང་ འབྲུམས་པ་ རྣམས་ ལའོ །། ༡༠༩

जलं जलधरोद्गीर्णकुलङ्कहशिखण्डिनां ।
 चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ལུ་འཛོན་ ལྷོས་ནི་ རབ་གཏོར་ལུ །
 ཁྲིམ་གྱི་ གུའྲུ་ལུ་ལྷུང་པའི་ ཚོགས་ །
 ལྷོག་གི་ཐལ་པ་ གཡོ་བ་ ཡང་ །
 མེ་ཏོག་གཟུ་ཅན་དག་གི་ དཔྱང་ །། ༡༠༩

त्वया कर्णोत्पलं कर्णं स्मरेणास्त्रं शरत्सने ।
 मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

ཁྲིཏྲ་གྱིས་ ལྷུང་ལ་ རྣ་བ་ལ །
 འདོད་པས་ མདའ་ བེ་ མདའ་ལྷན་ལ །
 དས་ ཀྱང་ མེསས་ནི་ འཚི་བ་ ལ །
 གཟུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས །། ༡༠༥

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूनां रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

दगर श्लोकाः गुणैः किं तैर्दगर उक्त्वा ।

अथैव श्लोके देवैः सदा भवति ।

देवैः गुणैः कृपाः सदा कृपाः सदा कृपाः गुणैः ।

वृत्तं दगाः वरिं दगाः श्लोके दगाः ॥ १०७

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्वपूर्वव्यपेक्षिणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

वेदः श्लोकाः काशाः श्लोके देवैः कर्तुं ।

श्लोकाः श्लोकाः श्लोकाः ।

दगाः श्लोके दगाः श्लोके श्लोके ।

देवैः श्लोके दगाः श्लोके श्लोके ॥ १०८

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।

कर्शयन्ति तु धर्मस्य मास्तोद्धतशीकराः ॥१०८॥

ལྷོ་གྱིས་ མཚུ་བས་བའི་ཚུ་བྱིགས་ཅན།
 ལྷོ་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ ཉི།
 ལ་བ་ལེ་པ་ འཕེལ་བར་བྱེད།
 ལྷོ་གྱི་ དག་ཉི་ སེལ་བར་བྱེད། ॥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ཉི་ ལྷོ་གྱི་ཚོག་དག་ དང་།
 ལ་བ་ལེ་པའི་ ཚོག་དག་གིས།
 ལུ་བ་ འགལ་བར་ལྷན་པ་ དེ།
 འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते वाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཚུ་འདྲིན་ དག་གི་ སྤོང་བ་ འདིས།
 ལྷོ་གས་རྣམས་ཀྱི་ ཉི་ གོ་སྐབས་ འཕྲོག།

क्षरन्सं यीं किं क्लेशं क्लेशं अक्षिं ।
 देव्यन्तं वदन्मन्त्रिणं क्लेशं अक्षिं ॥ ११०

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकात्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

वान्प्रियं क्लेशं अक्षिं अक्षिं ।
 वृत्तं वक्षिणं क्लेशं वक्षिणं अक्षिं ।
 वृत्तं क्लेशं क्लेशं क्लेशं वक्षिणं ।
 देव्यन्तं वदन्मन्त्रिणं वक्षिणं ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

द्वितीयं वक्षिणं वक्षिणं अक्षिं ।
 क्लेशं वक्षिणं क्लेशं वक्षिणं ।
 क्लेशं किं वक्षिणं क्लेशं वक्षिणं ।
 क्लेशं क्लेशं क्लेशं वक्षिणं ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिज्ञानामभ्राणां दन्तिनामपि ।

भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति श्लिष्टार्थदीपकं ॥११३॥

२२२० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ११३ ॥

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।

विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विवक्षणीः ॥११४॥

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।

३३३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ११४ ॥

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

वासवः सुतः श्रीः वै वासवः सुतः ।
 वै वासवः सुतः वै वासवः सुतः ।
 वासवः वासवः सुतः सुतः वासवः ।
 सुतः वासवः सुतः सुतः सुतः ॥ ११४

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

वासवः वै वासवः सुतः ।
 वासवः सुतः सुतः सुतः ।
 वासवः सुतः सुतः सुतः ।
 वासवः सुतः सुतः सुतः ॥ ११७

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्गलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः ।
 सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः ।

རྒྱ་སྤྱིན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ རྒྱུས་ དེང་ །
 ཉ་རྒྱུང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྡན་བྱེད་ ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनैः ।
 विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिवं गतः ॥११८॥

ཀྱུན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ རྒྱོད་ །
 བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ །
 རྒྱོད་ཀྱི་དགུ་སྟེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །
 ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपस्त्रैकाल्यापेक्षया त्रिधा ।
 अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་བ་ བརྗོད་བ་ འགོག་བ་ ལྟེ་ །
 དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་བ་ གསུམ་ །
 ཅེ་སྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི་ །
 དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ལྷིར་ མཐའ་ཡས་ ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चभिः पुष्पैर्विश्वं व्यजयतेषुभिः ।

इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

सुखं भवेत्पुं क्विं सौन्दर्यं च ।

सदसं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

उसं च सौन्दर्यं सुखं च ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥ १२० ॥

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।

प्रवृत्तैवं यदाक्षिप्ता वृत्ताक्षेपस्तदीदृशः ॥१२१॥

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ।

सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं सुखं ॥ १२१ ॥

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।

किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

श्रुतं श्लेषात् स दमा उच्यते ।
 क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।
 अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं ।
 अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं ॥ २३३

स वर्तमानाश्चेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।
 कर्णं काचित्प्रियेणैवं चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।
 क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।
 अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।
 अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ॥ २३३

सत्यं ब्रवीमि न त्वस्मान्द्रष्टुं वल्लभ लस्यसे ।
 अन्यन्नुम्बनसंक्रान्तलाक्षारक्तेन चक्षुषा ॥१२४॥

अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।
 अत्रादौ च क्वचिद्व्यङ्ग्यं तु यद्वा ।

शुभ्रिगसःशुभ्रिगःदसः शिवाःशिसःके ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःसःदसुः शःदसः ॥ १३८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ॥ १३४

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।

यदि सत्यम्मृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ।

शुभ्रिगःशुभ्रिगः शस्रदःशुभ्रिगःशुभ्रिगः ॥ १३५

धर्माक्षिपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दवं ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

मादःश्रुतः देःश्रुतः अद्वैतःश्रुतः श्रुतः ।
देः श्रुतः अमातःश्रुतःश्रुतः श्रुतः वै ॥ १२७
श्रुतःश्रुतः श्रुतः अद्वैतःश्रुतः श्रुतः ।
अमातःश्रुतः अद्वैतःश्रुतः श्रुतः अमातःश्रुतः ।

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

देःश्रुतः अद्वैतःश्रुतःश्रुतः श्रुतः ।
अमातःश्रुतः अद्वैतःश्रुतः श्रुतःश्रुतः ।
देःश्रुतः अद्वैतःश्रुतः श्रुतःश्रुतः ।
अमातःश्रुतःश्रुतःश्रुतः श्रुतःश्रुतः ॥ १२८

धर्म्याक्षिपोयमाक्षितो धर्मोधर्मं प्रभाह्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्चर्यं विवक्षता ॥१२९॥

१- ॥ १३० ॥
 २- ॥ १३१ ॥
 ३- ॥ १३२ ॥
 ४- ॥ १३३ ॥

चञ्चुषी [19a] तव रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 भ्रुवौ च भ्रुवे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥

१- ॥ १३१ ॥
 २- ॥ १३२ ॥
 ३- ॥ १३३ ॥

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पट्टीयसा ॥१३१॥

१- ॥ १३२ ॥
 २- ॥ १३३ ॥

ལྷ་ འཇིགས་པ་ ཡི་ནི་ ལྷ་ཡི་གཙོ་ །
 ལྷ་ རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་གྱེད་པ་ ॥ 232

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
 दृष्टाश्च फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཚོ་འགོ་ དག་ ཉི་ རིང་ན་ གནས་ །
 ལྷ་འཇིག་ བགོད་ལྷན་ འདི་ནི་ འོངས་ །
 ཉི་ལྷ་པ་ ཡང་ ལྷས་པར་ མཐོང་ །
 བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག ། 233

कार्याक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
 तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་ལྷ་ ལྷ་འཇིག་ བགོད་པ་ ཉི་ །
 མི་མཐོང་པ་ དག་ ཉེས་ བགོད་ གས་ །
 འགྲས་ལྷ་ འཇིག་ བཟོག་པའི་ལྷོད་ །
 དེ་ནི་ འགྲས་ལྷ་ འགོག་པ་འོ་ ॥ 233

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

गल'ङ' ग'वे'ग'स'ङ' ग'वे'ग'स'स'र' षड्ङ ।

स्रि'ङ'गु' व'स्रि'ङ'स'स' व'द'ग'ल' ङे ।

ग'दु'द'व' लु'ङ'द'द' अ'गु'द'सि'अ'गु'द' ।

अ'द'ल' स्रि'ङ'ङ' द'ग'स'सि'अ'क'ल ॥ १३८

इत्यनुज्ञामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।

मरणं सूत्रयन्त्येव सोऽनुज्ञाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

जे'स'व' अ'क'ि'व' ग'स'ल'सु'द'व'स' ।

डे'स'ग'क'द' ड'द'गु' ङ'ङ'स' ङे ।

ष'ड'अ'व'द'ि' व'स्रि'ङ'व' अ'स्रि'ग'सु'द'व' ।

अ'द'ि'ङ' डे'स'ग'क'द' अ'स्रि'ग'व'द' व'ड्ङ ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणसं[19b]देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥

རྗེ་ཉི་མང་པོ་ རྗེ་ འགྲུར་ ཞིང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དགོ །
 བདག་སྲོག་ལ་ ཡང་ བྱེ་ཚོམ་མེད །
 འོན་ཀྱང་ མཇུག་པོ་ འགྲོ་མི་བྱུ ། ॥ १३५

प्रत्याचक्ष्णया हेतून् प्रिययात्राविवन्धिनः ।
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇུག་པོ་ འགྲོ་བར་ སྲོལ་བ་ ཡི །
 བྱུ་ རྣམས་ དག་ ཉི་ རབ་བཤད་ནས །
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ ཉི་ དེ་ འགྲོག་པ །
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགྲོག་པ་འོ ། ॥ १३७

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ཉི་ བསོན་དེ་ སྲོལ་ས་དང་ལྡན །
 རྗེ་བྱི་ བསམ་པ་ སྲོལ་ས་ལྡན་མིན །

अहंरंषो वापेवास' सस' वज्जुवास'ववास'सस ।

रंर'शी' वाक्स'ज्ञवस' श्लो'स'व' ववास ॥ १३८

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।

प्रियप्रयाणं रुन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३९॥

माद'श्रु'र' रंर'र'र'र' ववास'व्वा'व'सस ।

अहंरंषो'र' वश्रु'र'व' रंशो'वा'श्रु'र'र' ।

व'श्रु'वा'व'र'र'र' रं'वा' श्रु'र'व' ।

रंर'र'र' व'श्रु'वा'व'स' रंशो'वा'व'र' ॥ १३९

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।

ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

अहंरंषो' वावा'र' वा'पेवास'व' वज्जु' ।

श्रु'र'श्रु' व'वा'र'र' श्रु'वा'श्रु'र'र' ।

माद'र' श्रु'र'र' वा'पेवास'व' रं' ।

वद'वा' श्रु'र' श्रु'र'र' श्रु'र'श्रु'र'र' ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।

स्वावस्थां सूत्रयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे'ङ्ग'न' शै'स'व'ङ्गे'न' 'अ'स' श्रु'स' 'स' 'द' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ॥ १४१ ॥

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।

अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ।

स'द' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' 'स' ॥ १४२ ॥

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिम्नया ॥१४३॥

गणःश्रुतः खड्गःवदिः दण्डःश्रुतःखण्डः ।
 खड्गःवदिः वक्रोदःवःदण्डोवःश्रुतःवः ।
 कौशःश्रुतः यःशोः श्रुतःदण्डःश्रुतः ।
 दण्डःश्रुतः श्रुतः श्रुतः दण्डोवःवदिः ॥ १२३

गन्ता चेद्गच्छतूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।
 आर्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

गणःश्रुतः गणःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतः ।
 श्रुतःश्रुतः श्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतः ।
 वक्रोदःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतः ।
 श्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतः ॥ १२४

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिबिध्यते ।
 प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

गणःश्रुतः दण्डःश्रुतः खण्डःश्रुतःश्रुतः ।
 कौशःश्रुतः श्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतःश्रुतः ।

མཇེའ་བའི་བཟོད་པ་ འགོག་པ་ འདི།

གྲོས་ཉིད་ ཀྱིས་ནི་ འགོག་པ་འོ།། ༡༥༣

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।

निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ བྱོད་དགུས་ བཟོད་ འདོད་ཀྱང་།

བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚོག་།

མ་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི།

བྱུང་བར་ བྱུང་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད།། ༡༥༦

यत्नाक्षेपस्त यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।

विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས།།

འབས་བྱ་ ལྷན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས།།

དོན་མེད་ ཉི་བར་ བསྐྱེད་པའི་ ལྷིར།།

དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པའོ།། ༡༥༧

क्षणदर्शनविघ्नाय पश्मस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्त्वं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

ऋतं उवाच वदं वीर्यं वीर्यं वीर्यं ।

ऋतं वदं वदं वदं वदं ।

ऋतं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं ॥ १४८

अयं परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निविध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं ॥ १४९

सहिष्ये विरहं नाथ देह्यदृश्याञ्जनं मम ।

यदक्तनेत्राङ्गन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བརྗོད་པར་ བསྐྱེ། །
 བཀང་གེས་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ལ་ནི། །
 འདོད་པས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི། །
 མཐོང་མིན་ མིག་སྐྱུན་ བདག་ལ་ ལྷོལ། ॥ 270

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
 पत्युः प्रस्थानमित्याहुरुपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཚོ་བའི་ཐབས་ ཉི་ དཀའ་བ་དག། །
 ཉི་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི། །
 འགྲོ་བ་ འགོག་པར་བྱེད་པའི་ ལྷིང་། །
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགོག་པར་བརྗོད། ॥ 271

प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखान् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ བྱོད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཚོག། །
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་པ་ རེས་པར་བྱུང་། །

अहंरं वं दसकं वं सिंदं ग्रीषं ५ ।
 अं सुिं कं कं यदं वदमं लं उ ॥ १५३ ॥

रोषाक्षेपोयमुद्रिकस्नेहनिर्यन्त्रणात्मया ।
 संरन्धया प्रियारन्धं प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

अहंरं वं कृषं वसं अं वङ्गवसं वरि ।
 वदमं उिंदं सिं वसं अहंरं वं यी ।
 अं यो वं उं कं वं वङ्गं वं वं वदं ।
 अं रीं कं सिं वसं अं यो वं वं ॥ १५३ ॥

नाघ्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।
 त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णञ्जीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

अं वङ्गवसं सुं अं रीं कं वं वं ।
 अं सुं वं कं वं अं वं वं वं ।
 सिंदं ग्रीं दमं यीं कं उिंदं वु ।
 अं वं वं सुं कं वं वं वं वं ॥ १५४ ॥

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।

व्यावर्त्य कर्म तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

श्रीरुद्रैः वरुणैः सृष्टिं प्रकृतम् ।

देवैः देवैः सृष्टिं प्रकृतम् ।

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ।

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ॥ १५५ ॥

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचितं किंचिद्भूतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ।

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ।

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ।

सृष्टिं प्रकृतम् सृष्टिं प्रकृतम् ॥ १५६ ॥

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अथाज्जुनादेव्यावृत्तिर्दर्शितेह गतायुषा ॥१५७॥

गणः सुतः अदितः किं कर्त्तव्यम् ।
 तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ॥ ३५७

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतस्रुपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

उदितः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ॥ ३५८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्नवित्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टघनजातिना ॥१५९॥

अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।
 अत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च तत्रैव च ।

मम-विम- श्रे-कर्म- क्लम-पुन-य ।

अदि-कि- श्रे-कर्म- अमोम-य-वे ॥ १४७

अमृतात्मनि पद्मानां द्वेष्टरि स्निग्धतारके ।

मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

मदुन-कैरि- मम- श्रि- म-य- ।

म- वि- म-य-य- म-य- ।

मि- म-य- क्ल-य- अदि- अ-य- म-वि- ।

क्ल-य- म-य-य-य- उ-वि- म-य- ॥ १६०

इति मुख्येन्दुराक्षितो गुणान्गौणेन्दुवर्त्तिनः ।

तत्समानदर्शयित्वेति श्लिष्टाक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

य-य-य-य-य-य-य-य- ।

ये- म-य-य-य-य-य-य-य-य- ।

म-य-य-य-य-य-य-य-य- ।

य-य-य-य-य-य-य-य- ॥ १६१

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरुदीर्णस्य हविर्भु[21b]जः ॥१६२॥

प्रसन्नः उदः सन्नः । अतः सुदः सुदः ॥

कृष्णः सन्नः कृष्णः सन्नः । अतः सन्नः ।

अतः सन्नः सन्नः ॥ १६३ ॥

कृष्णः सन्नः सन्नः । अतः सन्नः ॥ १६३ ॥

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोयं निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

अतः सुदः सुदः सन्नः । अतः सन्नः ।

अतः सन्नः सन्नः सन्नः । अतः सन्नः ।

अतः सन्नः सन्नः । अतः सन्नः ॥

अतः सन्नः सन्नः । अतः सन्नः ॥ १६३ ॥

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं ददासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्धनमर्थिनः ॥१६४॥

ལྷོན་པ་པོ་ ཞེས་ བམ་ཡང་ ཉི །
 མི་དབང་ ཁྱོད་ལ་ མི་བཟོད་དེ །
 བང་ལྷིར་ སློང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ལོར །
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན ། १२८

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི །
 ལྷོས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ །
 ལྷོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ བམ་པར་རྟོག །
 བཞུན་པ་ དག་ ཀྱང་ དབལ་བར་བྱས ། १२९

श्लेषः सोर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः । १६६॥

བང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཞོད་ནས །
 དེ་ལི་ ལྷོབ་ཉིད་ བམ་པ་ཅན །

དངོས་པོ་ བཞན་དག་ འགོད་པ་དེ །

དོན་བཞན་ བཞོད་པར་ འཇམ་པར་བྱ །། ༡༤༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्लेषाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ བཞན་ དང་ །

སྐྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འཇམ་བྱེད་ དང་ འཇམ་པའི་བདག །

འཇམ་དང་ མི་འཇམ་ བརྗོད་པ་འོ །། ༡༥༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्त्यै निदर्शयति ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྟོགས །

སྐྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་ཏུ་མཚོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ བསལ་བྱའི་སྤྱིར །

དཔེར་ བརྗོད་ སྤོང་བ་ བསྟན་པར་བྱ །། ༡༥༡

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घयते ॥१६६॥

लेशास'ल्लव' र'मो'व'रु'स'स'गु'स'ी'ग ।

श्र'स' र'द'की' ल्ल'व' य'द' ।

रु'व'व'र'गु'र'व' श्र'द'य' ल्ल'स' ।

द'स'व'य' वी' सु'य'स' र'मो'द'स ॥ १७०

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ल्ल'र'द'व' र'द'र'ग' लु'स'उ'व' ग्री ।

य'द'स'सु'ग'दु'द'व' र'मो'ग'v'र'द'द' ।

ल्ल'व'व'र'स'स' ग्री'स' v'द'ग' व'व' ग'ग'स' ।

ग'र'व' ग्री' सु'ग'v'स'य' वी' ल्ल'द'दु'द' ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सत्त्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་ རྒྱུང་གིས་ ཉི །
 འཇིག་རྟེན་ དགའ་བ་ རྒྱུད་བར་བྱེད །
 རྒྱུ་ལྷོ་ལྷོ་ དང་ ཡང་དག་ལྷན །
 ཀྱན་གྱི་ རྒྱུང་སྐྱུག་ མ་ཡིན་ནམ ། १११

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
 अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥
 མཚན་མོར་བྱེད་ འདི་ རི་མ་ དང་ །
 ལྷན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་རྒྱུད །
 བཞིས་རྒྱུས་དབང་བོ་ རྒྱུན་ལྷན་ ཡང་ །
 བཞུན་དག་ རིས་སྐྱུ་འཇིན་བར་ནམ ། ११२

मधुपानकलात्कण्ठान्निर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।
 कटुर्भवति कर्णस्य कामिनां पापमीदृशम् ॥१७३॥

རྒྱུང་མི་ འཇུངས་བའི་ མགྲིན་ ལྷན་ ལས །
 རྒྱུང་བ་ རྒྱུང་བའི་ རྒྱུ་དག་ ཀྱང་ །

क्वं वरं कृपयं श्रुत्वा मन्त्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं ॥ १७३

अयं मम दहत्यङ्गमम्मोजदलसंस्तरः ।
 हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

कृष्णं च कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ॥ १७५

क्षिणोतु कामं शीतांशुः किं वसन्तो दुनोति मां ।
 मलिनाचरितं कर्म सुरभेर्नन्वसाम्प्रतम् ॥१७६॥

अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ।
 अर्चयेत्कृत्वा कृष्णं च शीघ्रं च ॥ १७६

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।
न हीन्दुगृहेषुग्रेषु सूर्यगृहो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गुःसुनःसुनः अरः शीमाःसुनः ।
सुनःसुनःसुनःसुनः सुनःसुनः ।
सुनःसुनः सुनःसुनः सुनःसुनः ।
सुनःसुनः सुनःसुनः सुनःसुनः ॥ १७७ ॥

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।
तत्र यद्भेदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥१७८॥

सुनःसुनःसुनःसुनः सुनःसुनः ।
सुनःसुनः सुनःसुनः सुनःसुनः ।
सुनःसुनः सुनःसुनः सुनःसुनः ।
सुनःसुनः सुनःसुनः सुनःसुनः ॥ १७९ ॥

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।

गुणैस्तुल्योसि भेदस्तु वपुषैवेदशेन ते ॥१८०॥

वङ्गं दत्तं क्विपदिं वङ्गाङ्गिदं दत्तं ।
 लुप्तं वङ्गं क्षिप्रं यत्र दङ्गुक्षि ।
 त्रिदं दत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं ।
 त्रिदं लुप्तं त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं ॥ १७८

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।
 प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्त्तिनः ॥१७९॥

गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां ।
 गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां ।
 गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां ।
 गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां गङ्गायां ॥ १८०

अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।
 असावञ्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८१॥

त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं ।
 त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं त्रुत्तं ।

འདི་ནི་ མིག་སྒྲན་ དང་ མཚུངས་ལ།

ཁྱེད་ནི་ ལམ་གྱི་ མདོག་ཅན་ལོ། ༡༥༠

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।

काण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་སྤྱིར་ འདིར་ནི་ ལཱི་ག་ཡི།

འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ ལམ་གྱི་ དང་།

སེར་གོ་དལ་ནི་ བ་དད་ བསྟན།

འདི་ནི་ ལཱི་གའི་ རྗེས་པ་ཅན། ༡༥༡

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महासत्त्वसतेजसौ ।

इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

ཁྱེད་དང་ ལྷ་མཚོ་ ཏུ་བྱུ་རོ།

མཏུ་སྐྱུ་ ཏེ་ཇོ་ བཅས།

འདི་ཡིས་ ཁྱེད་ ལཱི་ས་ བ་དད་དེ།

དེ་ནི་ ལྷ་བདག་ ཁྱེད་མཁས་སོ། ༡༥༢

देःश्लिदःशुःसर्द्धेः वतसःवःयि ।
 सःमर्त्तिः सस्रदःदसः र्द्धेः श्लेदःशुदः ।
 यःमःरर्द्धेःकससः श्लिः श्लेदः श्लुदः श्लेदः ।
 श्लुदःसःतर्द्धेः श्लिदःवसःदसर्द्धे ॥ १८४

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोऽनुविधीयते ॥१८६॥

श्लेदःशुदः र्द्धेःशुदः सःश्लेदःवःयि ।
 श्लेदःवःतर्द्धेः र्द्धेःरर्द्धेःश्लेदः ।
 र्द्धेःशुदःवःश्लुदःवः सःश्लेदःवः यदः ।
 यदःवः र्द्धेः श्लेदःश्लुदःश्लुदः ॥ १८५

त्वन्मुखङ्कमलं चेति द्वयोरप्यनयोर्भिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

श्लिदःश्लिः श्लेदःदः वःश्लेदःश्लेदः ।
 र्द्धेः श्लेदःश्लिः श्लेदः श्लेदःवः यदः ।

བསྐྱེ་ཚུ་ལས་སྐྱེས་པ་ དང་ །
 ཁྱོད་གདོང་ཁྱོད་ལ་བརྟེན་པ་ལོ། ། ༡༣༡

अम्रविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगोक्षणं ।
 इदन्तु नयनद्वंद्वं तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་བྱགས་མིག་ལ་སྐྱེན་སྐྱེག་དང་ །
 ཁྱོས་པའི་དམར་བས་རིག་པ་མེད་ །
 ཁྱོད་ཀྱི་མིག་ནི་གཉིས་པོ་འདི། །
 ཡོན་ཏན་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་བརྒྱན། ། ༡༣༢

पूर्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।
 सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྐྱེས་པ་དགུ་བ་ཙམ་ཞིག་བསྟན། །
 འདིར་ནི་ལྷག་པ་ཉིད་བསྟན་ཏོ། །
 སྐྱེས་པ་ལང་མཚུངས་པའི་ལྷོག་པ་ཙན། །
 གཞན་དག་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ། ། ༡༣༣

त्वन्मुखम्पुण्डरीकञ्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।
भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टि मुखन्तु ते ॥१६०॥

सुदंशुः शर्करं ददं यद्वा ददत् ।
शुभाः शैवः द्विःपञ्चःशुभःपःशु ।
यद्वाःपःशुः सुदंशुः ददत् ।
सुदंशुः शर्करं पः शैवःददंशुः ॥ १७० ॥

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।
नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

शुभःपः ददंशुः शर्करं पःशु ।
ददंशुः ददंशुः सुदंशुः शुभः ।
शर्करं ददंशुः सुदंशुः शैवःपःशु ।
सुदंशुः शुभाःदंशुःपःशु ॥ १७१ ॥

प्रतीयमानशौक्यादिसाम्ययोर्वियदम्भसोः ।

कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिंश्चन्द्रहंसयोः ॥१६२॥

འདྲིར་ ཉི་ རྒྱ་བ་ རང་བ་ དག །
 དཀར་བ་ཉིད་ རོགས་ རྟོགས་བ་ དང་ །
 མཁའ་དང་ མུ་ ཉི་དག་བར་ ཡང་ །
 རྟོགས་བར་ མཚུངས་བའི་ དབྱེ་བ་ བྱས ། ༡༧༢

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्साद्रशव्यतिरेकता ॥१६३॥

རྒྱ་བ་ལ་ ཉི་ རྒྱ་བ་ མཚུངས །
 དཀྱི་ག་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
 བྱང་བ་ རིག་ལ་ རོགས་བ་ མཚུངས །
 དེ་མུའི་ མཚུངས་བའི་ རྟོགས་བ་ཅན ། ༡༧༣

अरत्नालोकसंहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१६४॥

རིན་ཆེན་ རྒྱང་བས་མི་འཕྲོག་ ཅིང་ །
 ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་རྒྱོག་པ །

ལང་ཚོ་ ལས་ གུང་ ན་ རུང་གི །
 མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་བྱེད ། ༡༧

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
 दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैरदर्शयत् ॥१६५॥

མུན་པའི་རིགས་ལས་ མུན་པ་ འདི །
 ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྲིས་ མཚུངས་ །
 གཞན་དག་གིས་ ཉི་ བ་དད་ བསྟན །
 འདི་ཉི་ རིགས་ མཐུན་ལྷོག་པ་ཅན ། ༡༧

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]रं ।
 यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्यं सा विभावना ॥१६६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ མུ་བརྗོག་ནས །
 གང་ཞིག་ མུ་ གཞན་ རུང་ཟད་དམ །
 གང་དུ་ རང་གི་ རོ་བོ་ ཉིད །
 ལྷོན་པ་ དེ་ཉི་ མྱིད་པ་ཅན ། ༡༧

अपीतक्षीवकादम्बमसंभृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१६७॥

ख'लसुदस' सुस'पदि' ११'दसु ।

ख'सुस'दु'ख'सेद'पदि' ख'ल ।

सुदस'पद' ख'सुस' सुदस'पदि'कु ।

लसु'पदि' लीद'के' लसु'पद'सुदे ॥ १७७

अनञ्जितासिता दृष्टिभ्रूनावर्जिता नता ।

अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१६८॥

सुस'ख'सुस'पद' द'द'स'के' स'मा ।

ख'के'प' सेद'पद' सुस'ख' द'स' ।

के'ख' ख'सुस'पद' द'स'प' के' ।

ख'से'ख' सु'द'के' स'कु' ल'दे' ॥ १७८

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१६९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འབྲུངས་ ལ་སོགས་ རྒྱུ་མེད་ །

རྒྱུ་མེད་ བྱུ་མེད་ སོགས་ རྒྱུ་གཞན་ཅན་ །

རྒྱུ་མེད་ དག་ཀྱང་ བརྗོད་ འདོད་པ་ །

དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༩༩

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।

अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ རྒྱུ་མེད་ སོ་ རྒྱུ་མེད་ །

རྒྱུ་མེད་ བྱུ་མེད་ སོགས་ རྒྱུ་གཞན་ ཅན་ །

རྒྱུ་མེད་ དག་ཀྱང་ བརྗོད་ འདོད་པ་ །

རྒྱུ་མེད་ བྱུ་མེད་ སོགས་ རྒྱུ་གཞན་ ཅན་ ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षान्निवर्तितः ।

उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་རྒྱུ་སོགས་ རྒྱུ་མེད་ འདིར་ །

རྒྱུ་མེད་ བྱུ་མེད་ སོགས་ རྒྱུ་གཞན་ ཅན་ །

द्विर्लिसं श्रितं शोभासां अमृतां सुं वहेत् ।

देष्टुं देहिं श्रितं च उक्त्वा ॥ ३०१

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिर्वाञ्छितरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

ददेषं चो अमृतां च वसन्तसां सुं वहेत् ।

देष्टुं देहिं श्रितं च उक्त्वा ॥ ३०२

वसन्तसां चो अमृतां च वसन्तसां सुं वहेत् ।

देष्टुं देहिं श्रितं च उक्त्वा ॥ ३०३

[24b]पिबन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुले ॥२०३॥

सुदं च द्विर्लिसं श्रितं च उक्त्वा ॥ ३०४

वसन्तसां चो अमृतां च वसन्तसां सुं वहेत् ।

देष्टुं देहिं श्रितं च उक्त्वा ॥ ३०५

वसन्तसां चो अमृतां च वसन्तसां सुं वहेत् ॥ ३०६

इति प्रौढाङ्गनाचन्द्ररतिलोलस्य रागिणः ।

कस्याञ्चिदिह बालायामिच्छाऽवृत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ठगसः॒हृक् सु॒दः॒खे॒दः द॒रः॒खः॒ल ।

द॒ग॒दः॒व॒रे॒ कु॒रे॒द॒ग॒सः॒ व॒ते॒द॒सः॒वः॒ द॒ग॒ ।

सु॒खे॒ द॒ग॒दः॒वे॒गः॒ द॒गः॒लः॒ लः॒ ।

द॒दे॒दः॒वः॒ द॒ये॒लः॒वः॒ हृ॒क्॒वः॒दः॒सु॒द॒ ॥ ३०८

विशेष्यमात्रमिन्नापि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्त्यसावपराप्यस्ति मिन्नामिन्नविशेषणा ॥२०५॥

सु॒दः॒वः॒उ॒क् उ॒खः॒ वः॒द॒दः॒ उ॒दः॒ ।

सु॒दः॒वः॒ क॒खः॒वः॒ ख॒खे॒द॒सः॒व॒द॒दः॒ ल॒द॒ ।

सु॒दः॒वः॒ वः॒द॒दः॒ वः॒द॒दः॒ ख॒क् ।

द॒दे॒दे॒ वः॒ख॒क्॒वः॒ द॒गः॒ ल॒दः॒ ल॒द॒ ॥ ३०९

रूढमूलः फलभरैः पुष्पाञ्जनिशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

क'वङ्क' उवस'सुदि' इर'सुि'स' वै ।
 श्लो'क'स'स' इ'ग'रु' कु'स'प'र'सु'द ।
 श्री'व'स' सु'स'प'दि' श्लो'क'प'ठे ।
 अ'द'ै'क'ै' व'द'ग'वी'स' अ'द'र'ग' श्र'व ॥ ३०६

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छायः स्थैर्यवान्दैवादेष लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

अ'ल'प'दि' सु'क'ै' वै' श्लो'क'प'ठे ।
 श्लो'क'स' उ'व'स'सु' द'व'सु'स'क'ै'स' ।
 द'स'प'दि' श्री'व'स'स'व' व'द'ग'सु'व'प'दि ।
 अ'द'र'ग'ै' व'द'ग'वी'स' श्लो'क'प'ठे ॥ ३०७

उभयत्र पुमान्काश्चिद्द्रक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

ग'क'ै'ग' अ' अ'द' श्लो'क'सु'द'ग'र ।
 श्लो'क'प'ठे'द' ग'ु'स' क'ै'व'द'व'सु'व'स' ।

केशं केशस्य प्रसन्नस्य उदं प्रसन्नस्य ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ॥ ३०८

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।
 अयमम्भोनिधिः कष्टङ्कालेन परिशोष्यते ॥२०६॥

सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ॥ ३०९

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।
 समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ।
 सुखमेतं गणेशस्य केशस्य गणेश ॥ ३१०

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तिनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

सुदं वरं सुिं र्निं वहेदं अदेदं वरं ।

अहेमं हेनं अलंकारं अरं अरं सुदं वरं ।

सुदं वरं सुदं वरं वहेदं वरं अदेदं ।

सुदं सुिं अरं वरं अरं हेनं अदेदं ॥ ३२२ ॥

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्द्धीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

अरं सुिं अरं अरं अरं अरं अरं ।

अरं सुिं अरं अरं अरं अरं अरं ।

अरं अरं अरं अरं अरं अरं ।

अरं अरं अरं अरं अरं अरं ॥ ३२३ ॥

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुक्तमुत्कर्षवत्तथा ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदर्शयते ॥२१३॥

क्वं वरिं रें वं क्वं वं क्वं वं ।
 क्वं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ॥ ३२३

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ॥ ३२४

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।
 वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं वरिं ।

འོ་མ་འཛོལ་བའི་གྲུང་ བཞས་པ།

ནས་པ་ བཞན་དུ་ སློན་མ་ཡིན། ॥ ३१४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोदरं ।

माति मातुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བྲགས་པའི་ སྤང་པོ་ ནི།

དཔག་ ནས་ མིན་ ཡང་ འདིར་ འོང་བ།

ས་སྤྱོད་ སློན་པ་ བསུམ་ ཀྱི་ ནི།

ཁོངས་ དག་ ཡི་མ་ འོན་དུ་ ཡངས། ॥ ३१७

अलंकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।

वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་བོས་ མཚོན་གྲུང་པ།

སྤང་གྲུང་ ཞེས་བྱ་ བཛོད་པ་ འདི།

གྱུན་ནི་ བཞན་པ་ ནསས་ ཀྱི་ ཡང་།

བཞིག་སུ་ དསྤང་བཞིན་ ཉིད་དུ་ བཛོད། ॥ ३१८

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।
अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमसा'ल्लव' दमा'माम' उमा'पेसा' गुसा ।
कसा'प' मालव'दु' मकसा'पदि'कुंदा ।
माम'दु' कसा'मालव' रव'द्रेमा'प ।
दे'के' रव'द्रेमा'दु' रेमा' दसेर ॥ ३२८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।
मन्ये मार्त्तण्डगृह्याणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

डैव'मुद' डै'मसा' मरुदसा'प'यी ।
माम'प' दमा'के' मके'र' महुमा'प ।
डै'मदि' सुमासा'मुद' मरु' कसासा ।
माले'सा'प'र' मरे'द'प' यैव'कसा' कुसा ॥ ३२७

स्नातुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।
तद्वैरनिष्क्रयार्थेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्णयते ॥२२०॥

म्रश'द' व'द'द' व'द'उ' द'ग ।
 व'उ' सु'र' ल'ग'ल'क' उ'र'उ'ल'ग'व ।
 द'क' ल'क'ल'क' ल'क' सु'र'ल'क ।
 ल'क'ल'ग'ल'क' सु'र' र'व'व'द'ग'ल' व'उ' ॥ ३३०

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।
 इति कर्णोत्पलं प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥ .

उ'द'क' व'द'ग'ल'क' र'व'व'द'ग ।
 उ'द'ग'ल'क' क'व'द'ल'क' ल'क' द' ।
 सु'र'ल'क' ल'क'ल'क' क'व'ल'क ।
 ल'क'ल'ग'ल'क' ल'क'ल'क' उ'द' ॥ ३३१

अपाङ्गभागपातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलं ।
 स्पृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

ल'क'ल'क' क' क' क' ल'क'ल'क' ।
 ल'क'ल'क' ल'क'ल'क' ल'क'ल'क' ।

देवाभासां शिवां यत् शिवं दत्तं समाह्वय ।

देवैः स्वयं दत्तं दत्तं दत्तं ॥ ३३३

लिम्पतीव तमोद्भानि वर्षतीवांजनं नभः ।

इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणान्वितं ॥२२३॥

शिवं च त्रिंशत् च दत्तं च शिवं च ।

शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ।

शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ।

शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ॥ ३३३

केवांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]खिञ्चत्येह जन्यते ।

नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तभाषितं ॥२२४॥

दत्तं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ।

दत्तं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ।

शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ।

दत्तं च शिवं च शिवं च शिवं च शिवं च ॥ ३३८

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दसिं ददं दसिं सुश्रिं दसिं ।

सकुं दसिं दसिं कसिं दसिं ।

दसिं दसिं दसिं कसिं दसिं ।

कसिं दसिं कसिं दसिं दसिं ॥ २२५ ॥

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।

स एव धर्मो धर्मो चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

दसिं दसिं दसिं दसिं दसिं ।

दसिं दसिं दसिं दसिं दसिं ।

दसिं दसिं दसिं दसिं दसिं ।

दसिं दसिं दसिं दसिं दसिं ॥ २२६ ॥

कर्त्ता यद्युपमानं स्यान्न्यग्भूतोसौ क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यग्रे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥

षण्णः सुदः वः यैः ॥
 सुः षण्णः ॥ सुः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥ ३३७

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।

अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

सुदः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥ ३३८

यथेन्द्रुरिव ते वक्त्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।

न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

सुदः सुदः सुदः सुदः ॥
 सुदः सुदः सुदः सुदः ॥

देवविंशं अष्टुमासं अदिं वां किं ।

अष्टुमासं वासां मात्रं देवासां वायं ॥ २३० ॥

तदुपश्लेषणार्थं लिम्पतिर्द्धान्तिकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

देवसुतं अष्टुमासं अदिं ददं किं ।

सुतं च सुतं च सुतं सुतं वासां ।

शिवं सुतं देवं सुतं सुतं वासां ।

देवसुतं सवसदमासां वासां अदिं सु ॥ २३० ॥

मन्ये श[26b]ङ्खे ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

सुतं ददं देवासां ददं देसां ददं अदं ।

सुतं देसां देसां वासां वासां वासां ।

सुतं वासां सवसदमासां वासां वासां सुतं ।

देवविंशं सुतं सुतं वासां देवदं अदं ॥ २३१ ॥

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।
कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

श्रुं द्दं स्र्भं कं द्दं किं ।
कैमां क्कसां द्दं मां श्रुं श्रुं क्कसां ।
श्रुं किं श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं ।
द्विं द्दं क्कसां द्दं द्दं द्दं ॥ २३३॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।
उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३३॥

श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं ।
श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं ।
श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं ।
श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं श्रुं द्दं ॥ २३३॥

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपवृंहणं ।
अलंकारतयोद्दष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

दमरुवः क्षुद्रवतः रेषवः यी ।
 रदमर्षिणः श्रेवतः सुतवः रद्वि ।
 सुतः श्रेवः श्रेवः श्रेवः रदमर्षिणः ।
 रेषवः दमरुवः सुतः श्रेवः रदमर्षिणः ॥ ३३८

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्जम्बरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

सः सः सः यीः सुतः य ।
 रेषः रदः रदः रदः रदः रदः रदः ।
 सुतः रदः रदः रदः रदः रदः रदः ।
 रेषः रदः सुतः श्रेवः श्रेवः रदः रदः ॥ ३३९

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मास्तः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोश्चारोचके जने ॥२३६॥

रेषः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः ।
 रेषः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः ।

སྐྱེ་བོ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྲིད་པ།

ཉམས་པ་ སྐྱེ་བ་ བྱེད་པར་ རྣམས། ॥ ३३७

निर्वर्त्ये च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ རྣམ་འགྲུར་ ལ།

དེ་ཉིད་ ལ་ ལྗོས་ ལྷུ་ཉིད་དེ།

འཁོབ་པའི་ ལས་ ལ་ སལ་ཆེར་ བློ།

བྱ་བ་ ལ་ ལྗོས་ ལྷུ་ཉིད་དོ། ॥ ३३७

हेतुनिर्वर्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

दत्त्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ ལྷུ་ དག་ བློ།

བསྐྱེད་དེ་ ལྷུ་གས་ བཞུགས་པོ་ ཡི།

དཔེར་ བཞུགས་ བཞུགས་ བློ་ བཞུགས་བྱས་ནས།

ལྗོས་པར་བྱེད་པ་ བསྐྱེད་པར་བྱ། ॥ ३३८

उत्प्रवालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थद्वष्टिविषङ्कृतं ॥२३६॥

अ-र-व- म-स-र-म-सु-र-स- व-म-स-क-स- र-व- ।

अ-र-व-म-सु- र-व-रु-सु-स-स-र-ि- ई-र- ।

सु-व- सु-स-स- अ-र-र-व- य-स- ।

अ-सु-र-स- सु-व-र-ि- रु-म-रु- सु-स- ॥ २३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

बाला भ्रूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

सि-र-स-स- म-स-स-स-स-र- सु-र-ि- व-स- ।

सु-स-स-स- म-स-र-स-र-ि- म-स-स-स-र-ि-र- ।

सु-स- सु-र-ि-र-स-स- स-म-स-स- सु-स- ।

स-सु- र-ि- म-स- व-स- सु-र-ि-र- ॥ २४०

गतोस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥

श्रुं सः क्वपुः क्वपुः क्वपुः सत्स ।
 अदवः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ॥ ३०१

*अबभ्यैरिन्दुपादानामसाभ्यैश्चन्दनाभिसाम् ।

देहोष्मभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ॥ ३०२

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतवः ।

अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।
 क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः क्वपुः ।

དངོས་མེད་ ལྷོ་ རི་ ཡིད་ འཕྲོག་པ།
 འགའ་ཞིག་ རབ་དུ་བསྐྱུན་བར་བྱ། ॥ ३༦३

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।

अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ རི་ མ་གཤམས་ དང་།
 ལྷོ་ལྷན་ རྣམས་ དང་ མ་འཕྲོགས་ དང་།
 དབང་པོ་ རྣམས་ རི་ མ་བསྐྱུན་པས།
 མི་ རྣམས་ རབ་དུ་གདུང་བར་ ལྷོར། ॥ ३༦༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।

क्षतो मोहश्च्युता नृणा कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་པའི་ གདམ་ ལྷིས་ ལྷོས་པ་ སོང་།
 ལང་ཚོ་ཡི་ རི་ རིམས་ དག་ རྣམས།
 ལྷོངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ ལྷོད་པ་ འཕྲོས།
 བསོད་ལྷམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ ལྷས། ॥ ३༦༥

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

वृषाणां ऋषिणां त्रिषु ऋषिणां ।

शुक्राणां ऋषिणां सुतुष्टिणां ऋषिणां ।

सिद्धिणां ऋषिणां सुतुष्टिणां ऋषिणां ।

देवैः ऋषिणां ऋषिणां ऋषिणां ॥ ३८७

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टितं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

शुक्राणां ऋषिणां त्रिषु ऋषिणां ।

शुक्राणां ऋषिणां त्रिषु ऋषिणां ।

शुक्राणां ऋषिणां त्रिषु ऋषिणां ।

शुक्राणां ऋषिणां त्रिषु ऋषिणां ॥ ३८८

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྐྱེད་ཚལ་ ས་ཏ་ཀུ་ར་ རྣམས། །
 སྐྱེ་མ་ མ་འབྲུངས་པ་ མིན་ ཉ། །
 འགྲོན་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ བྱད་མེད་ རྟི། །
 ཉིལ་བཅས་ཁྱོར་ཚུ་ སྐྱོན་བྱར་འབྱུར། ॥ ३༧༤

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनप्रति ॥२४६॥

ཡོད་ དང་ མེད་པའི་ རང་བཞིན་ ལྱི། །
 འབྲས་བུ་ སྐྱེད་པ་ དག་ ལ་ འདིར། །
 སྐྱོན་མེད་ ལ་སོགས་ རང་བཞིན་ ལྱི། །
 དངོས་པོ་ ཡི་ རྟི་ ལྱུ་ ཉིད་པོ། ॥ ३༧༥

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चित्रहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་ དེ་དང་རྣམ་ཅིག་སྐྱེས། །
 དེ་བཞིན་ འབྲས་ མ་ཐག་ སྐྱེས་དང་། །

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་གྱེད་ ཅེས་པ།
 མཚོར་བའི་ རྒྱ་ རྣམས་ བྱངས་མེད་དོ། ༣༡༠

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।
 अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ རྒྱེད་བའི་ ལས་ རྣམས་ ལ།
 སལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།
 ལིན་ཏུ་ མཚོས་པ་ དག་ མཚོར་སྟེ།
 དེ་ཡི་ དབེར་བརྟེན་ རི་ལྟར་ན། ༣༡༡

त्वदपाङ्गाह्वयं जैत्रमङ्गजाखं यदंगने ।
 मुक्तदन्वतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ རྫོད་ མིག་རྒྱར་ ཅེས་པ།
 རྒྱལ་གྱེད་ ལུས་སྐྱེས་ དག་ ལི་ མཚོན།
 བཤ་ དེ་ བཞུན་ ལ་ སལ་འཕངས་པ།
 དེ་ ཡིས་ བདག་ ལི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོམ། ༣༡༢

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशवं ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेसःसुः सुसःश्लेसः गृसः सुसःसदि ।
कसःसुसः सुःकसः सुःकसः सुः ।
सुःसुः कसः सः सुःसुः सुः ।
सुःसुः सुःसुःसदिः सुःसुः सुःसुः ॥ ३५३

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डलं ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

सुःसुः सुः सुःसुः सुःसुः सुः ।
कसःसुःसुः सुःसुः सुःसुःसुःसुः ।
सुःसुः सुः सुःसुः सुःसुःसुःसुः ।
सुःसुः सुः सुः सुःसुःसुःसुः ॥ ३५४

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुञ्जलीकुरुते कुतः ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ་ །
 དམར་བ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རེག་བས་ །
 ལྷལ་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ ལག་བ་ ཡི་ །
 པདྨ་ ལྷམ་པར་བྱེད་བ་ ཅི །། ३१४

पाणिपद्मानि भूपानां संकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामञ्जिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

ཁྱོད་ ཀྱི་ ཞབས་ སེན་ལྷ་བ་ ཡི་ །
 རེད་ཟེར་ ཀྱུན་ད་ རི་མེད་ རྣམས་ །
 ས་ལྷོང་རྣམས་ཀྱི་ ལག་བ་ ཡི་ །
 པདྨ་ ལྷམ་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ །། ३१५

इति हेतुचिकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौष्टम्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་བ་ ལྷུ་ ཡི་ རྣམ་རྟོག་ བོ་ །
 ལྷལ་ས་ བོ་ འདི་འདྲ་ དག་ཏུ་ བསྟན་ །

ལྷ་དང་ ལྷ་པས་ མཚོན་པའི་ དོན།

སྤྱི་ ལྷ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད། ॥ ३१७

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णं वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ལྷ་ ཞེས་ འུ་ཅག་ འགྲོགས་འགུར་ ཞེས།

ཚོགས་སུ་ བརྗོད་པ་ མ་བཟོད་པའི།

མཚོན་པོ་ རིག་ལས་ ལུང་མེད་ ཀྱིས།

ཚེ་ དགའི་ བདུ་ ལྷ་པར་བྱས། ॥ ३१८

पद्मसंमिलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्र्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྐྱེས་ དག་ ལོས་ ལཱེར་བ་ ཡི།

མཚོན་པོ་ དབྱལས་ དབྱུང་ འདོད་པ་ ཡིས།

བདུ་ ལྷ་པར་བྱས་པ་ ལས།

འདིར་ ཞི་ མཚོན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བསྟན། ॥ ३१९

त्वदर्पितदृशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

सुः यीः स्रुजः सः स्रुजः यः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ॥ ३५०

इत्यनुद्धिन्नरूपत्वाद्रत्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घयैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ।

स्रुजः यः स्रुजः स्रुजः स्रुजः स्रुजः ॥ ३५१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥

कः किं कः यिनः दत्तः यो यि ।
 दत्तः यत्किं दत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 दत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 दत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ॥ ३७३

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ॥ ३७३

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं दृष्ट्वैव कन्यकाम् ।
 अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६४॥

कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।
 कृत्वा यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः यत्तः ।

क्लृप्तं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 द्रुतं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं ॥ २६८

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।
 लेश*मेकेच्चिदुन्निन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

शिखां च चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 द्रुतं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 शिखां च चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 द्रुतं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं ॥ २६४

युवैव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुर्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवाद्दपि ॥ २६६ ॥

शिखां च चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 द्रुतं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 शिखां च चतुर्विधं शिरोमणिं वी ।
 द्रुतं शीघ्रं चतुर्विधं शिरोमणिं ॥ २६७

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।

कथायाः कल्पते भोगान्निर्विद्विशोर्निरन्नरान् ॥

वर्केव'रगुण' सुद'रयगण' वस्त्रे'व' रदे'र ।

स्त्रे'व' श्रे'दे' र्दे'र'स्त्रे'व' ।

सु'व' सु'दे'र' सु'दे'र' ।

वस'व' रग'के' वस्त्रे'व' र'व' ॥ ३७७

चपलो निर्दयश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।

आगःप्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

वर्के'व' र'व' व'के'व' श्रे'दे' सु'दे' ।

व'के'व' सु'दे'र' सु'दे'र' व'के'व' ।

सु'दे'र' र'दे'के' व'के'व' व'के'व' ।

सु'दे'र'के' र'दे'के' व'के'व' ॥ ३७८

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।

मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्तया ॥ २६९ ॥

भ्रुवो मूर्ध्नि केशा रवः सङ्घर्षः सिद्धिः ।
 कर्णः श्रुतः श्रुतः च कर्णः कर्णः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।

यथासंख्यमिति प्रोक्तं संख्यानङ्कम इत्यपि ॥ २७०

श्रुतः श्रुतः रवः सङ्घर्षः च कर्णः ।
 कर्णः च श्रुतः श्रुतः श्रुतः च ।
 श्रुतः च श्रुतः च श्रुतः च श्रुतः ।
 श्रुतः च श्रुतः च श्रुतः च श्रुतः ॥ २७०

[29b] भ्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युतिः ।

स्नातुमम्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

श्रुतः श्रुतः रवः श्रुतः च ।

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

गुह्यं ज्ञानं वदन्त्यसि ।

वक्तव्यं तव देवस्यै मन्त्राणां उक्तम् ॥ ३७१

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवत् रसपेशलं ।

ऊर्जस्वि रुढाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तत्रयं ॥ २७२ ॥

दमादवः शङ्करोऽपि दमादवः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ॥ ३७३

अद्य या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।

कालेनैषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ।

शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः शङ्करः ॥ ३७३

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।

भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

दे०र०दे० दे०र०व० वी०दु०र०स ।

म०र०व० व०स० वी०र०व० दे०म०स०व०र० वृ०स ।

दे०व० मृ०स०व० व०स० वृ०स०रि ।

र०व०व०र० दे०र०व०दे० वी०र०दु० दे०म०स० ॥ ३७८

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिव्योम होतानलो जलं ।

इति रूपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७५ ॥

सु०व० उ०स० सु०र० स० व०र०र० ।

सु०र०व०दे० दे०र० व० दे०र० वृ० ।

व०स०व० दे० म०रु०द० व०स० दे०र०व० दे०स० ।

सु० वृ० दे०र० दे०र० दे०र० वृ० ॥ ३७९

इति साक्षात्कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः ।

प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७६ ॥

མངོན་སུམ་ བྱས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི།
 རྒྱལ་བོ་ དགའ་བའི་གོ་ཆ་ ཡིས།
 དགའ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ བའ་།
 དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་རྟོགས་བྱ། ॥ ३१७

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यया मे मरणम्मतम् ।
 सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

ཤེ་བ་ ཞེས་བྱ་ བ་རོལ་དུ།
 བའ་ དང་ འབྲོགས་སྦྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད།
 ཨ་བཞི་དེ་ བདག་ གིས་ ནི།
 རྗེ་ འདི་ཉིད་ལ་ རི་ལྟར་ བྲོབ། ॥ ३१८

प्राक्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्भ्रमः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ ལྡར་ བསྟན་ འདོད།
 དགའ་བ་ རྗེས་བཞི་ ཉིད་ བྱུར་བའི།

རང་བཞིན་ རྒྱས་དང་ལྷན་བས་ན །
 འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྷན་བའི་ ཚོམ། ॥ ३१८

निगृह्य केशेष्वकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
 सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

གང་གིས་ ཉམ་མོ་ བདག་ མདུན་ནས་ །
 རྒྱ་ནས་ བརྒྱང་སྟེ་ དྲངས་གྱུར་བ། །
 བཏུན་དཀར་ རྒྱིག་ཅན་ ཐོབ་པ་ འདི། །
 རྒྱད་ཅིག་ འཚོ་བར་ གྱུར་རམ་ ཅི། ॥ ३१९

इत्यारुह्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
 भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२८०॥

ཅེས་པ་ འཛིགས་ རྩེ་ དགུ་དག་ལ། །
 ལྷ་བའི་ ཐོབ་ མཚོག་གི་ མཐར། །
 འཛིགས་པ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གྱུར། །
 འདི་ ཉི་ རོ་དང་ལྷན་བའི་ ཚོམ། ॥ ३२०

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ट्वा विविधैर्मखैः ।

अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

अर्केरं वत्सं स'लं स'क्रुलं वीरं ।

वस'वदं अर्केरं व'सुं स'सुस'लं ।

सुंदं लं वीरं वस'स' स'सुव'वदं ।

स'सुंद'रुं वद'व' वी'रुं र'सुंद' ॥ ३८१

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।

रसत्त्ववङ्गिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उस'व' सुंद' व' सुंद' र'स'स' वद'व' ।

द'व' र'स' र' सुंद' व' सुंद' र'स' व' व' ।

सुंद' व' सुंद' र' सुंद' व' व' ।

सुंद' र' सुंद' र' सुंद' व' व' ॥ ३८२

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्गया रुजाकरी ।

साधिरोते कथं देवी हुताशनवतीं चिताम् ॥ २८३ ॥

लुखाऽल्लखः मणःल मन्नुःखी ।
 खलःखुणः नमः गुणः उवःखुनःख ।
 कुःखो नैःखी नैःखणः नमः ।
 खैःमःखःखुणःनः खैःखुणः कुःख ॥ ३८३

इति कारुण्यमुद्रिकमलं[30b]कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेषु भीमत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

उखाःवः खुणःखैः म्नुखाःवःखी ।
 म्नुखःखुणःनैःखी नमःखुणःवःखणः ।
 नैःखणैःखः म्नुखः खणः खैःखुणः नमः ।
 म्नुखःवःखणः खैःखुणः नैःखणःखुणःनैःखी ॥ ३८८

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धैरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

म्नुखाःवः म्नुखःवःखी खैःखैः नैःखणः ।
 खैःखैःखैःखैःखैः नैःखैःखैः ।

ལག་པ་ ལྷུང་པས་ ཁྱོད་ དགའི་ ལྷག་ །

འཕྲང་ཞིང་ འཕྲང་ཞིང་ གང་གཉེན་ ། ३२४

इदमम्लानमालाया लग्नं स्तनतटे तव ।

छाद्यन्मपुष्पदीपैश्च नवन्नखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གྲོགས་མོ་ མེ་ཏོག་ མ་རྗེས་ས་ །

ཁྱོད་ཀྱི་ ལུ་མའི་ རོས་ལ་ནི་ །

སེམས་རྗེས་ སང་པ་ ཆགས་པ་ འདི་ །

སྤྱོད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ཉི་ སྒྲིབ་པར་མཛོད་ ། ३२५

अंशुकानि प्रवालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।

शाखाश्च मन्दिराण्येषां चित्रदण्डद्वारादिभिः ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ ལྷོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི་ །

འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་ །

མེ་ཏོག་ དོ་གལ་ ལ་ སོགས་ཅན་ །

ཡལ་འདབ་ ཁང་བར་གུར་པ་ མཚན་ ། ३२६

इदं मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

कुं.के. द.म.ल. के.म.क.स.स ।

स.कु.पु.क.सु. के. द.के. म.द. ।

द.के.के. द.क.क. कु.के.के. सु. ।

सु.के.के. म.द.ल. के. कु.द.म.द.सु. ॥ ३८८

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दशितो रसः ।

इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरां ॥ २८९ ॥

कु.क.स. म.द.स. के.द.के.के. सु.के.स. ।

स.के.के.सु.के.के. कु.के.स. द.म. स.कु.क. ।

द.के.के.के. कु.के.स. स.कु.के. द.म.द.सु.के.के. ।

के.म.के.के.स. कु.के.स.द.कु.के.स.द. स.प.द. ॥ ३८९

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्भयम् ।

विमुखेषु न मे खड्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २९० ॥

- वदमा'र्षि' मा'र्षे'न'व'सु'द'र्षो' ले'ष ।
 सु'द'र्षो' ऋ'षि'ण'सु' अ'र्षि'ण'सु' स'सु'द' ।
 वदमा'सौ' र'ण'सु'सु'द' सु'द'र्ष'ण'सु' ।
 ऋ'षि'ण'सु' अ'र्षि'ण'सु' अ'र्षे'न' स'सु'द' ॥ ३००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धे निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्ज्ञयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २६१ ॥

ले'ष'सु' ऋ'षि'ण'सु' अ'र्षि'ण'सु' अ'र्षि'ण'सु' ।
 स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' ।
 स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' ।
 स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' ॥ ३०१

अर्थमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ २६२ ॥

अ'र्षे'न' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' ।
 स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' स'सु'द'र्षो' ।

कृषा'प' गणन'दम' वक्षे'प' गद' ।

दे'के' कृषा'गुदस' वक्षे'प'द' अदे' ॥ ३०३

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।

तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां स्वरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

स'द'गु'द'दे' कृ'षा'कृषस ।

गणन'गु'स'ग'सो'द' अ'दे'स' अ'प'द'गु'द' ।

दे'के' प'द'ग'गो'स' व'क्षे'ग'प'द'प'गु' ।

सु'द' ग'दे'स' द'प'गु'स' अ'दु'ग'प'द'अ'दे' ॥ ३०३

संगमय्य सखीं यूना संकेते तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

गो'ग'स'सो' कृ'षा'सु'द' सु'द'गु'स'कृष ।

दे'द'ग'अ'दु'स'प'द' द'ग'द'प'द' ।

द'ग'द'कृ'ष' कृ'ष'दु' ग'गु'ग' अ'दे'द'प'स' ।

अ'ग'द'दे'ग' दे'कृ'ष' सो'द'प'द'गु'द' ॥ ३०८

བསམ་པ་ འམ་ ཉི་ འབྱོར་པ་ ཡི།

ཆོན་པོ་ ཉི་དེ་ རྒྱ་མེད་ བའ་།

དེ་ བོ་ རྒྱ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི།

གྲུབ་དུ་ མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ བཟོད་ ། ३०७

गुरोः शास्त्रनमत्येतुं न शशाक स राघवः ।

यो रावणशिरच्छेदकार्यभारेऽप्यविक्रमः ॥ २६८ ॥

རྒྱ་བཟོ་ཡི་ མགོ་གཙོད་བའི།

བྱ་བའི་ ཁྲུ་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི།

རྒྱ་ལྷོ་ལྷོ་ དེས་ རྒྱ་མ་ཡི།

བཀའ་ལས་ འདྲ་བར་ རྣམ་མ་ གྲུབ་ ། ३०८

रत्नभित्तिषु संक्रान्तैः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।

ज्ञातो लङ्केश्वरः कच्छादाब्जनेयेन तच्चतः ॥ २६९ ॥

རིན་ཆེན་ རྒྱ་མ་ ལ་ འཕོས་པའི།

གཞུགས་བརྟན་ བརྒྱ་ཡིས་ བསྐྱོར་གྲུབ་པ།

ཡལྟའི་དབང་ཕྱི་ག་ དེ་ ཁོ་ན །

ཨ་ཁུ་ན་ བྱས་ དཀའ་བས་ ཤེས་ ॥ ३००

पूर्वत्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

ལྟ་མར་ བསམ་པའི་ བདག་ཉིད་ཚེ །

འདིར་ནི་ མངོན་པར་ འབྱོར་བས་ བརྗོད་ །

གྱུ་ཚེ་ མཉམས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་ །

རབ་དུ་ བསམ་ལ་བར་ མངོན་པ་ ཡིན་ ॥ ३००

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः समस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བརྗོད་དོར་དག་ ཉི་ བརྗོད་བྱས་ནས་ །

དོན་གཞན་ ཚུང་ཟད་ བརྗོད་པ་ ལྟེ །

འདོད་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྟ་བུ་ །

མ་ཡིན་ ལྟོ་ལྟན་ ལྟོང་ཕྱག་ ཡོད་ ॥ ३०१

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिश्शीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

उद्भूतं ह्यवेदं नमःसु यी ।
ह्यो ह्युत्पत्ता द्वितीयं वल्लभं च ।
सोऽपि रम्यं वल्लभं ह्युत्पत्ता ह्ये ।
मल्लभं चिं रम्यं वल्लभं ह्येत् ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैवं परेष्व्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शानात्तस्य सैषा विषयनिहृतिः ॥३०३॥

उद्भूतं ह्युत्पत्ता द्वितीयं वल्लभं च ।
सोऽपि रम्यं वल्लभं ह्युत्पत्ता ह्येत् ।
मल्लभं चिं रम्यं वल्लभं ह्येत् ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवाथमर्थात्मा विषयनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

वदुन्ः ष्टिः चमाः सदिः अदः चैरः उक् ।
 ह्वः सः ष्टिः सः सः सः उक् । अदः ।
 ष्टिः चिः सः सः उदः अदिः ष्टिः सः ।
 दुमाः चमाः चैः रः ह्वः सः उदः ॥ ३०८

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

उषः सः ह्वः सदिः ह्वः रः सः उदः ।
 सः सः ष्टिः ष्टिः सः सः सः उदः ष्टिः ।
 अदः सः सः सः सः सः सदिः सः ।
 अदिः ष्टिः सः सः सः सः सः अदः ॥ ३०९

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

रः सः सः सः सः सः सः उदः ।
 रः सः सः सः सः सः सः सः ।

འདི་ཡིས་ བསྐྱོན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས། །
མཚོན་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ་ཚེར་ མཚོན་ ॥ ३०६

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྐྱར་བ་ གཟུགས་གཅིག་ལུན་བའི་ ཚོག། །
དུ་མའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་དུ་ འདོད། །
དེ་ཚོག་ བྲ་དད་ མིན་བ་ དང་། །
བྲ་དད་ ཚོག་ འདྲ་ རྣམ་བ་གཉིས། ॥ ३०७

असावुदयमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुभिः करैः ॥३०८॥

ཨ་ད་ཡ་ གནས་ མཚོས་བ་ཅན། །
དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཚགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི། །
མི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག་དེན་ ལྷི། །
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་བར་བྱེད། ॥ ३०८

दोषाकरेण सम्बद्धनक्षत्रपथवर्तिना ।
राह्या प्रदोषो मामित्थमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

सु'क्ष्म' ल' ल' र' व' म' क' स' व ।
अ' क' र' म' र' उ' र' व' र' र' र' म' र' व' क' स' ।
सु' र' ल' ल' र' क' र' व' र' म' र' र' क' र' ।
र' म' र' व' म' र' उ' र' व' र' र' क' र' म' र' क' र' ॥ ३०७

उपमारूपकाश्चे[32b]पव्यतिरेकादिगोचराः ।
प्रागेव दर्शिताः श्लेषा दश्यन्ते केचनापरे ॥३१०॥

र' म' र' र' म' र' क' र' म' र' क' र' म' र' क' र' ।
सु' र' व' क' र' सु' र' क' र' सु' र' क' र' ।
सु' र' व' म' र' र' क' र' र' क' र' ।
म' र' क' र' र' म' र' क' र' र' क' र' म' र' क' र' ॥ ३१०

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिदविरुद्धक्रियोपरः ।
विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमदादापि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བ་དད་མིན།
 བཞུན་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད།
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ བཞུན།
 སྐྱར་བ་ རིས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ३११

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविष्यति ॥३१२॥

རིས་པ་ འགོག་པ་ བཞུགས་ བཟོད་ དང་།
 འགའ་མེད་ འགའ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ།
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
 དཔེ་བར་ཟོད་ དག་ལ་ བསལ་བར་འགྱུར། ॥ ३१२

वक्रस्वभावमधुराः शंसन्त्यो रागमुल्लवणम् ।
 दृशो द्रुत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འབྲིག་ཅིང་ ཡིད་ལོང་ རང་བཞིན་ཅན།
 རྣམས་པ་ བསལ་བ་སྟོན་བྱེད་མ།

खड्डेस'खस' वङ्गुल'वदि' खिण' द' कि ।
 खे'ङ'खेस' गुद' खड्डे'वे' रगुणस ॥ ३२३

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलागिरः ।
 आकर्ष्यन्ते मदकलाः श्लिष्यन्ते चासितेश्शणाः ॥३१४॥

धी'द'दे' कणस'व'रखे'व'व'सु'द ।
 रक'खे'द' खे'स'वदि' ग'द'स'ङ्ग'व'त'व ।
 सु'सु'ग'ङ्ग' कि' खे'स'गु'द'ने ।
 द'ग'र'खे'व'खे'व'त'व'द'ग'व' ॥ ३२०

रागमादर्शयन्नेष वारुणीयोगवर्धितः ।
 पराभवति घर्मा'शु'रङ्ग'जस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

कु'स' द' सु'र' र'खे'व'व'धि ।
 द'स'र'व' र'व'रु'ङ्ग'व'सु'द' त'द' ।
 क'खे'र'त'व' र'दि' व'व'गु'द'ने ।
 सु'स'सु'स' र'ग' कि' क'स'व'र'सु'स ॥ ३२५

निस्त्रिंशत्त्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रल'स्री'श्रि'द'ल'के' श्रु'पं ।
ग'ब्रु'श्रि'द'ल' के' अ'स्रि'ग'स'श्रि'द ।
सि'द'स'द' अ'द'यि' स्रु'क'र ।
स'द'अ'क'स'स'श्रि'द'ल' ग'क'स'स' यी'क ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

स्रि'द'गु'स' स'स्रु'द'स'ल'के'र'स' के' ।
स'द'द'यि' स्रु'स' श्रि'द'ल'दे' ।
दे'क'गु'द' क'ग'स'उ'क' अ'स्रि'ग'स'ल' ।
अ'स्रु'द'स'स' स्रु'द'स'क'स'स'ल'अ'द' स'स्रु'द' ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས་འཛོལ་ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ །
 བཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ དེས་པར་དར་ །
 ཟླེ་དགའི་བདག་ བྱང་ ལྷུང་བ་ལྷེ །
 རྩོ་པོ་ ལྷན་པ་ འཛོལ་ ཡང་དེ ། ३१८

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जज्ञे शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१९॥

རྣམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚོས་ལའོད་མིན་ །
 ལྷུང་པོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ །
 ལྷ་ཡང་ བི་བྱ་རྟུ་ མིན་ཤེས་ ། ३१९

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

ལྷུང་པར་ རབ་རྟུ་ བསྟན་བའི་སྤྱིར་ །
 ཡོན་ཏན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ མོགས་ །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།
 དེ་ནི་ བྱད་པར་ བརྗོད་པར་ འདོད། ॥ ३३०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।
 तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ བཀྲུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།
 ཅུབ་པ་མ་ཡིན་ རྗོ་བའང་མིན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།
 ས་གསུམ་དག་ལས་ རྒྱལ་བར་གྱུར། ॥ ३३१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।
 तथाप्येषा तपोभङ्गं विघातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བྱ་མོ་ མིན།
 དི་ཟེའི་ རིགས་ལས་ བྱུང་བའང་ མིན།
 དེ་ལྟ་ མེད་ཀྱི་ ཚངས་བའི་ ཡང་།
 དཀའ་ཐུབ་ བཞེས་པ་ ལྷུབ་པར་ ཉུས། ॥ ३३२

न बद्धा भ्रुकु[33b]दिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवदृष्टिर्वस्तञ्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

त्रिंशत्त्रेः दश'के' स'स्रुस' पौद' ।
स'पे' श'पे'स' ग्ग' स'स्रुद'प ।
सि'ग'ग्ग' द'स'पे' स'गु'प' ।
द'प'पे' स'स' के' स्रु'स'प'गु' ॥ ३२३

न रथा न च मातङ्गा न हया न च पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

पौद'के' स'पे' उ'द' ग्ग'पे'प' स'पे' ।
के'स'पे' ग्ग'प'स'पे'प' प' ।
स्रु'स'स'पे' ग्ग'स' स्रु'स'पे'स' ।
प'प'प' श'स'पे' द'प'प'स' ग्ग' ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयं ॥३२५॥

འཇིང་ཏྱ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་།
 ལ་ལོ་པ་ ཉམས་ ཏྱ་མི་མཉམ།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན།
 ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མཁན ॥ ३२४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ ལྷན་པར་ལས།
 འདི་ནི་ ལྷ་ཡི་ ལྷན་པར་ བརྗོད།
 རིམ་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ཉི།
 དབྱེ་བ་རྣམས་ གྲང་ བརྟག་པར་བྱ། ॥ ३२५

विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བརྗོད་ འདི་དོ་ ཡོན་ཏན་ ལྷན་འཕགས་ དང་།
 མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི།

བཟློན་ སྐད་ དོན་དུ་ བསྐྱབས་པ་ བང་ །

དེ་ནི་ མཚུངས་པར་ སྐྱོར་བར་ བཤད་ ॥ ३३०

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।

बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ ལུས་ངན་ ཚུ་ལྷ་དང་ །

མིག་སྐྱོང་བ་ དང་ བྱོན་ཉིད་ ཀྱང་ །

འཇིག་དེན་ སྐྱོང་བ་ ཞེས་པའི་ སྐྱ །

ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ ལྷས་པར་འཇིན་ ॥ ३३१

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।

क्षणद्वयन्न तिष्ठ[34a]ति घनरन्धान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་ མིག་ དང་ འགྲོགས་པ་ དང་ །

སྐྱོག་གི་ ཚེ་དགའ་དག་ དང་ བྱི །

སྐྱིན་གྱི་ ཚུམ་པའང་ སང་བཞིན་གྱིས་ །

སྐད་ཅིག་ གཉིས་པར་ མི་ གནས་སོ་ ॥ ३३०

विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

ॐ॒ण॒त्त॒ः ॐ॒व॒सु॒दे॒ः ॐ॒न॒दु॒र्गे ।
ण॒द॒दु॒ः ॒द॒त्त॒स॒वो॒ ॐ॒ण॒त्त॒व॒ः ॒क॒स॒स॒ ।
॒ण॒द॒द॒ण॒ः ॒द॒त्त॒व॒स॒व॒ः ॒द॒व॒व॒सु॒दे॒व॒ः ।
॒दे॒र्गे॒ ॐ॒ण॒त्त॒व॒ः ॒व॒सु॒दे॒ः ॒दे॒ः ॒द॒व॒दे॒ः ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

॒द॒व॒दे॒ः ॒व॒सु॒दे॒वो॒ ॒क॒स॒स॒द॒ण॒र्गे ।
॒द॒त्त॒व॒दे॒ः ॒ण॒द॒द॒स॒सु॒दे॒ः ॒उ॒त्ते॒ ॒द॒व॒दे॒ः ।
॒व॒सु॒द॒त्त॒व॒दे॒ः ॒व॒सु॒दे॒वो॒ ॒क॒स॒स॒द॒ण॒र्गे ।
॒द॒व॒दे॒ः ॒द॒द॒द॒द॒ः ॒व॒सु॒दे॒वो॒ ॒क॒स॒स॒ ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

दसुरं श्लेषं कृत्वा वैश्वं दशमं शिवां वै ।
 वसं श्लेषं प्रुत्वा दशं कृत्वा दशं श्लेषं ।
 कवशां वं शिवां कृत्वा दशं वं शिवां ।
 शिवां वै कृत्वा दशं कवशां वं कृत्वा ॥ ३३३

तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हन्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

श्लेषं वं श्लेषं वै कृत्वा दशं श्लेषं ।
 कवशां दशं शिवां वै दशं वं शिवां ।
 श्लेषं दशं श्लेषं वै कृत्वा दशं श्लेषं ।
 श्लेषं श्लेषं श्लेषं श्लेषं श्लेषं ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

दशं श्लेषं श्लेषं वै कृत्वा दशं श्लेषं ।
 दशं श्लेषं श्लेषं दशं श्लेषं श्लेषं ।

त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य । ३३८

उद्यानमारतोद्धूताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
 उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३९॥

त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ॥ ३३९

कृष्णाजुं नानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
 याति विश्वसनीयत्वं कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ।
 त्रिंशत्पञ्चमस्य त्रिंशत्पञ्चमस्य ॥ ३३७

इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।
अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'ङ्ग'र'गु'र'र'द'क'स'प' कि ।
दु'स'ङ्ग'र'दु' र'व'र'ग'स'गु ।
स'स'स' स'क' र'र'र'र'स' र'र'र'र'प' कि ।
स'स'स'सु' स'स'स' र'र'र'र'प' य'क ॥ ३३७

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।
अर्थैरयत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

स'र'र'स'र'र'र'प' र'र'र'र'र'र' ।
र'स'र'र'र' र'र'r'p' r'p'r'r' ।
र'r'p' r'p' r'p' r'p' r'p' ।
r'p' r'p' r'p' r'p' r'p' ॥ ३३८

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।
राजानुवर्त्तनकृशनिर्विषणेन मनस्विना ॥३३९॥

གྲུལ་པོའི་རྗེས་འབྲངས་ ཉེན་མོངས་པ།
 ཤེན་ཏུ་ སྐྱོ་བའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།
 སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་ཏུ་ འདིར།
 རི་རྒྱལ་ས་ སྐྱོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱུགས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
 दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གཤམ་ཏེ་ སྐྱོད་པ་ བཞིན་ བསྐྱོད་ནས།
 སྐྱོན་ ལྟར་ སྐང་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིད།
 གང་ཏུ་ ཉེ་བར་ཐོབ་གྱུར་པ།
 འདི་ནི་ རྗེས་གྱིས་བསྐྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ०

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
 त्वया राज्ञापि सैवैयं जिता मा भून्मदस्त्व ॥३४१॥

རྩ་མ་དཀའ་ཕུབ་པ་ཡིས་ གྲུང་།
 འབྲུང་བོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་གྲུལ།

इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

दे'ल्लर' छे'वर' खर्केव'प'लस ।
ल्लु'र'व'उर'द'म'ल्लर'द'म'गी ।
खे'ल'स्री'स'व'ल्ले'र'प'दे'क'स'प'क'स'स ।
द'व'दु'कु'के'ख'स'र'द'म'सु'ल ॥ ३४४ ॥

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयति यदि स्यात्तन्निदर्शनं ॥३४५॥

म'ल'दे' र'के'म'ल्लर'द'ल्लु'म'प'ल'स ।
दे'द'म'ख'र'द'स'प'दे'द'स'स'सु'द'म'ल ।
ख'के'म'म'ल' ख'के'म'स'के' ल्ले'र'सु'दे'प' ।
दे'के' दे'स'प'र'व'ल्लु'र'प' ल'के ॥ ३४५ ॥

उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥

ཉི་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ ཉི །
 སང་རྣམས་ལ་ དཔལ་སྡེར་བྱེད །
 ལྷན་ཚོགས་རྣམས་ཀྱི་ འབྲས་བུ་དག །
 ལྷོགས་པོ་རྗེས་འཛིན་ བསྟན་པའི་སྡེར ། ༢༧

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराज्ञी पराभवं ।
 सद्योराजविरुद्धानां सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

རྗེ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །
 ལྷན་པའི་སྡེར་བ་ ལྷན་པར་འགྱུར །
 འབྲས་ལ་ལྷུལ་པོ་ དང་ འགལ་རྣམས །
 བན་པའི་མཐར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ། ༢༧

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणां ।
 अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་དཀ་ལས་རྣམས་ ལྷན་ཅིག་གི །
 དངོས་པོ་ བརྗོད་པ་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད །

རོན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ།
 ཡོངས་བརྗེས་ཡིན་ཏེ་ རེ་དག་ དབེར ॥ ३༧༧

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।
 पाण्डराश्च ममैवाङ्गैः सह ताश्चन्द्रभूषणाः ॥३४६॥

རེ་ཞི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས།
 བདག་གི་དབུགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་།
 རྒྱ་བའི་རྒྱན་ལྷན་ས་རྣམས་ ཀྱང་།
 བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ རྒྱ ॥ ३༧༧

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।
 पतन्ति च समन्तेषामश्रुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མིངས་པ་ དང་།
 ལྷན་ཅིག་ རྒྱ་དའི་དོག་པ་རྒྱས།
 རེ་དག་ མཚི་མ་ དང་ མཉམ་དུ།
 མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་དག་ འབབ ॥ ३༧༠

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति सार्धं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरभिवासराः ॥३५१॥

सुभगाः सुगन्धिवनवायवः ५८ ।
कमलाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ५९ ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६० ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ॥ ३५२ ॥

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेरत्र काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेश्च किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६१ ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६२ ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६३ ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ॥ ३५३ ॥

शस्त्रप्रहारन्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हृतं तेषां यशः कुमुदपाण्डुरं ॥३५३॥

सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६४ ।
सुभगाः सुभगाः सुभगाः सुभगाः ६५ ।

དེ་དག་ བྲགས་པ་ ཀྱ་མུན་ དཀར་ །

ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་པ་ རྩོགས་ ། ༣༣

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।

पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་ལ་ །

སློན་པ་ ཤེས་བརྗོད་ ཅེས་བྱ་ དཔེར་ །

དག་ཡིད་ སློད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི་ །

སྐང་བ་ དམ་པས་ བྱིད་ལ་ སྐྱངས་ ། ༣༣

अनन्वयससंदेहावुपमास्वेव दर्शितौ ।

उपमा रूपकं[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्त्तितम् ॥३५५॥

ཇིས་འགྲོ་མེད་དང་མི་ཚོས་ཅན་ །

དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བསྟན་ །

དཔེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདྲིར་ །

གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ དེས་པར་བསྐྱབས་ ། ༣༣

उत्प्रेक्षामेद एवासावुत्प्रेक्षावयोपि च ।
नानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

एव'द्वेष'क'पक्ष' र'द्वि' ए'द' कि ।
एव'द्वेष'द'प'मी'द'द्वि'व'द्वि'द ।
ए'द'द'सृ'क'क'पक्ष'व'सृ'क'व'कि ।
सृ'क'क'द'प'द' व'द्वि'द'व'सृ' ॥ ३५७ ॥

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

ए'क'ए'क'ए'क'ए'क'ए'क'ए'क'ए'क' ।
ए'क'ए'क' ए'क' ए'क' ए'क' ए'क' ए'क' ।
ए'क'ए'क'ए'क'ए'क' ए'क' ए'क' ।
ए'क'ए'क'ए'क' ए'क' ए'क'ए'क'ए'क' ॥ ३५८ ॥

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्चिरं ।
कोषदण्डसमप्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཛེས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ།
 བརྒྱ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད།
 མཛེད་དང་ ལུ་བ་ སུ་ཚོགས་པ།
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད། ॥ ३ॣॡ

श्लेषः सर्वासु पुष्पाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयं ॥३५६॥

རང་བཞིན་ བཛེད་དང་ འཁྱོག་ བཛེད་ཅེས།
 དག་གི་ རང་བཞིན་ བྱ་དང་ བཞིན།
 འཁྱོག་པོར་ བཛེད་པ་ བསམ་ཅད་ལ།
 སལ་ཆེར་ སྐར་བས་ དབལ་རྒྱས་བྱེད། ॥ ३ॣ०

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः कान्येष्वसिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

ལྷན་དག་མཐུན་ བསམ་དགོངས་པ་ ལྷེ།
 ལྷན་དག་ ལུ་བ་པར་ བང་ བཞིན་པ།

རབ་སྐྱོར་ ལུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན།

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བརྗོད། ॥ ३५०

परस्परौपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཚོགས་ཀླུ་སྐྱོན།

ཕན་ཚུན་ ཕན་བར་བྱེད་པ་ ཉིད།

དོན་དང་ བུལ་བའི་ ལྷན་བར་ ཀླུ་སྐྱོན།

ས་བྱས་ བཞུགས་སྐྱོ་ བསྐྱེད་པ་ དང་ ॥ ३५१

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।

भावायत्तमिदं सर्वमिति तं भाविकं विदुः । ३६२

བརྗོད་རིམ་ སྐྱོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི།

ཟབ་སོ་དག་ ལྷན་ བསལ་བ་སྐྱོ།

དེ་ལྷན་ དགོངས་པ་འདི་དབང་གྱུར་ ལྱིར།

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག། ॥ ३५२

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚམས་ སྒྲིང་ ཡན་ལག་ ནང་ ।
འཇུག་བའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ སོགས་ ।
ལྷང་ གཞན་ ནག་ཏུ་ བཟོད་ འདི་ ཡང་ ।
རྒྱན་ཉིད་ཏུ་ བེ་ བདག་ཅག་ འདོད་ ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

རྒྱ་ཚེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྐྱུས་ཚད་ཏུ་ བྱུར་བ་ཡི་ ।
རྒྱན་ཚམས་ ནག་གི་ལས་ འདི་ཉིད་ བེ་རྣམ་བར་སྐྱེ་ ।
བཟོད་བའི་ཡུལ་ལས་ འདས་བར་ ཡོངས་སུ་གནས་བ་ཡི་ ।
ལྷང་བར་རྣམས་ནི་ གོམས་བ་ཉིད་ཀྱིས་ ནུབ་བར་བུས་ ॥ ३६४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སྒྲོབ་དཔོན་ • ནུབ་བ་ཅན་གྱིས་ མཚན་བ་ ལྷན་ངག་ མེ་
ཡོང་ལས་ རོན་གྱི་རྒྱན་ ཅས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་བ་ གཉིས་བའོ་ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।

यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

वरःखःकैरःदरः वरःकैरः वरःव ।

यीःमोः कौवासःवः वल्लैरःवःकि ।

वृदःवृकः वैःअदः कृदःवःयी ।

दरःवोः वरः खःप्रदः श्रुतःपुत्रःउक ॥ १

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।

आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

वःउवः वःउवः वःउवः वःउवः वःउवः ।

वृदःवृकःकृमःसःगुः कृमःद्वैःवःकि ।

वैःवःखः वरः खःप्रदः वरः ददः खःप्रदः ।

वरःददः वैःवःखः वैःवःखःप्रदः गुः ॥ ३

राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥
राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥
राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥
करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥
करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशीं ।
अवस्था नालमारोढुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

བྱིད་ལ་ དམིགས་ པའི་རི་བ་ དང་ ।
 མ་མུལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི།
 གནས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཛིག་བྱེད་པས།
 ལུང་མེད་ འཛོགས་ ལས་ ཅི་ལྟར་མིན། ॥ 23

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདྲབ་ གསར་བས་ མཛོས་པ་ཡི།
 ལྷོན་པས་ དངས་པའི་ གཞོན་ཅུ་ནསས།
 པརྒྱར་ མངོན་ ལྷོགས་ ལུང་བ་ཡིས།
 མིག་ནས་ པརྒྱང་སྡེ་ འགྲུགས་པར་བྱེད། ॥ 23

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामिषं ॥१४॥

ལྷོས་པའི་ བཞད་ནི་ རབ་འཇུག་པ།
 རྒྱང་གི་རྒྱལ་ དཀར་བ་ཡི།

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅོ་ ཡིས།
 བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟས་སྲུ་བྱེད། ॥ ༡༭

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनन्दनः ।
 सहैन्दुकलयपोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དི་གམ་ ལྷ་བའི་ཆ་དག་ དང་།
 ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།
 བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།
 མི་བཟད་དུག་གི་ ཇིས་སྲུ་འགྲོ། ॥ ༡༦

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।
 हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ ལྷན་མི་འདོད་ ཁེངས་པ་ཅན།
 རོ་ཤལ་དང་ལྷན་ འཕྲོག་བྱེད་མ།
 ལུས་མེད་ བྱོད་ཀྱི་ དང་པ་ ཉིད།
 ལྷ་གྲུང་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཚོད། ॥ ༡༧

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।
कमलं कमलं कुर्वदलिमद्वलिमत्प्रिये ॥१७॥

सुदःश्रीः शरदःशीसः वदवाः लसः सुल ।
कुःपीःसुवः सुदः सुदःवःउव ।
ददवःल्लवः वदुः वदवः शेरःलस ।
उःल्लवः शीःसुलः वदवाः दवाःदस ॥ १७

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।
वारुणीवारुणीभूतसौरभा सौरभास्पदं ॥१८॥

श्रीःशरदःश्रीसः दसरःसुदःवद ।
कुःल्लःश्रीः वल्लवः सुःदःल ।
ददवःदसरः शीसःउवः शीःवःउदसः वदवः ।
वदवाःशीः दवाःदसः दवाःदःवःसु ॥ १८

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।
व्यपेतस्यापि वप्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

དེ་ལྟར་ ཀའ་བའི་ ཐོག་མ་ཡི།
 རྩེད་ལྷན་ བར་ཚོད་མེད་ བློ་རྟོག།
 ད་ནི་ བར་དུ་ཚོད་བ་ ཡི།
 བློ་རྟོག་ འགའ་ཡང་ བསྟན་བར་བུ། ॥ १०

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

མ་ཉ་ཀུ་ར་ ལས་ འབྲུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ རྒྱ་བཟངས་ལྷན་བ་ ཡིས།
 དཔྱིད་གྱི་ ཨེ་ཆའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁིངས་བ་ ལྷ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད། ॥ ३०

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेर्ष्य कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་བ་ ཤིན་དུ་ དམར།
 ལྱེད་མངས་ལ་ བསྟན་ བློ་རྟོག་ལ་ ལ།

सुभा रीमा सुभंभसं सङ्गं वीर्यदत् ।

नं वरीऽसुभुलं प्रीसां वसुभंभुदे ॥ ३२

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।

मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

सुभं प्रीसां मरं वसुभं सुभं प्रीसां ।

सप्रदं दमां सुभं रसुभं वरं सुदे ।

दे सुसां सुभुमां स रसं वसुभं वरी ।

सुभुमां सुभं सुभं मरं दमां सुदे ॥ ३३

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।

कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेशां ॥२३॥

रसुभं सुभं मरं सुभं सुभं सुदे ।

सिदसां सुभं रसं सुभं सुभं सुभं सुदे ।

सुभं सुभं सुभं सुभं सुभं सुदे ।

सुभं सुभं सुभं सुभं सुभं सुदे ॥ ३३

गण्डुल्यं नृं नृणां यो नृणां चोत्तमः ।
 त्रिंशो लघुः स चोत्तमः त्रिंशोत्तमः ।
 सङ्ख्यं पदं त्रिंशो नृं नृणां चोत्तमः ।
 सुखं सङ्ख्यं नृणां चोत्तमः त्रिंशोत्तमः ॥ ३७

परागतहराजीव वातैर्ध्वस्ता भटैश्चमूः ।
 परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

हृदयं चोत्तमः नृणां चोत्तमः त्रिंशोत्तमः ।
 सङ्ख्यं चोत्तमः त्रिंशोत्तमः नृणां चोत्तमः ।
 सङ्ख्यं चोत्तमः त्रिंशोत्तमः नृणां चोत्तमः ।
 सुखं चोत्तमः त्रिंशोत्तमः नृणां चोत्तमः ॥ ३७

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।
 स दानवकुलध्वंसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

लोकाणां ह्यङ्गं सुखं चोत्तमः नृणां चोत्तमः ।
 सुखं चोत्तमः त्रिंशोत्तमः नृणां चोत्तमः ॥

ཚད་ལྷན་ རྒྱང་པོ་ མཚོག་ བཙུམ་པ།

ཁྱབ་འཇུག་དེས་ ཁྱེད་ ཉམ་ཏུ་ སྤྱངས། ॥ ३८

कमलेस्समकेशन्ते कमलेर्ष्यार्करं मुखं ।

कमलेष्यं करोषि त्वं कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

ཁྱེད་ཀྱི་མགོ་སྐྱ་བྱང་པ་འདྲ།

གཤོང་ནི་ པདྨར་ སྐྱབ་དོག་ཁྱེད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་ཏུ་ སམ་གྱོས་པ།

ཁྱེད་ཀྱིས་ སྤྱ་ཞིག་ ཚི་མི་བྱེད། ॥ ३९

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྱུ་ཚེ་ རིན་ཚེན་ གྱུན་དང་ལྷན།

གྱུགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་རྒྱན།

ཚུང་བ་ མིན་པས་ མཚོང་པོ་ ཞི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ བྱ་བར་བཟོད། ॥ ३०

गणतः अघोरं दण्डवत् क्षीणसंश्रुतं च ।
 दुःखं च सुखं च वदन् वदन् ॥ ३४ ॥

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।
 यामयाम धि[39b]याऽस्वत्याया मया मथितैव सा ॥३६॥

सुखं च सुखं च वदन् वदन् चित्तं च चित्तं ।
 सत्त्वं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ।
 वदन् च वदन् चित्तं चित्तं चित्तं चित्तं ।
 चित्तं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ॥ ३७ ॥

इतिपादादियमकविकल्पस्येहशी गतिः ।
 एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

चित्तं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ।
 चित्तं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ।
 चित्तं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ।
 चित्तं च चित्तं च वदन् चित्तं चित्तं ॥ ३८ ॥

न प्रपञ्चभयान्नेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

श्लोका'वसा' अक्षिण' सु'र' न'सु'व'र्षि ।
अस'न'व' व'क्षे'न'व'र' शी'अ'र'र'ने ।
ने'ल' सु'न'ग'र' अ'र'र'अ'र'र' व'र' ।
अ'व'अ'व'ि'व'न'व'र्षि' व'सु'व'न'व'र' ॥ ३८

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

व'र'व'र'र' व'र'व'र' र'व'व'र'र'र'व' ।
सु'र'र' श्लो'क'व'क्षे'न'ल'स'श्री'क'स' ।
श्लु'श्री'न' सु'र'र'र' व'ने' अ'क्षि'ण'स'व'र' ।
श्री'अ'सु'र' अ'र'र'र'र'र'र'र' अ'सु'र' ॥ ३९

सभासु राजन्नसुराहतमु'र्षैर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।

न भासुरा यान्ति सुरान्न तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཉལ།
 ཆང་གིས་མ་བཅོས་ནོར་གྱིས་ མཛེས་བས་རབ་བརྗོད་བའི།
 རྫོང་གྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྐྱེ་དགུ་ལ།
 སང་བོ་ཉིད་གྲུར་ ལྷ་རྣམས་སུ་ ཉི་མི་འགྲོ་མིན། ॥ ༧༠

तव प्रियासञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དས་བའི་སྐྱོད་ལ་བག་མེད་རྫོང་གྱི་དགའ་ས་ གང་།
 དགའ་བའི་དགའ་སྐྱོན་དགའ་བས་ རྫོང་བར་དུ་སྐྱོས་མ།
 དེ་ཡིས་ འདིར་ཉི་འོད་ལྷན་ གྲུན་རྣམས་ གཞུང་བར་འོས།
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྷན་ཉིད་གྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་མེད། ॥ ༧༡

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव दीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་རྫོང་ལྷས་དུད་བའི་རོ་ཉི་མི་མཁྱེན་དེ།
 དམན་བ་ཉིད་ དང་ མཚོག་ཉིད་ དག་ཉི་མི་མཁྱེན་དེ།

གང་ལྷིག་ དམན་པ་རྣམས་ ཉི་ བྱིད་ལ་མགོས་ འདུད་ཅིང་ །
 དེ་དག་ ཁོ་ན་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཚོག་ཏུ་ བྱུ །། ༧༢

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।
 व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོ་ལ་པའི་འཇུ་མ་ དཀར་ དང་ ཉི་ འཇུ་པོར་སྐྱེ་བ་ དང་ །
 རྒྱང་རྒྱུ་ལྷ་བ་ དང་ཉི་ ལྷི་པའི་འགྲོ་བ་ དང་ །
 ཀུན་ཏུ་སྐྱེ་ལ་ དང་ རོ་ ལྷ་ན་དག་ ལྷོན་པ་ དེས་ །
 བསྐྱེན་པ་ དེས་ ཉ་ བདག་ཉི་ འཚོ་བས་ དམན་པར་བྱུང་ །། ༧༣

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।
 भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དཔལ་ལྷན་ མི་ཤོང་ བརྟན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་ཉི །
 འཚོ་མེད་ལམ་དང་ མཉམ་པའི་ཚད་ལྷན་ རབ་དུད་པའི །
 འགྲོ་བ་རྒྱས་བྱེད་ མཚོད་ལྷན་ ཚད་མེད་ མིང་ཅན་ཉི །
 འཇུ་བྱེད་ ཚད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ ལྷག་དག་མཚོད །། ༧༤

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुरुसारधरा तं ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

सत्तुन'ल' लुमस'ने' सुन'मीस' नम'न'सुन'तेन' ।
श्रीन'सो'सुन'न'दी' सत्तुन'न'न' न'न'न'न'न' ।
म'ल'न'सु'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न' ।
नेस' न' सत्तुन'न'न' श्रीन'सो'सुन'न'न'न'न'न' ॥ ८४

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाश्रितान् ॥४६॥

सत्तुन'सु'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न' ।
सु'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न' ।
म'ल'न'सु'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न' ।
सु'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न'न' ॥ ८५

[40b]रवेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीरवेरवेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
रवेरिवोग्रस्य पुपे हरेरवेरवेत तुल्यं रिपुमस्य भैरवे ॥४७॥

མཚོངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྷན་ གཡུལ་དུས་སྐྱེས་ནི།
 རྒྱལ་མཚན་ལ་ གནས་ དབང་པོ་ བྱ་ཡི་ རྣམ་ཡིས་ སྐྱོས།
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བརྒྱན་བའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཇིགས་ཅུང་ གཡུལ་ ལ་ དགའ་ནི་ལྷག་དང་མཚོངས་བར་རིག། ༧༧

मयामयालभ्यकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयार्त्तिं निशयाऽमयामयामयामयामूं करुणामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ ལྷན་ལྷན་ དབང་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ཉི་ བརྒྱན་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བརྟེན་པ།
 ཚ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉན་ཅན་ འབྲུལ་བའི་ ཉན་གྱིས་ གཟུང་།
 རྣམ་ལྷན་མ་ འདི་ ལྷིང་རྒྱུ་རང་བཞིན་ འབྲུལ་མེད་ མཚོད། ༧༨

मृतांधुनानारमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལུང་མེད་ རྩོད་གྱི་ རྣོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བརྒྱུག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ ལྷ་མེད་ རྗེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

श्रुंष'स'रिं' ऋष'स'य' श्रु'वर'स'क'स'गु'र' सु'द'भे'द'रे'स ।
व'द'स' श्रु'द' स'सु'र' व'द'स'स'ि' श्रु'स'स'स' श्रु'व'य' ।
रु'द'र' सु'र'रु' श्रु'स'भे'द' द'स'स'ी'स' स'गु'र' गुर' गुर' ।
व'द'स' श्रु' र' र'रु'श्रु'द' स'गु'र'स'रु'श्रु'द'रु' स'स'स'र'रु' ॥ ५३

अथाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य भेदास्त्रयो मताः ।
पादाभ्यासोऽप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

श्रु'द'स'स' य'द'द'स'स'सु'र'स'य' ।
र'रु'श्रु'द' र'श्रु'व' स'सु'स'रु' र'रु' ।
श्रु'द'स' स'सु'स'स' र'द' र'ु'स' य' ।
व'द'स' श्रु'द' र'े'द'स' र'स'स'स'स'स' ॥ ५३

नास्थेयःसत्वया वज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वज्यः परमायतमानया ॥५४॥

श्रुताः सु वदन् वदन् श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ ४८

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ ४९

कलापिनां चास्तयोपयान्ति वृन्दानि लापोदघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोदघनागमानां कलापिनां चास्तयोऽप[41b]यान्ति ॥५६॥

श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।

ལྷུང་གི་ཚོགས་སྐྱུལ་ ལྷུང་གི་ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ལྷུང་གི།
 ཚོགས་ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ॥ ५७

न मन्द्याऽवर्जितमानसात्मया नमन्द्याऽवर्जितमानसात्मया ।
 उरस्युपास्तीण्णेपयोघरद्वयं मया समालिङ्गयत जीवितेश्वरः ।।५७।।

ལྷུང་གི་ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ॥ ५८

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
 स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८ ॥

ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི།
 ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ལྷུང་གི་ ལྷུང་གི། ॥ ५९

कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तद्वते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणने भवन्मुखे कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

शुभ्र'स'र'शु'र'र' लु'स'स'र'र'र'र' वु'म'र'र'र'र' ।
सु'र'र'र' म'र'र'र' सु'र'र'र' म'र'र'र' र'र'र'र' ।
र'र'र'र' लु'स'र'र' सु'र'र'र'र'र' सु'र'र'र'र' ।
म'र'र'र' म' र' र' र'र'र'र' र'r'र'र'r'r' ॥ ५७

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

सु'र'र'र'र' र'r' सु' सु'र'र'र'र'र'र' सु'r'r'r'r' ।
म'r'r'r'r'r'r'r'r' र'r'r'r'r'r'r'r' सु'r'r'r'r'r'r' ।
सु'r'r'r'r'r' r'r'r'r'r'r'r' सु'r'r'r'r'r'r'r' ।
र'r'r'r'r'r'r'r'r' सु'r'r'r'r'r'r'r'r'r'r' ॥ ७०

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्चितं ।
शृणुक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चितं ॥६१॥

ཨྲན་ལྷན་ བདག་ལ་ བན་བའི་ཚོག་ གཅིག་ གསན་བར་མཛོད་ །
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་བ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས་ །
 ས་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛོན་ དེ་སྤྱིར་ ས་གཞི་འཛོན་ །
 དང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་བ་ རྒྱས་བར་ ཡོངས་མ་བྱེད་ ॥ ༤༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་བའི་ མེ་གང་ ཁེངས་བས་ དབ་བསྐྱབས་བ །
 རྣམ་ཅིག་དང་མཉམ་རྒྱས་དེས་ བརྒྱའི་མིག་ །
 རོ་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ མི །
 རྒྱན་ནས་ ཉམས་བ་ ཉིད་ཏུ་ ཅིས་མི་བྱེད་ ॥ ༤༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासीत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུད་ ཁྱོད་མི་ འཛིག་རྟེན་ བདག་གྱུར་ ཚོ །
 མཐུ་ཡིས་ མཐུ་ལྷན་ རོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་བ །

དེ་སྒྲིང་ གསར་པའི་ བརྒྱུ་ལྷན་ མཚོན་སྒྲིབ་ནི།
 དེས་པ་ཉིད་ཏུ་ ཚད་པར་ས་གྲུང་རོ། ། ༤༩

परम्पराया बलवा रणानां धूलीस्थिलीव्योस्त्रि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དཔྱུང་གི་ གླང་པོ་ལྷན་ས་ནི་ གཞན་ དང་ གཞན།
 ལྷོབས་ལྷན་ ལྷོགས་ དབ་ཏུ་ བརྒྱུ་པ་ཡིས།
 ཐང་ལ་ ཏུལ་ བརྒྱབས་ ལྷན་ས་ཁམའ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་ལྷོབས་ བརྒྱུ་མཚོན་ཏུ་ གཞན་ལ་ བྱུག། ། ༥༠

न श्रद्धे वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

ཁྱོད་ལྷ་ མཉམ་པར་ས་བཞག་ མིད་པར་ ཉི།
 ལྷན་གཉིས་ མི་མཉམ་ ཐན་པ་མེད་ ལྷན་ས་ ཚོག།
 ལོག་པར་གྲུང་པ་ ལྷོག་བྱེད་ མི་མཉམ་པ།
 ལྷོག་ བཤོད་ མཚོན་ས་ལ་ མི་དད་ རོ་ཚ་མེད། ། ༥༡

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དགྲ་ཡི་ མངོས་ འཛོམས་ རྒྱལ་པོའི་སྡེ་ཡིས་བདུད །
ཨ་མས་ བཞ་བ་ དབལ་རྒྱ་ མེད་མིན་སྡེ །
མི་འདུད་ ལོ་བལོས་ མཚོད་ཕོབ་ རྒྱལ་མེད་བ །
སྐྱེས་མཚོག་ རྗེ་པོ་དམ་བ་ མི་མངོས་མིན ॥ ६७

सकृद्द्विस्त्रिश्च योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀྱང་བ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་བ་ བསྟན །
ཚོགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལྷན་བའི་དོན །
ཚོགས་བཅད་ བརྒྱས་བ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར ॥ ६८

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥६८॥

लस्र्णरुं सुसुवदरुं लसुवुतु ।
 सुसुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ॥ ७५

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ॥ ७७

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वयं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

सुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।
 सुसुसुसु सुसुसुसुसुसुसुसु ।

དེ་ལ་འང་ བརྒྱས་པ་ མཐོང་སྡེ་ དེ།
 རྒྱང་ལྷན་ བྱ་བ་ བཞུན་ ཡིན་ནོ། ། ༥༠

समानयास मानया समानयासमानया ।
 समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དབལ་ལྷན་ མཚུངས་མེད་མ།
 ཁྱིམ་ལྷན་ ལལ་བ་ དག་དང་ནི།
 ཁྱིམ་པ་མཉམ་ལྷན་ རྒྱལ་མེད་དག།
 དོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སུ་རྒྱག། ༥༡

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा महीं पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।
 क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འདྲིན་མ་ འདྲིན་པའི་རྣམ་འདྲིན་ འདྲིན་མ་སྡོད་རྣམས་ཀྱི།
 ལག་པ་རྣམ་གཞོན་ མི་དམན་ འསྐལ་ལ་ དག་འདྲིམས་པ།
 ལྷུང་བ་དང་ལྷན་ མཚོད་པའི་ ཁྱེད་ནི་ བརྒྱེན་པ་ ཡིས།
 ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་པས་ བསྐྱང་བར་ བརྗོད་ པ་ཡིན། ༥༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

गदः सुदं कौमसः वडनं सुदं सुप्रयः उव ।
लुमसः लसः वल्लेमाः वः वल्लेनः वः ३ ।
लुमः लुवः लुमसः लसः वल्लेमाः वः सुदं ।
लुमसः लसः वल्लेमाः वः लिसः वः वः ॥ ७३

या मताश कृतायासा सायाता कृशता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

मदः लः रवदः सुसः सुः सुः सुदं ।
देः सुः वदमः सुसः सुवः सुदं वः ।
रः रदं सुदं सुसः सुदं सुदं सु ।
वल्लेनः वः सुवः सुदं रदं सुदं सुदं ॥ ७४

नादिनोऽमदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

ལྷ་དྲ་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ ལྷོ།
 ལྷོས་མིན་ འདོད་པ་ འགའ་ ཡང་མེད།
 དུལ་བ་ འཛོམས་པའི་ འདོད་པ་ ཡིས།
 རང་དབང་ གདུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད། ॥ ༧༥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགྲོ་ བདུད་སྦྱོང་ ལྷག་མི་དམན།
 གང་ཞིག་ དབང་གུར་ ལྷོ་པོ་ འཛོམས།
 གང་ལ་ བདག་སོང་ ལྷོ་པོ་ བསྐྱེད།
 དབང་གུར་ དེ་ལ་ ལྷོན་ ཞེས་ ལྷོས། ॥ ༧༦

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

ལྷོན་ འདི་ ཡིས་ནི་ གཟེར་གུར་ཅིང་།
 ལྷོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ བློ།

ཉིན་མོའི་ བང་དག་ མ་ཐོབ་ མིན།

མྱ་ངན་ འབྲེལ་ སླད་ བེངས་མ་བྱེད། ॥ ७१ ॥

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་ ཀྱི་ཡི་གེ་ བསམ།

གཅིག་གིས་ བར་ཚོད་ གཞུགས་གཅིག་ཉིད།

དེ་ནི་ བྱ་དགའ་ དེ་ཉིད་ སྲིག།

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སློ་ མྱེ་ དཔེར། ॥ ७२ ॥

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गाखोजये दयं ।

मदेनो यदि तत् क्षीणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདའི་ མིག་ལྡན་ ཟུར་མིག་གི།

མཚོན་ ཀྱིས་ འདོད་པ་ འདི་གྲུལ་ ཏེ།

གལ་ཏེ་ བདག་གྲང་ མྱིག་ཟད་ ན།

འདོད་པ་ ལ་ནི་ བྲལ་མོ་ སློར། ॥ ७३ ॥

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

गण'तः केश'स'व'त' सु'त' अ'सि'र'व' ।
सु'त'तु' अ'सि'र'व' त्रि'स'स'र' व'ह'त' ।
गण'तः गुरु'त' अ'सि'र'व' ।
गुरु'त' व'ह'त' त्रि'स'स'र' अ'सि'र' ॥ ८०

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

म'तु'त' अ'सि'र'व' सु'त' अ'सि'र' ।
सु'त' त्रि'स'स'र' म'तु'त' अ'सि'र' ।
अ'सि'र' क'त' न'स'म'सि'र' अ'सि'र' ।
अ'सि'र' अ'सि'र' व'द'म'त' अ'सि'र' अ'सि'र' ॥ ८१

सामायामायामासामारानायानारामा ।
यानावारारावानायामायारामारयामा ॥८२॥

མེངས་སྐྱོད་ ཅད་དང་ དགའ་དང་ མེངས། །
 དག་བའི་ ལྷལ་དུ་ སེམས་ འདོད་རླུང་ ॥ ༤༥

श्रितिविजितस्थितिविहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।
 उरु रुधुर्गुरुं दुधुतुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་གྲུལ་ བདུན་པ་ ལྷུབ་བྱེད་བའི། །
 བདུལ་ལྷུགས་ལ་དགའ་ མཚོག་ རྟོགས་ ཀྱ་རྩ་བས། །
 གལ་ལྷུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི། །
 ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས། ॥ ༤༥

श्रीदीप्ति ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
 पथेते ह्रे ह्रे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དབལ་གཟེ་ རོ་ཚ་ ལྷུགས་ དང་། །
 ལྷོ་ལྷུགས་ ཚོག་ དང་ དགའ་དག། །
 ལྷོ་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་། །
 འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད། ॥ ༤༦

सामायामामाया मासा मारानायानारामा ।
यानावाराराचानाया माया रामा मारयामा ॥८७॥

ནད་རིང་ མིན་བའི་ དགའ་ མ་གང་ ।
བདུད་རྒྱུང་ མ་རྒྱུང་ བཤོད་ བརྗོད་མ། ।
སྤྲོ་མེད་ སྤོམས་ལྷན་ སྐྱུ་གནས་ཏེ། ।
ལན་ཅིག་ ལྷན་ཅིག་ འཚོ་སྤྲོད་དུའོ ॥ ८७

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।
अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

འབྲིན་བྱེད་ ཀྱུན་དགའ་ སྤྲོད་བྱེད་མ། ।
སྐྱུ་སྐྱུང་ ཚོགས་ རྣམས་ དག་གི་གནས། ।
སྤྲོ་མེད་ མཁའ་ལ་ ལུས་ཅན་མ། ।
ལན་ཅིག་ མིག་ནི་ སྤྲོད་བར་མཛོད། ॥ ८८

अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि ।
आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

ବୁଝୁଣୀ ଗୁଣି ମନେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ।
 ରାଜିନୀ ସୁଦେବୀ ଶ୍ରୀ ।
 ରାଜିନୀ ସୁଦେବୀ ଶ୍ରୀ ।
 ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ॥ ୧୦

ଅନଳଳକ୍ଷ୍ମୀନାଲକ୍ଷ୍ମୀନାତକ୍ଷ୍ମୀ ସଦକ୍ଷ୍ମୀ ।
 ସଦାନନ୍ଦ ସଦାନନ୍ଦନାତକ୍ଷ୍ମୀ ସଦକ୍ଷ୍ମୀ ॥ ୧୦ ॥

ଦୁଃଖୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ।
 ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ।
 ସଦକ୍ଷ୍ମୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ।
 ରାଜିନୀ ସୁଦେବୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ॥ ୧୦

ଅଗା ଗାଂଗାକାକାକାକାହକାଧକକାକାହା ।
 ଅହା[44b]ହାଂଗ ସ୍ୱଗାଂଗାକାକାକାକାକାକା ॥ ୧୧ ॥

ଦୁଃଖୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ।
 ରାଜିନୀ ସୁଦେବୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ।

सूरिः सुरसुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

बासस'स' ह्र' द' ह्र'भैव'ल ।
दस्र' ह्र'वस'ह्र'व'पदी' व्रि'व'मेगस'उव ।
ऊ'गो'र'ह्र'व' म'पे'ल'द'ह्र'व' रे ।
व'व'द'गु'ह्र'ह्र'व' स'ह्र'व' स'द' ॥ ७८

नूनं चुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनेनानानिनो निनीः ॥६५॥

द'द'प'स' स'द'म'उ'म'क'स'स'गु' व'व'व' ।
व'व'व'गु'स' द'स'प' स' व'उ'स' स'व' ।
स'द'म'स'ो'म' स'ि'द'स'व' द'द'द' स'ो'र ।
ह्र'व' स'ु'स'स'व' ह्र'ि'म'उ'व' द'स' ॥ ७९

इति दुष्करमार्गोपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

རེ་ལྟར་ བྱ་ དཀའི་ལས་ལ་ ཡང་ །
 རིས་པ་ རྒྱུ་ཟད་ ཀུན་ཏུ་ བསྟན་ །
 བཀའ་ཚིག་དཀའ་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །
 ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ། ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्ञौराकीर्णमन्त्रणे ।
 परव्यामोहने चापि सोपयोगाः प्रहेलिकाः ॥६७॥

ཚེད་མོའི་ འདུན་ སར་ བཞད་གཏོ་དང་ །
 དེ་ཤེས་ ཚོགས་སུ་ བསང་ སྐྱེ་ དང་ །
 ས་རོལ་ ཀུན་ཏུ་ རྒྱུངས་བྱེད་ལ། །
 བཀའ་ཚིག་དཀའ་ བྱི་ ཉེར་མཁོ་ལྟན། ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।
 वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रूढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཚོགས་མཚམས་ སྐྱེར་བས་ དོན་སྐྱེས་པ། །
 ཀུན་ཏུ་ ཚོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཞེད། །

གཞན་ལ་ བྲགས་པའི་སྐྱ་དག་གིས།
གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྐྱ་བྱེད་ཉིད། ॥ ༩༨

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।
सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्वोधार्था पदावली ॥६६॥

སྐྱ་བ་ ལྷན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས།
སྐྱ་བྱེད་ རིས་པ་ བྲལ་བ་ ལྟ།
གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀར་བ་ ཡི།
ཚོག་སྲིང་ དེ་ནི་ རབ་བཅོས་ཡིན། ॥ ༩༩

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।
परुषा लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བྲགས་པའི་རོན་ བཞོད་ ཚོག་དག་གིས།
བསྐྱབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་བརྒྱགས།
མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཅེས་ རིས་ཚོག་ དང་།
སྐྱ་བའི་ཚོག་ ནི་ ཅུབ་མོའོ། ॥ ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

मदन्तु मन्त्राण्डिषां गुणैर्दत्तां वर ।
मुदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ।
मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ।
मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ॥ १०१

सा नामान्तरिता यस्यां नाम्नि नानार्थकल्पना ।
निवृता निवृतान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ।
मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ।
मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ।
मदन्तु मन्त्राण्डिषां उदन्तु मन्त्राण्डिषां ॥ १०२

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

क्ख'सुदस' सु'के' वगेद'स' यीस ।
 वसुवस'स'दस'के' वसुव'स'दे'सु ।
 वद'वेस' वदे'के'सुस' दे'के' वसुव'स' यद' ।
 के'दस' सु'द' दे'के' के'दस' वे'स'सु ॥ १०३

योगमालात्मकनाम यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रितं व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

वद'स' सु'द'सु'द' वद'स'के'द'उक ।
 दे'के' ये'दस'सु'द'के'स' उे'स' सु ।
 वद'सु' दे'के'के' सु'स'सु'स'दे ।
 वदे'के'स' वस'स'स' वदे'के'स' वसु'वस'स'दे ॥ १०४

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 संकीर्णनाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

वद'सु' वदे'के'स' सु'स'सु'द'स' ।
 दे'के' वदे'के'स' वसु'वस'स'दे ।

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ ལྷ་ཚོགས་ འདྲིས་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདྲིས་ ཞེས་བུ ། ༡༠༧

एताः षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
 दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གང་ཚོགས་ བཅུ་དྲུག་ལྟེ །
 ལྷོན་གྱི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ བསྟན་ །
 གང་ཚོགས་ ངན་པ་ བཞུན་དག་ ཀྱང་ །
 བཅུ་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད་ ། ༡༠༨

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।
 साध्वीरेवामिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །
 ལྷོན་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བུ་མིན་པར །
 རིག་ནས་སྐྱེར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས །
 ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བུ ། ༡༠༩

न मयागोरसाभिन्नं चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

नमया'गीसा' व'लन' र'सोमसा'गुसा ।

येसा'य' मेद'ल' उ'क्षन' सि ।

गकसा'खीक'रु'य' र'द'येसा' के ।

उ'सुन' गुक'रु' खीसा'दसर'स ॥ १०८

कुञ्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
नैवं निर्विशतो नारीममरस्त्रीविडम्बिनीः ॥१०९॥

गुव'वखेक'य' सिद'गु' के ।

नमर'य' वी'रु' र'सेल'गुन'य ।

र'के'मेद'सु'के'र' उ'र'द'स ।

खी'खी' सुन'यसा' दे'रु'खीक ॥ १०९

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकरटके ।
मुखं वल्गुरवं कुर्व्वंभुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

पुं० वरं० रं० पुं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ॥ ११०

ख्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फातवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

पुं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ॥ १११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।-
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।
 वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० वरं० ।

འཕྱི་ལོང་ ཡལ་འདབ་ ལྷ་བ་ ཉི །

སྐྱེད་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ ११३

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिर्षा ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरि सरसि संप्रति ॥११३॥

ཆང་མ་རྣམས་ ཉི་ ཆང་ཁང་དུ །

སོ་ཡི་འོད་ཀྱིས་ ཅི་ དགར་ འཁྱམས་ །

ད་ཉི་ ལྷོས་པར་བྱས་ དེ་རྣམས་ །

ཆང་གི་རྫོང་ལུར་ བྱིང་བ་ བཞིན། ॥ ११३

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णाविभूषिता ।

अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྐྱ་ལྷན་དབྱས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས་ །

ཡོངས་སུ་རྣམ་པར་བརྒྱན་བ་ཡི། །

གྲོང་ཁྱེར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན། །

མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད། ॥ ११ॣ

རྣམ་གྲུབ་ མི་ནི་ བཏང་བྱས་ནས །
 རོར་ལྷན་ནམས་ཀྱི་ བཤོད་པ་ བང་ །
 ལྷ་ཚོགས་ཀྱི་བ་བསྐྱས་འཇིག་རྟེན་འགྲུགས །
 བཟང་དཀར་ ལྷན་འཚོང་མ་ ཡིན་ནོ ། ॥ ११७ ॥

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वयः ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

ལྱོད་ཀྱི་ ས་མེན་ མིང་ འཕུན་པང་ །
 རབ་གྱུར་ ལྷ་ མིང་ཅན་ལས་ཀྱུལ །
 དེ་ཡིས་ དིང་ བདག་ མཚོག་ཏུ་ནི །
 མེད་ལྷན་བྱེད་དོ་ ལྷན་སྐྱོགས་མ ། ॥ ११८ ॥

शयनीये परावृत्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་ལྷན་དག་ནི་ མལ་ལྷན་ལ །
 ལྱོ་བས་ ལྱིར་ བཟོག་ ཉལ་བར་གྱུར །

ཆགས་པས་ དེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ།
 དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ ལྷོང་ ॥ ११७

विजितान्नमवद्रेषिगुरुरपादहतो जनः ।
 हिमापहामिन्नधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་རྒྱལ་ ཟས་སྦྱེས་ དག་ཡི་ནི།
 ལྷོ་མའི་འདྲ་གྲིས་ བཅོས་ ལྷོ་པོ།
 ཁ་འཛོམས་ ལྷོགས་མིན་ འཛོན་པ་ཡིས།
 ལྷུབ་པའི་མཁའ་ལ་ མངོན་པར་དགའ། ॥ ११९

न स्पृशत्यायुधं जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।
 अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནས་ཡང་ མཚོན་ དང་ ལྷུབ་མེད་གྲི།
 ལྷོ་མའི་ དྲླུལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག།
 མི་ས་ཡིན་ས་ འགའ་ཞིག་གི།
 ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ་ ལོ། १२१

केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।
लब्ध्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

सु'र्वै'ण' ष'ण' द'ण' अ'र्णो'ण'ण' ष' ष'ण ।
सु'ष' ष'ण'ण'ण'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ।
ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ।
ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ॥१२३॥

सहया सगजा सेना सभटेयन्न चेज्जिता ।
अमात्रिको[47a]र्यं मूढः स्यादक्षरक्षश्च नः सुतः ॥१२३॥

ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ।
ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ।
ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ।
ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण' ष'ण ॥१२३॥

सा नामान्तरितामिश्रा वञ्चितारूपयोगिनी ।
एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरक्रमः ॥१२४॥

དེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུམ་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ བཞུགས་དང་ལྡན།
 དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ བཞུགས་ གྱི་ ཡང་།
 འདུམ་པའི་ རིམ་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ १२८

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥१२४॥

དོན་ཉམས་ དོན་འགལ་ དོན་བཅུག་པ།
 མེ་ཚོམ་ཅན་ དང་ རིམ་པ་ཉམས།
 ལྷ་དམན་ འལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 ལྷོ་བ་ལྷོ་བ་ཉམས་ དང་ མཚོམས་ལྷོ་བ་བྲལ། ॥ १२४

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः ॥१२६॥

དུལ་དུས་སྐུ་ཅལ་ འཇིག་རྟེན་ དང་།
 ལྷང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྡེ།

शुभं सत्त्वं देवमाः शुभं दमाः ।

शुभं दमाः सत्त्वं शुभं सत्त्वं ॥ १२७

प्रतिज्ञाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन किं फलं ॥१२७॥

दमाः सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं दमाः शुभं सत्त्वं ।

शुभं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं शुभं सत्त्वं ।

सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं ।

शुभं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं शुभं सत्त्वं ॥ १२८

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं ।

देवो देवो शुभं सत्त्वं शुभं सत्त्वं सत्त्वं ।

शुभं सत्त्वं शुभं सत्त्वं शुभं सत्त्वं ।

सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं ॥ १२९

འག་གཅིག་ གས་ནི་ རྒྱལ་ལ་ ཡང་ །
 ལྷ་མ་ རྒྱ་མ་ གཞན་ འཛོམས་པ་ །
 འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་ཀྱི་ རྒྱུན་ །
 རོན་ འགལ་ ཞེས་པར་ རབ་དུ་བརྗོད་ ། ༡༣༡

जहि शत्रुकुलं कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དགྲ་ རིགས་ མཐའ་དག་ འཛོམས་པ་ དང་ །
 ལྷ་ཚོགས་ ཁྲར་ འདི་ རྒྱལ་གྲུར་ཅིག་ །
 འགྲུང་བོ་ རྒྱལ་ལ་ བརྗེ་བ་ཅན་ །
 རྒྱོད་ལ་ དགྲ་ནི་ རྒྱ་ ཡང་ མེད་ ། ༡༣༢

अस्ति काचिद्वस्था सा सामिषंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदमिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྷན་ སེམས་ལ་ནི་ །
 ལྷ་བས་ རི་ འགའ་ཞིག་ ཡོད་པས་ན་ །

གང་ལ་ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཚོག་ ཀྱང་ མངོན་བར་ འདོད་བར་ འགྱུར་ ། ॥ १३३

परदारामिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བྱད་མེད་ལ་ མེད་པ་ །

འཕགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས་ །

དེ་ཡི་ མོ་སྐྱིད་ གཡོ་བ་ དག་ །

བདག་ནི་ བས་ཞིག་ འགྱུར་འགྱུར་ རམ་ ། ॥ १३ॣ

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཉིད་ དམ་ནི་ སྐྱེ་ལ་ ཡང་ །

བྱད་བར་ མེད་པ་ སྐར་ བརྗོད་པ་ །

གལ་དེ་ སྐར་ཡང་ རབ་བསྐྱབས་པ་ །

དེ་ ཉི་ རོན་ གཞིག་བར་ འདོད་ དཔེར་ ། ॥ १३५

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्वियः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिल्लवः ॥१३६॥

श्रीद'घ' श्रीद'घुद' सु'खे'कमस ।
दे'यी' लक'सुदे' दे'वे'उक ।
छु'द'के'क' श्लो'ग'द'द'ल'क'घ'के ।
उव'खे' क'क'ल'ग'स' दे'द'ग'गो ॥ १३६

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

हे'स'सु'घ'के' खो'ग'स' सु'द'घ'घ' ल'स ।
ग'ल'दे' द'ग'द'ल'ग' व'के'द' दे'दे' क' ।
ल'द' व'के'द' ल'खो'ग'स' श्लो'क'ल'द'दे ।
दे'दे'के' सु'क'दु' दे'ग'स'घ'ल'के ॥ १३७

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས།
 བྱད་མེད་ མཚོག་ དེ་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་ཀུན་མཛེས་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྐྱོགས་མ་ བཅོམ་པར་གྱུར། ॥ 232

निष्कर्णयार्थम्प्रयुक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवासौ ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

ཇིས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱུར་བའི།
 ཚོག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གལ་དེ་ན།
 བེ་ཚོམ་ སྐྱེད་པར་བྱེད་ ཅ་ འདི།
 བེ་ཚོམ་ཅན་ ཞེས་ རབ་དུ་བཤམ། ॥ 232

मनोरथप्रियालोकरसलोलेश्चणे सखि ।
 आराद्रृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དྲགའ་བ་ ལྷ་བ་ ཡི།
 རོ་ལ་ མིག་གཡོ་ བྲོགས་མོ་དང་།

शुभं च ननु वाचते सः सः नरेषु ।

नरेषु च वाचते सः सः नरेषु ॥ १००

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।

स्यादलंकार एवासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१

नरेषु च वाचते सः सः नरेषु ।

वाचते न वाचते सः सः नरेषु ।

नरेषु च वाचते सः सः नरेषु ।

नरेषु च वाचते सः सः नरेषु ॥ १०१

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्कितं तामनिन्दिताम् ।

कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥१४२॥

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्कितं तामनिन्दिताम् ।

कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ।

कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ।

कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥ १०२

कामान्तां घर्मसन्तप्तेत्यनिश्चयकरं वचः ।
युवानमाकुलीकर्तुमिति दूत्याह नर्मणा ॥१४३॥

अदेरं वस्य वक्त्रेन रस्य कं वस्य वदुदं ।
लेस्य वं देस्य खेदं सुदं वदे क्वेव ।
उदे अकेस्य सुस्य वं अमुस्य वसं के ।
मु सुदे वं उ खेस्य सुस्य वं ॥ १०३

उद्देशानुगुणोऽर्थानामनुदेशो न चेत्कृतः ।
अपक्रमाभिधानन्तं दोषमाचक्षते बुधाः ॥१४४॥

अदेरं वदुदं देस्य सुस्य वसुदं वसं के ।
वदं दें देस्य वदुदं वं वदुदं वं ।
देस्य वं उदस्य वसं अदेरं वदेरं वदे ।
सुदेरं दें के वदं दें वदं ॥ १००

स्थितिनिर्माणसंहारहेतवो जगतामजाः ।
शम्भुनारायणाम्भोजयोनयः पालयन्तु वः ॥१४५॥

२१००'व'क'क'स'गु' म'क'स'व' २२ ।
 ११००'द' २२'व'गु' म'क'स'व' ।
 २१००'द' १२'व'द' ११००'गु' ।
 ११००'व'क'क'स' ११००' ११००' ॥ १२० ॥

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।
 क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

२१००'व' २१००'व' २१००'व' ११००'गु' ।
 ११००'द' ११००'द' ११००'गु' ११००' ।
 ११००'व' ११००'गु' ११००'क'क'क'व' ।
 ११००'व'क'क'स' ११००' ११००' ११००' ॥ १२० ॥

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।
 आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

११००'व'गु'द'व' २२' ११००'गु'द'द' ।
 ११००'गु'द' ११००'व' ११००'व' ११००' ।

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉེན་མོངས་ རིང་ །
 བར་མ་ ལྷན་ཅེག་ གཏུང་བ་འོ །། ༡༦༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
 पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཚོན་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལམ་ མ་མཚོན་ །
 ཚོག་སྐྱོར་ མཚོག་གིས་ མི་འདོད་བ།
 ལྷ་ཉམས་ ཡིན་དེ་ མཚོག་རྣམས་ དག །
 འདོད་བ་ ཉིད་མི་ ལྷོན་ མ་ཡིན་ །། ༡༦༨

[49a] अवते भवते बाहुर्महीमण्णवशक्करी ।
 महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ ལྷ་མཚོའི་ ལྷོ་རགས་ཅན་ །
 ལྷལ་ཚེན་ ཁྱོད་ལ་ དཔུང་བ་ ལྷུང་ །
 ཞེས་བ་ ཤེས་འདོད་ མེད་བས་ན་ །
 ཚོག་ འདི་ལ་ མི་ ཉམས་ ཡོད་མིན་ །། ༡༦༩

दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
 कुरुते ललिताधूतप्रवालांकुशरोभिः ॥१५०॥

कुं'यी' री'लस' कुं'वदु'न'सदि ।
 कुं'वी'स' कुं'रु'रि'क'न'सु'न'के ।
 री'ल'स' कुं'रु'न'स' कुं'रु' यी ।
 कुं'सु' स'रु'न'स' कुं'रु'न'स' कुं'रु' ॥ १५०

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालसचेतसां ।
 अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

उ'रु'स'स'स' व'सु'न'स' व'सु'न'स' कुं'रु'के ।
 कुं'रु' व'सु'न'स' स'स'स'स'स' ।
 कुं'रु'स'स' व'सु'न'स' कुं'रु'के ।
 कुं'रु'स'स' कुं'रु'के व'सु'न'स'स'स' ॥ १५१

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
 तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्भेजनं यथा ॥१५२॥

ཚོགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་བའི་གནས།
 ཚོག་གི་གཅོད་མཚམས་ བལ་བསོ་རིག།
 དེ་ཉམས་ གཅོད་མཚམས་ ཉམས་པ་ ཟླ།
 ཉན་པ་ དགའ་མེན་ རྒྱུད་དེ་ དཔེར། ॥ ༡༧༩

स्त्रीणां संगीतविधिमयमादित्यवंशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यक्लिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वीं वहति नृप इत्यस्ति चौष प्रयोगः ॥१५३॥

བུད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བཅོད་བའི་ཚོག་ རོ་ཉམས་
 མེད་པ་འདྲིར།
 མཚོག་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་དབང་ ཉི་མའི་རིགས་
 འདྲིས་ ལྷ་བྱེད་ ལ་སོགས་ རྒྱུན།
 བུ་དང་ བུ་མེན་ མ་ཚང་མེད་ལ་ ལྷང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
 ལྷ་བྱེད་ཅིང་།
 མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གྱུར་ ས་འཛིན་
 ཅེས་པ་ དེ་ལྷང་ རྒྱུད་པ་ཡིད། ॥ ༡༧༩

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

त्रिंशत् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
श्रुत्वात् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
द्विंशत् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
केषांश्वरं श्रुत्वात् ॥ १५५ ॥

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुञ्जते ।
ध्वजिनी तस्य राज्ञः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५६॥

द्विंशत् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
श्रुत्वात् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
श्रुत्वात् केषांश्वरं श्रुत्वात् ।
द्विंशत् केषांश्वरं श्रुत्वात् ॥ १५७ ॥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्विघ्नवृत्तं स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५८॥

བང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང་ ।
 ལྷི་ཡང་ རི་ལྷ་བཞིན་ མི་བཞུས་ ।
 དེ་ནི་ རྩེ་བ་ལྷོར་ ཉམས་པ་ ལྷི་ ।
 ལྷོན་ འདི་ ཡིན་དུ་ ལྷན་པའོ ॥ १४७

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।
 सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ལྷི་བའི་འོད་ཟེར་ བསྐྱེད་བས་ ।
 རི་ག་ཅེས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ ।
 ས་ཉ་ཀུ་རའི་ལོ་འདབ་ བསམ་པ་རྣམས་ ।
 ལྷམ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་པའོ ॥ १४८

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगेक्षणास्वित्ययथागुरुत्वं ।
 मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगेक्षणास्वित्ययथालघुत्वं ॥१५८॥

འདོད་བས་ མདའ་རྗོན་ རི་དབས་མིག་ཅན་ལ་ ।
 རྣམ་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ རི་བཞིན་མིན་ ।

མཚོས་བའི་མིག་ཅན་ ནག་ལ་ མྱོས་བྱེད་ཀྱི།

མདའ་རྒྱན་ ལྷུང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན། ॥ १५८

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।

तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५९॥

བསྐྱས་བ་ བརྗོད་བར་ མི་འདོད་ཅེས།

ཚོག་ལ་ མཚམས་སྦྱར་མེད་བ་ ལང་།

ཡ་མྱོས་ ལ་སོགས་ ལྷུ་མེད་བ།

དེ་ནི་ མཚམས་སྦྱར་བུལ་ ཞེས་ བསྟན། ॥ १५०

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।

लुप्तमुद्ग्रेदि [50a]धर्माग्भो नमस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ ནང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་།

ལྷུང་ནི་ དལ་བུ་ ལྷུ་བ་ ཡིས།

བྱད་མེད་ འགས་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ།

རུལ་གྱི་ལྷ་ལྷས་ མེལ་བར་བྱེད། ॥ १६०

[मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिमन्वृतौ प्रिये ।]
आसु रात्रिष्विति प्राञ्चैरक्षातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

. |

. |

सककःसं १३१५ जेसः १३१५ ।

सामसःससः १३१५सः १३१५ ॥ १६२

देशोऽद्विवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।
नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

१३१५सः १३१५सः १३१५सः १३१५सः ।

१३१५ सककः १३१५सः १३१५सः १३१५सः ।

१३१५सः १३१५सः १३१५सः १३१५सः ।

१३१५सः १३१५सः १३१५सः १३१५सः ॥ १६३

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिलोकसंज्ञिता ।
हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

गच्छेत्तु यो नमसाम्भेसपति ।
 स्यात्तु नमसाम्भेसपति ॥ १५४

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।
 इति देशविरोधिन्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥ १६६ ॥

उत्तमगुप्तोऽयं नमसाम्भेसपति ।
 अगस्त्यो नमसाम्भेसपति ॥
 नमसाम्भेसपति नमसाम्भेसपति ।
 नमसाम्भेसपति नमसाम्भेसपति ॥ १५५

पद्मिनी नक्तमुन्निद्रा स्फुटत्यह्नि कुसुम्वती ।
 मधुसूक्तुल्लिङ्गुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥ १६७ ॥

पद्मोत्तमो नमसाम्भेसपति ।
 नमसाम्भेसपति नमसाम्भेसपति ।
 नमसाम्भेसपति नमसाम्भेसपति ।
 नमसाम्भेसपति नमसाम्भेसपति ॥ १५६

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

८८'पदे' श्ल'के' द्वा'र' स'क'र'दे'स ।

श्ल'के' के' स'सु'कु'स'प' सु ।

द्वा'र' सु'के' सु'स' सु'स'स' ।

द्वा'र' के' उ'कु'र' स'सु'स'प'दे'स ॥ १६८ ॥

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

के'स'प' ८८'८८' सु'स' ८८'के ।

८८'प'प'दे'सु'स'प'द'प' स'सु'स'प'प'के ।

श्ल'के' ८८' ८८' ८८' ८८'प'प'प' ।

८८'८८' स'सु'स'प'सु'कु'र' ८८'के ॥ १६९ ॥

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूर्णसप्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्त्तते ॥१७०॥

दसदं ददं क्षेणं चरिं यिनं सुदं तु ।
 गणस्य तत्रं सिं ददं यं सत्तं नै ।
 दसुदस्यं दसुदं क्षेणस्यं च रिनं दसं नै ।
 दसदं दसं तु दसं तु दसुदं ॥ १७०

इत्थं कलाचतुःपद्यौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

रिनं दसं क्षेणं चरिं यिनं सुदं तु ।
 दसुदस्यं दसुदं क्षेणस्यं च रिनं दसं तु ।
 क्षेणं चरिं यिनं सुदं तु दसं चरिं यिनं ।
 रिनं दसं चरिं यिनं क्षेणस्यं च रिनं दसं तु ॥ १७१

आधूनकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोयमेरुण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

क्षेणं चरिं यिनं सुदं तु दसं चरिं यिनं ।
 रिनं दसं चरिं यिनं क्षेणस्यं च रिनं दसं तु ।

ཨོ་རྩ་འདི་ ལྷིང་པོ་ ལྷི།

སོང་ལྷོང་ ལྷོན་པ་ ལྷིང་པོ་སེད། ॥ ११३

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।
विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्शयते ॥१७३॥

ཅེས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ།

ཉིད་ དང་ འགལ་པ་ ཀུན་གྱིས་སྤོང།

རིགས་པ་ ཞེས་བྱ་ གཏན་ཚིགས་ཀྱི།

རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་བར་བྱ། ॥ ११३

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचित् ।
तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི།

གསུངས་པ་ བདེན་སེད་ དེ་ལྷོ་ནའང་།

ཅ་ཀོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ།

བདག་གི་ ལྷིང་པོ་ ད་དུང་ གནས། ॥ ११ॣ

कापिलैरसदुद्भूतिः [51a]स्थान पवोपवर्णयते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिश्चद्भवाः ॥१७५॥

शेनः सुवः कृष्णः श्वेनः कृष्णः गु ।
श्वेः वः गणः वः श्वेनः सुवः ॥
श्वेनः वः गणः उगः कृष्णः गुः ॥
श्वेनः कृष्णः सुवः श्वेः वः ॥ १७५ ॥

गतिन्त्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ १७६ ॥

श्वेनः वः गणः सुवः कृष्णः वः ॥
श्वेनः सुवः कृष्णः वः ॥
श्वेनः सुवः कृष्णः वः ॥
श्वेनः वः गणः सुवः कृष्णः वः ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नेयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमहिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥

མེ་མི་ བཞག་པ་ མ་ཡིན་ ཡང་།
 ལྷ་སྐྱེས་ ལྷ་མ་ཟེ་ མ་ཉམས་པའི་།
 ལྷོད་པས་ བརྒྱན་པ་ འདི་དག་ནི་།
 བོ་ལྷ་ན་རི་ མཚོད་ ལྷོན་བྱེད་ ॥ ११११

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ ཚོག་ མ་སྐྱེས་ ལྷ་།
 ལྷ་མ་དག་ལས་ རིག་བྱེད་ བརྒྱན་ས།
 རང་བཞིན་ དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི་།
 འདྲ་བྱེད་ བཞག་པ་ ལྷོས་པ་མེད་ ॥ १११२

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवीथिं विगाहते ॥१७९॥

ལྷོན་ནི་ མཐའ་དག་འདི་ལ་ ཡང་།
 དེས་ འགའ་ ལྷོན་དག་མཐའ་མཐའ་པས། །

कुर्वन् श्रुत्वा स्यात् स्यात् स्यात् स्यात्
 यैर्न दत्तं तस्यै क्वचिदपि ॥ १७७

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जह्विरे ।
 आर्द्रांशुकप्रवालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

कुर्वन् श्रुत्वा स्यात् स्यात् स्यात्
 यैर्न दत्तं तस्यै क्वचिदपि ।
 कुर्वन् श्रुत्वा स्यात् स्यात् स्यात्
 यैर्न दत्तं तस्यै क्वचिदपि ॥ १८०

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
 धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

कुर्वन् श्रुत्वा स्यात् स्यात् स्यात्
 यैर्न दत्तं तस्यै क्वचिदपि ।
 कुर्वन् श्रुत्वा स्यात् स्यात् स्यात्
 यैर्न दत्तं तस्यै क्वचिदपि ॥ १८१

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]वधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्भेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

सिंघास'गुि'स' र'व'सु'ल' सु'ग'व'यै ।
सु'व' सु'न'सि'न' ल'स' म'है'न' सु ।
सु'व'स' सि'स'स'स' व'स' न'द'न'स'स' ।
क'ग'स'व'द'ग' नै' न'सि'व'व'स' सु'न ॥ १८३

ऐन्दवादचिर्चिषः कामी शिशिरं हृद्यवाहनं ।
अबलाविरहद्वेषविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

सु'व'सि' नै'न'सि'न' ल'स' व'सि'व'व ।
व'सु'ग'सु' न'सि'न'व'स' न'द'न'स'स' नै' ।
सु'न'सि'न'द'न'स'स' न'स'स'स'गु'i'स' ।
न'सु'ग'स'व' न'द'न'स'स' सु'v'स' सु'न ॥ १८४

प्रमेयोप्यप्रमेयोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूर्त्तये ॥१८४॥

गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥

यथात्मा पापदुष्कृतात्मा पत्नी पाञ्चालकन्यका ।
 स्वर्णनामप्रणीक्षास्मीहीयो हि विधिरीदृशः ॥ १८५ ॥

गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥

गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥

गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥
 गणवत्तुः अतः अतः गणवत्तुः ॥

CORRIGENDA

Chap. I. 17^b *वर्यनैः for व*र्यनैः ; 27^o ལ་ཤུ་སའི for ལ་ཤུ་སའེ ;
 39^a साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85^a विद्यते for *क्षुन ;
 86^b भवाद्दश for भवादश ; 98^b स्तनन्त्यो for स्तनत्यो.

Chap. II. 14^o रये for रये ; 37^b मारो for मारो ; 40^o स्पर्श for
 स्पर्श ; 45^a मौक्ष for मौक्ष ; 66^b नखाचिषः for नखाचिषः ; 77^a इदमार्द्र for इद-
 माद्र ; 9^o नतिते for नतिते ; 86^a राजहंसो for राजहंसा ; 86^o वक्त्रा for वक्त्रा ;
 86^b क्षुन for क्षुन ; 91^b निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ;
 125^a श्रीरु for श्रीरु ; 142^b मारुते for मारुते ; 182^b मरुत्तु
 for मरुत्तु ; 206^a सोयं for सायं ; 207^a छेन for छेन ; 233^b उरुन for
 उरुन ; 234^a वृष्टं for वृष्टं ; 237^a विकार्ये for विकार्ये ; 279^b क्षेय for
 क्षेय ; 282^a रगवत्त्र for रसत्त्वत्र ; 287^a मारुत for मारुत ; 306^b दक्षिता
 for दक्षिता ; 312^a रयेन वरेन for रयेन वरेन ; 313^b मारुतमरुत्तु for
 मारुतमरुत्तु.

Chap. III. 17^a छेन for छेन ; 19^o वर्यन्ते for वर्यन्ते ; 13^a स्पृशेशां
 for स्पृशेशां ; 31^a क्षुन for क्षुन ; 39^o क्षु for क्षु ; 54^a वर्ज्यः for वर्ज्यः ;
 63^b रयुते for रयुते ; 69^a मारुत for मारुत ; 80^o मारुते for
 मारुते ; 83^a रयुते for रयुते ; 158^o वाणा for वाणा ; 184^a विश्वमूर्त्तये
 for विश्वमूर्त्तये ; 185^a पारङ्गुपुत्राणां for पारङ्गुपुत्राणां.